RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 29-30 जून 2025
डाक प्रेषण तिथि : 29 जून 2025-01 जुलाई 2025
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 63 अंक : 06
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 72
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2024-26
Office Posted at R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

समाचार पाक्षिक

गुरु भगवंतों के चरण बढ़ रहे
देशनोक की ओर...
हम सब करें वंदन...
राम जन्मभूमि बनेगी चंदन
पधार रहे माँ गवरा के नंदन

संघ शिखर सदस्य

श्री शांतिलाल जी सांड
बेंगलुरु
MID No. : 189067

श्री विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127238

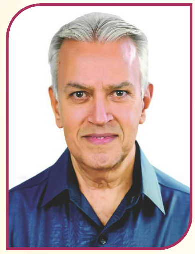
श्री रिद्धकरण जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 111161

श्री जयचंदलाल जी डागा
बीकानेर
MID No. : 108244

श्री सोमप्रकाश जी नाहटा
सूरत
MID No. : 126222

श्रीमती मंजू जी शाह (बोहरा)
पिपलिया कलां
MID No. : 128972

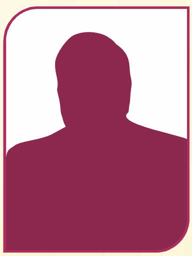
स्व. श्री मूलचंद जी डागा
बीकानेर
MID No. : 187427

समता मनीषी
स्व. श्री उमरावमल जी बम्ब, टोंक
MID No. : 121469

स्व. श्री विजयचंद जी डागा
बीकानेर
MID No. : 120472

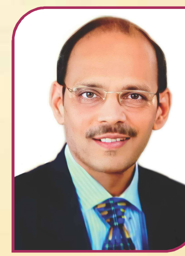
श्री माणकचंद जी नाहर
उदयपुर
MID No. : 107109

श्रीमती कुमुद विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127237

श्री दिनेश जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 111134

श्री पंकजराज जी शाह (बोहरा)
पिपलिया कलां
MID No. : 128966

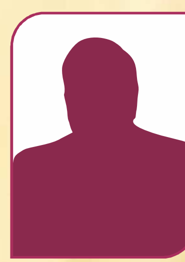
गुप्त
छत्तीसगढ़
MID No. : 197441

श्री सुरेश जी दक
मैसूर
MID No. : 129730

श्री कांतिलाल जी कटारिया
रतलाम
MID No. : 185412

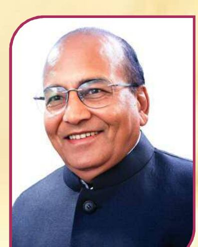
श्री विजय कुमार जी टंच
बदनावर
MID No. : 113207

संघ महाप्रभावक सदस्य

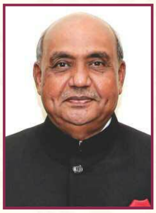
श्री सोहनलाल जी पोखरना
चित्तौड़गढ़
MID No. : 135732

श्री अनिल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127002

श्री जयचंदलाल जी मरोटी
देशनोक/कोलकाता
MID No. : 114715

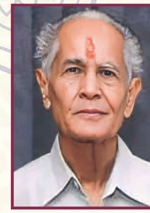
स्व. श्री शांतिलाल जी बच्छावत
सूरत
MID No. : 194606

श्री राजमल जी पंवार
कानवन
MID No. : 113094

श्रीमती संतोष देवी मोदी
भिलाई
MID No. : 135692

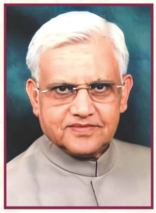
श्री कमल जी बैद
मुंबई
MID No. : 141022

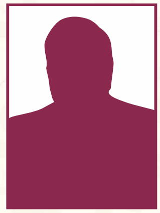
श्री विजय जी (कमला देवी)
गोलछा, बीकानेर
MID No. : 127729

श्रीमती कमला उत्तम जी
कोठारी, बेंगलुरु
MID No. : 112429

श्रीमती मनोरमा देवी बैद
रायपुर
MID No. : 138223

श्रीमती कुसुम जी टंच
बदनावर
MID No. : 160383

श्री बसंतलाल जी कटारिया
रायपुर
MID No. : 137280

श्रीमती बसंती देवी पींचा
नोखा/गुवाहाटी
MID No. : 151607

श्रीमती सुंदर बाई कोटड़िया
कोंडागाँव
MID No. : 135345

श्री महेंद्र जी सोनावत
भीनासर
MID No. : 128978

चतुर्थ चरण

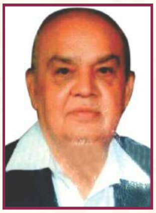
श्री प्रकाश जी कांकरिया
इंदौर
MID No. : 194512

स्व. श्रीमती सरोज देवी
सुराणा, बेरला
MID No. : 195647

श्रीमती गुलाब देवी
भंसाली, कोलकाता
MID No. : 129491

श्री सोहनलाल जी रांका
ब्यावर
MID No. : 138078

श्रीमती मधुलता जी
लोढ़ा, डोंगरगाँव
MID No. : 143002

स्व. श्री बापूलाल जी
कोठारी, उदयपुर
MID No. : 112429

श्री भीखमचंद जी
ओस्तवाल, कलंगपुर
MID No. : 132856

श्री दिलीप जी ओस्तवाल
कलंगपुर
MID No. : 132873

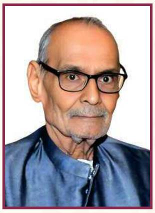
स्व. श्री कँवरलाल जी
देशलहरा, गुंडरदेही
MID No. : 133824

श्री प्रेमचंद जी व्होरा
बदनावर
MID No. : 113593

श्री निर्मल जी खिंवसरा
ब्यावर
MID No. : 135071

श्री अखराज जी
ओस्तवाल, भिलाई
MID No. : 142740

श्री झंवरलाल जी
कुम्मट, सिलचर
MID No. : 113897

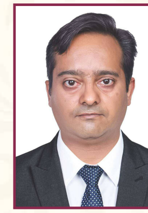
श्री पीयूष जी बैद
कोलकाता
MID No. : 100069

कार्यसमिति (10 जनवरी 2016) के अनुसार

तृतीय चरण

✻ श्री अनिल कुमार जी गोलछा-सिलचर ✻ श्री प्रकाशचंद जी कोठारी-अमरावती ✻ श्रीमती कमला देवी संचेती-देशनोक/दिल्ली ✻ श्री सुंदरलाल जी बोथरा-मुंबई ✻ श्री गोपालचंद जी खिंवसरा-बेंगलुरु ✻ श्री दिलीप जी पगारिया-जावरा ✻ श्रीमती ज्ञान कँवर जी ओस्तवाल-ब्यावर ✻ श्री प्रकाशचंद जी श्रीश्रीमाल-हैदराबाद ✻ गुप्तदान-भीलवाड़ा ✻ श्रीमती सुनीता जी मेहता-बेलगाँव ✻ श्री निहालचंद जी कोठारी-ब्यावर ✻ श्री प्रकाशचंद्र जी चपलोत-निम्बाहेड़ा ✻ श्री विजय कुमार जी मुणोत-हैदराबाद

द्वितीय चरण

✻ श्री तेज कुमार जी तातेड़-इंदौर ✻ श्री बसंतीलाल जी चंडालिया-चित्तौड़गढ़ ✻ श्रीमती इंद्रा बाई धाड़ीवाल-रायपुर ✻ श्री राजकुमार जी बाफना-हरदा ✻ श्री चेतन कुमार जी हिंगड़-ब्यावर ✻ श्री अभय कुमार जी भंडारी-जावरा ✻ श्रीमती कमला कँवर जी कोठारी-चेन्नई ✻ श्रीमती इंद्रा बाई गुणधर-संबलपुर ✻ श्री उदयराज जी पारख-रायपुर ✻ श्री प्रेमचंद जी कोठारी-चेन्नई ✻ श्री विमलचंद जी सुराणा-गीदम ✻ श्री अरुण जी मालू-कोलकाता ✻ श्री विनोद जी मिन्नी-कोलकाता ✻ श्रीमती सुधा जी भंसाली-कोलकाता ✻ श्री शुभकरण जी भूरा-भुवनेश्वर ✻ श्री किरणचंद जी गुलगुलिया-चिकमगलूर

प्रथम चरण

✻ स्व. श्रीमती सूरजा देवी बरड़िया-सिलचर ✻ श्री मनोज कुमार जी संचेती-बेलगाँव ✻ श्री मुन्नालाल जी पँवार-कानवन ✻ श्री भागचंद जी सिंघी-जोधपुर ✻ श्री सुधीर जी जैन-पिपलिया मंडी ✻ गुप्त-बंगईगाँव ✻ श्री अमरचंद जी बैद-नोखा ✻ श्री जीवनलाल जी गोखरू-कानवन ✻ श्री सुगनचंद जी धोका-चेन्नई ✻ श्रीमती राजरानी जी रजत जी मूथा-जयपुर ✻ श्रीमती गुलाब देवी बोथरा-पंचकुला ✻ श्रीमती लीला देवी बंब-चेन्नई ✻ श्री पूनमचंद जी सुराणा-सूरतगढ़ ✻ श्रीमती जमना देवी लूणावत-नोखागाँव ✻ श्री पदम जी बाँठिया-चेन्नई ✻ श्री संजय जी मालू-कोलकाता ✻ श्री कांतिलाल जी छाजेड़-रतलाम ✻ श्री जयंतीलाल जी गाँधी-अंकलेश्वर ✻ श्री प्रकाश जी गाँधी-अंकलेश्वर ✻ श्री गौतम जी गाँधी-अंकलेश्वर ✻ श्री भागीचंद जी डागा-कोलकाता ✻ श्री अजीत जी कांकरिया-सूरत ✻ श्री अमरचंद जी बागरेचा-साजा ✻ श्रीमती मंजू देवी कटारिया-रतलाम ✻ श्रीमती इमरती देवी सुराणा-गीदम ✻ श्री सुशील जी गोरेचा-रतलाम

रचनाएँ आमंत्रित

500 शब्द शब्द सीमा अथवा एक पेज

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के प्रत्येक माह के धार्मिक अंक भिन्न-भिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। इसी क्रम में आगामी धार्मिक अंक ● **तपस्या : वैज्ञानिक एवं धार्मिक परिप्रेक्ष्य में** ● **हमारे दैनिक जीवन में आध्यात्मिकता एवं भौतिकता का संतुलन** विषयों पर आधारित रहेंगे। कृपया विषय संदर्भित आपकी रचनाएँ यथाशीघ्र ही भिजवावें। उपरोक्त विषय के अतिरिक्त प्रेरणात्मक सारगर्भित विषयों पर भी लेख, रचनाएँ आदि स्पष्ट एवं सुंदर शब्दों में सादर आमंत्रित हैं।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नंबर हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। आप अपनी रचनाएँ दिए गए मोबाइल व वॉट्सएप नंबर या ईमेल द्वारा भी भेज सकते हैं।

– श्रमणोपासक टीम

9314055390

news@sadhumargi.com

मुमुक्षु सुश्री अदिति (जिया) जी चिप्पड़

संक्षिप्त परिचय

जन्म स्थान	:	रतलाम (म.प्र.)
मूल निवासी	:	प्रतापगढ़ (राज.)
जन्म तिथि	:	14 दिसंबर, 2005
वैराग्यकाल	:	लगभग डेढ़ वर्ष
व्यावहारिक शिक्षा	:	बी.सी.ए. - प्रथम वर्ष
धार्मिक अध्ययन	:	श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र के 4 अध्ययन, पुच्छिंसु णं, भक्तामर, उववाई सूत्र
धार्मिक शिक्षा	:	आरुग्गबोहिलाभं
तपाराधना	:	9 उपवास
धार्मिक परीक्षाएँ	:	जैन सिद्धांत बत्तीसी, तत्व का ताला, आगम स्तोक मंजूषा, कुछ थोकड़े, कर्म प्रज्ञप्ति प्रवेश ग्रंथ
पदयात्रा	:	लगभग 200 कि.मी.
संभावित दीक्षा प्रसंग	:	12 जुलाई, 2025, देशनोक

पारिवारिक परिचय

पड़दादाजी-पड़दादीजी	:	स्व. श्री शांतिलाल जी-स्व. श्रीमती रेशम बाई चिप्पड़
दादाजी-दादीजी	:	स्व. श्री राजमल जी-सुशीला बाई चिप्पड़
बड़े दादाजी-दादीजी	:	कोमल सिंह जी-भगवंता बाई चिप्पड़
छोटे दादाजी-दादीजी	:	पारसमल जी-मोहन देवी, अशोक कुमार जी-जीवनवाला जी चिप्पड़
पिताजी-माताजी	:	आशीष कुमार जी-अनिता जी चिप्पड़
बड़े पिताजी-माताजी	:	श्रीपाल जी-प्रेमलता जी चिप्पड़
चाचाजी-चाचीजी	:	अमित जी-मोनिका जी, अंकित जी-प्रियंका जी, जयेश जी-समता जी चिप्पड़
भाई	:	आदित्य, आगम, तक्ष, रिषभ चिप्पड़
बहन	:	ध्याना, मनस्वी, आज्ञा, रिषिका चिप्पड़
भुआजी-फूफाजी	:	स्व. श्रीमती स्नेहलता जी-महेंद्र जी खोखावत, सरोज जी-अनिल जी खेतपालिया, विद्या जी-पूरण जी दशोरिया, सीमा जी-राकेश जी डांगी
नानाजी-नानीजी	:	बसंतीलाल जी-बेबी बाई पंवार (कानवन)
मामाजी-मामीजी	:	पंकज जी-सुनीता जी, नीरज जी-खुशबू जी, मनीष जी-सिंपी जी पंवार
परिवार से दीक्षित	:	श्री हर्षित मुनि जी म.सा., श्री पूर्वी श्री जी म.सा., श्री मर्यादा श्री जी म.सा.

|| जय गुरु नाना ||

|| जय गुरु नाना || || जय गुरु राम ||

हुक्मसंघ के नवम् नक्षत्र, संयम के सजग प्रहरी, परमागम रहस्यज्ञाता, व्यसनमुक्ति प्रणेता, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील संप्रेरक

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008
श्री रामलाल जी म.सा.

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर
श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा.

आदि ठाणा के पावन वर्षावास - 2025 का प्रसंग रखे जाने वाले समस्त आगारों सहित देशनोक संघ को प्राप्त हुआ है।

सभी सम्मानित श्रावक-श्राविकाओं व संघों से विनती है कि इस पावन अवसर पर संघ एवं परिवार सहित पधारकर धार्मिकता तथा आध्यात्मिकता की भव्यता से अपने जीवन को आत्मकल्याण की ओर अग्रसर करें।

स्थानक
श्री जैन जवाहर मंडल (श्री साधुमार्गी जैन समिति),
हिरावत गेस्ट हाउस के पास, तेमड़ाराय मार्ग,
देशनोक-334801, जिला- बीकानेर (राज.)

चातुर्मास कमेटी अध्यक्ष : +91 98450 78928

संघ अध्यक्ष : +91 95882 98906 संघ मंत्री : +91 80948 12556	चातुर्मास कार्यालय संयोजक : +91 94141 15164 कार्यालय : +91 95218 67958	आवास-निवास : +91 91731 30000 +91 94144 51132 कार्यालय : +91 63753 59089	चौका व्यवस्था : +91 99830 33479 +91 82091 85929

निवेदक:
श्री साधुमार्गी जैन समिति, देशनोक
• समता युवा संघ • समता महिला मंडल • समता बहू मंडल •

।। जय गुरु नाना ।। ।। जय महावीर ।। ।। जय गुरु राम ।।

अध्यक्ष/मंत्री, स्थानीय श्री संघ के लिए

संघ हमारा अविचल मंगल,
नन्दनवन सा महक रहा....

स्वाध्यायी आमंत्रित करें

दिनांक– 20–27 अगस्त 2025

पर्युषण पर्व

में धर्माराधना के लिये स्वाध्यायी आमंत्रित कीजिये।

स्वाध्यायियों के लिए

आप तिरे – औरों को तारे

स्वाध्यायी सेवा दीजिये

दिनांक– 20–27 अगस्त 2025

पर्युषण पर्व

में धर्माराधना के लिये स्वाध्यायी सेवा दीजिये।

– संघ के नियमानुसार यात्रा व्यय देय है।

अपनी स्वीकृति गुरुचरणों में समर्पित कर संघ का गौरव बढ़ाएं –

शीघ्र व्हाट्सअप करें - 72318-66008 या 92291-91008

राम चमकते भानु समाना

समता प्रचार संघ

(अंतर्गत : श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर)

राम चमकते भानु समाना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार

श्री अ.भा.सा. जैन संघ द्वारा समता विभूति आचार्य श्री नानेश की पावन स्मृति में दिए जाने वाले 'आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार' के लिए प्रविष्टियाँ आमंत्रित की जा रही हैं।

1. पुरस्कार के लिए पात्रता एवं नियम

(1.1) यह पुरस्कार आचरण पर आधारित है। जिस व्यक्ति के जीवन में समता दर्शन और व्यवहार प्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित होता है, वही व्यक्ति इस पुरस्कार हेतु नामांकित हो सकता है।

(1.2) इस पुरस्कार के लिए जो स्वयं को पात्र समझते हैं, वे आवेदन कर सकते हैं। अन्य व्यक्ति अथवा संस्था द्वारा भी इस प्रकार के श्रेष्ठ व्यक्ति का नाम प्रस्तावित किया जा सकता है।

(1.3) पुरस्कार के लिए जाति, धर्म एवं आयु आदि का कोई बंधन नहीं रहेगा।

2. पुरस्कार का स्वरूप

(2.1) पुरस्कृत होने वाले समता मनीषी को दो लाख रुपए का चैक, अभिनंदन-पत्र एवं स्मृति-चिह्न किसी विशिष्ट दिवस अथवा किसी गरिमामय समारोह में सम्मानपूर्वक भेंट किया जाएगा।

3. आवृत्ति - द्विवार्षिक

: निवेदक :
रिटायर्ड जस्टिस जे.के. रांका, जयपुर
(संयोजक, आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार)

प्रविष्टियाँ भिजवाने की अंतिम दिनांक 31 जुलाई 2025 है। प्रविष्टियाँ केंद्रीय कार्यालय के पते पर भिजवाएँ।

प्रविष्टियाँ भिजवाने का पता :

केंद्रीय कार्यालय : श्री अ.भा.सा. जैन संघ,
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.)
फोन : 0151-2270261, 2270359, मो.नं. : 9116109777
Email : ho@sadhumargi.com

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

राम चमकते भानु समाना

आचार्य श्री नानेश जनसेवा पुरस्कार

आवृति द्विवार्षिक

समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. ने समाज व विश्व को समता दर्शन और व्यवहार की अनमोल विरासत प्रदान की। आचार्यश्री की पुण्यस्मृति में श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा **'आचार्य श्री नानेश जनसेवा पुरस्कार'** हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित की जा रही हैं।

1. पात्रता :-

(1.1) यह पुरस्कार शिक्षा, समाज सेवा, अध्यात्म, स्वास्थ्य, आर्थिक उत्थान, कृषि, पशुपालन, वन संरक्षण, पर्यावरण, व्यसनमुक्ति, जल संरक्षण इत्यादि जन सेवाक्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित करने वाले व्यक्ति अथवा संस्था को प्रदान किया जाता है।

(1.2) जनसेवा पुरस्कार हेतु किसी भी वर्ग, वर्ण या समाज का व्यक्ति अथवा संस्था, जो भारत में उपर्युक्त जन सेवा में कार्यरत हो, नामांकित किया जा सकता है।

2. आवेदन के नियम :-

(2.1) आवेदन-पत्र में नाम, पता, मोबाइल नंबर, ई-मेल, कार्यक्षेत्र, सेवाक्षेत्र आदि का पूर्ण उल्लेख हो। जिस व्यक्ति अथवा संस्था को नामांकित किया जा रहा है, उसके द्वारा प्रदत्त सेवाओं का रिकॉर्ड अर्थात् समाचार-पत्र की कटिंग, फोटोग्राफ, प्रमाण-पत्र, सम्मान-पत्र, स्मृति-चिह्न के फोटोग्राफ आदि भी अवश्य भिजवाएँ।

(2.2) नामांकित व्यक्ति एवं संस्था की सेवा से लाभान्वित होने वाले व्यक्तियों अथवा संस्थाओं के लेटरहेड पर अनुशंसा-पत्र भी संलग्न किए जा सकते हैं। चूँकि यह पुरस्कार सेवा कार्य करने वाले व्यक्ति अथवा संस्था को दिया जा रहा है।

3. स्वरूप :-

(3.1) इस हेतु चयनित व्यक्ति अथवा संस्था को श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ की ओर से दो लाख रुपए की राशि का चैक, अभिनंदन-पत्र एवं स्मृति-चिह्न किसी विशिष्ट दिवस अथवा गरिमामय समारोह में सम्मानपूर्वक भेंट किया जाएगा।

प्रविष्टियाँ भिजवाने की अंतिम दिनांक **31 जुलाई 2025** है। प्रविष्टियाँ केंद्रीय कार्यालय के पते पर भिजवाएँ।

::::: निवेदक :::::
अजय पारख, रायपुर
(संयोजक, आचार्य श्री नानेश जनसेवा पुरस्कार)

प्रविष्टियाँ भिजवाने का पता :

केंद्रीय कार्यालय : श्री अ.भा.सा. जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.)

फोन : 0151-2270261, 2270359, मो.नं. : 9116109777 Email : ho@sadhumargi.com

राम चमकते भानु समाना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

सेठ श्री चम्पालाल सांड स्मृति उच्च प्रशासनिक सेवा पुरस्कार

1. पात्रता

(1.1) यह पुरस्कार Award of Excellence के स्वरूप में भारत सरकार की उच्च प्रशासनिक सेवाओं में कार्यरत, जो जैन धर्मावलंबी शीर्षस्थ पदाधिकारी के रूप में विशेष ख्याति अर्जित कर जैन समाज को गौरवान्वित करते हैं, वे इस पुरस्कार हेतु चयनित किए जाने के पात्र समझे जाते हैं।

2. पुरस्कार के नामांकन

(2.1) किसी भी उपयुक्त पदाधिकारी, जो जैन मतावलंबी हो, का उपर्युक्त पुरस्कार हेतु नामांकन प्रस्तुत किया जा सकता है।

(2.2) जिस व्यक्ति को नामांकित किया जा रहा है, कृपया उसका पूरा नाम, पता, प्रशासनिक पद, संपर्क विवरण, सेवाक्षेत्र, निष्पादन रिकॉर्ड आदि का विस्तृत उल्लेख नामांकित अथवा संस्तुति में समाविष्ट करें।

3. पुरस्कार का स्वरूप

(3.1) चयनित पुरस्कार विजेता को श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ की ओर से एक लाख रुपए का चैक, अभिनंदन-पत्र एवं स्मृति-चिह्न किसी विशिष्ट दिवस अथवा गरिमामय समारोह में सम्मानपूर्वक भेंट किया जाएगा।

4. आवृत्ति : वार्षिक

निवेदक :
आई.ए.एस. उत्तमचंद नाहटा, दिल्ली
संयोजक
(सेठ श्री चम्पालाल सांड स्मृति
उच्च प्रशासनिक सेवा पुरस्कार समिति)

प्रविष्टियाँ भिजवाने की अंतिम दिनांक **31 जुलाई 2025** है। प्रविष्टियाँ केंद्रीय कार्यालय के पते पर भिजवाएँ।

प्रविष्टियाँ भिजवाने का पता :

केंद्रीय कार्यालय : श्री अ.भा.सा. जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.)
फोन : 0151-2270261, 2270359, मो.नं. : 9116109777 Email : ho@sadhumargi.com

राम चमकते भानु समाना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

स्व. श्री प्रदीप कुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार

1. पात्रता

(1.1) यह पुरस्कार जैन धर्म, दर्शन, इतिहास, कला व संस्कृति तथा जैन साहित्य, काव्य कला व संस्कृति और कथा, निबंध, नाटक, संस्मरण व जीवनी आदि के संबंध में लिखित मौलिक ग्रंथ पर दिया जाता है।

2. पुरस्कार के नियम

(2.1) पुरस्कार हेतु प्रकाशित/अप्रकाशित (पांडुलिपि) अथवा दोनों प्रकार की कृतियाँ निर्धारित आवेदन-पत्र के साथ प्रस्तुत की जा सकती हैं।

(2.2) अन्य संस्थाओं द्वारा पूर्व में पुरस्कृत कृति पर यह पुरस्कार नहीं दिया जाएगा।

(2.3) प्रकाशित कृति का प्रकाशन पुरस्कार हेतु घोषित अवधि में (वर्ष 2016 से पूर्व नहीं) एवं घोषित विषय परिधि में ही होना चाहिए अर्थात् पुरस्कार हेतु प्रस्तुत कृति का प्रकाशन वर्ष 2016 के पश्चात् का होना चाहिए।

(2.4) पुरस्कार मूल्यांकन के लिए कृति की मुद्रित अथवा पांडुलिपि की चार प्रतियाँ निःशुल्क भेजनी होगी। पांडुलिपि की 3 प्रतियाँ आवेदक को पुनः लौटा दी जाएगी। मुद्रित कृतियाँ नहीं लौटाई जाएगी।

(2.5) अप्रकाशित कृति (पांडुलिपि) की प्रतियाँ स्पष्ट टंकित की हुई अथवा हस्तलिखित, सुवाच्य एवं जिल्द बँधी होनी चाहिए।

(2.6) प्रतिभागी विद्वानों के लिए यह आवश्यक होगा कि वे कृति के संबंध में स्वयं की कृति होने एवं इसके मौलिक होने का प्रमाण-पत्र साथ भेजें।

3. स्वरूप

(3.1) पुरस्कार के अंतर्गत संघ की ओर से 51 हजार रुपए की राशि का चैक, अभिनंदन-पत्र एवं स्मृति-चिह्न किसी विशिष्ट दिवस अथवा गरिमामय समारोह में सम्मानपूर्वक भेंट किया जाएगा।

निवेदक : रिटायर्ड आई.ए.एस. प्रदीप बुरड़, जयपुर
संयोजक, स्व. श्री प्रदीप कुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार समिति

आवृत्ति : वार्षिक

प्रविष्टियाँ भिजवाने का पता :

केंद्रीय कार्यालय : श्री अ.भा.सा. जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.)
फोन : 0151-2270261, 2270359, मो.नं. : 9116109777
Email : ho@sadhumargi.com

प्रविष्टियाँ भिजवाने की अंतिम दिनांक **31 जुलाई 2025** है। प्रविष्टियाँ केंद्रीय कार्यालय के पते पर भिजवाएँ।

।।जय गुरु नाना।। ।।जय महावीर।। ।।जय गुरु राम।।

©

राम चमकते भानु समाना

साधुमार्गी पब्लिकेशन
नवीन आगम तत्त्व सदस्यता

- वर्तमान में साधुमार्गी पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित प्रवचन एवं चिंतन की पुस्तकें ही साहित्य सदस्यों को सदस्यता ग्रहण करने पर भेजी जाती है।
- इसके अतिरिक्त आगम एवं तत्त्व प्रकाशन समिति द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के लिए ज्ञान-जिज्ञासु श्रावक-श्राविकाओं की ओर से माँग आती रहती है। इसे ध्यान में रखते हुए *'आगम तत्त्व सदस्यता'* के नाम से नवीन सदस्यता प्रारंभ करने का प्रस्ताव रखते हैं। इसका प्रारूप निम्न प्रकार है –

सदस्यता स्वरूप और सदस्यता शुल्क (15 वर्षों के लिए)

1. वर्तमान सदस्यता केवल साहित्य (प्रवचन व चिंतन पुस्तकों) हेतु — ₹3000
2. नवीन ''आगम तत्त्व सदस्यता'' केवल आगम प्रकाशन हेतु — ₹5000
3. नवीन सदस्यता दोनों की अर्थात् 'साहित्य सदस्यता' व 'आगम तत्त्व सदस्यता' ग्रहण करने पर — ₹7000

- नई सदस्यता ग्रहण करने वाले सदस्यों को वेलकम किट के रूप में संयोजक द्वारा सुनिश्चित पुस्तकें प्रदान की जाएँगी।
- सदस्यता ग्रहण करने के बाद प्रकाशित होने वाली पुस्तकें दिए गए पते पर भेजी जाएँगी।

अधिक जानकारी एवं सदस्यता लेने के लिए संपर्क करें – 7231855008

:: अनुक्रमणिका ::

श्रावक और विवेक....14
ज्ञान सार : श्रीमद् भगवतीसूत्र.... 20
श्रमणोपासक हेडलाइंस.... 22
गुरुचरण विहार समाचार.... 23
विविध समाचार.... 38
विविध भेंट मार्फत.... 42
विनम्र श्रद्धांजलि.... 55
श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ.... 58

सुविचार

काम-भोग (2)

हिरण करण वश, परवाना नैन वश।
अलिंद नासिका वश, झख तो रसन में।।
पुष्करी परस वश, पाँच-पाँच के अवश।
पाँच के जो एक वश, नैया तो फँसन में।।
इंद्रियाँ अधीन हुआ, जीव लक्ष्यहीन हुआ।
खोया वो अलभ्य तन, गमनागमन में।।
वीर कहे गौतम से, देवाणुप्पिया तू जाग।
काम-भोग झट तज, चित्त दे भजन में।।

साभार – वीर कहे गौतम से

परम-पवित्र करता धर्म

चिंतन

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

धर्म के विषय में कहा गया है कि वह उत्कृष्ट है। उत्कृष्ट यानी श्रेष्ठ-उत्तम है। उत्कृष्टता के स्वरूप को समझ लेना जरूरी है। जनसाधारण में जैसे वी.आई.पी. कोई-कोई होता है। जो जनसामान्य से विरला होता है, उसे वी.आई.पी. कहते हैं। इसी प्रकार जो जनसामान्य से भिन्न ही वह उत्कृष्ट होता है। शरीर या धनादि की ऊँचाई को भी उत्कृष्ट कहा जाता है, किंतु यहाँ विषय धर्म का है। धर्म ऊँचाई या धनादि से प्रतिबंधित नहीं है। शरीर से ऊँचाई वाले भी अधर्म में रमते रहते हैं, जबकि शरीर से कम ऊँचाई वाले भी धर्म का स्पर्श कर लेते हैं। शरीर ऊँचा है या नीचा, खानदान ऊँचा है या इतर, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। धर्म का संबंध है मन की पवित्रता से, मन की उज्ज्वलता से। मन जिसका जितना सत्य-ईमान से दिप्त होगा, वह उतना ही सरस और सरल होगा। मन जटिल बनता है छल, कपट, प्रपंच आदि से, जो अधर्म हैं। अधर्म से मन अपवित्र बन जाता है। धर्म से मन सदा पवित्र बना रहता है। रथनेमि का मन फिसल गया था, लेकिन राजीमती की फटकार लगने पर भी उसके मन में प्रतिद्वेष नहीं जगा। उन्होंने उसे सहज रूप से स्वीकार किया। यह पवित्र मन का ही प्रतीक है। महासती मृगावती को महासती श्री चंदनबाला ने उपालंभ दिया, उससे उनके मन में प्रतिरोध नहीं जगा, अपितु उन्होंने उस अनुशासन को भी सश्रद्धा स्वीकार किया। पवित्र मन की एक पहचान यह भी है कि वह किसी भी बात-शिक्षा को उलटा नहीं लेता। वह उससे स्वयं को अनुशासित ही करने का प्रयत्न करता है। ऐसी पवित्रता बिना धर्म के आना कठिन है। धर्म को उत्कृष्ट कहने का तात्पर्य यह भी है कि उसकी आराधना हो जाने से संसार का परिभ्रमण समाप्त हो जाता है। धर्म संवर रूप होता है। व्यक्ति स्वयं को सर्व रूप से संवृत कर ले तो वही उसकी उत्कृष्टता है। ऐसे उत्कृष्ट धर्म से आत्मा परम पवित्र बन जाती है।

चैत्र कृष्ण 2, शुक्रवार, 25.03.2016

साभार- आरोह

धर्मदेशना

श्रावक और विवेक

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

शास्त्र, नीति और संसार-व्यवहार आदि सबमें विवेक को बड़ा माना है। विवेक के बिना कोई काम अच्छा नहीं होता। ऐसी दशा में धर्म में विवेक न रखने पर धर्म की बात कैसे ठीक हो सकती है? अविवेक के कारण धर्म की बात भी अधर्म का रूप ले लेती है और विवेक से अधर्म की बात या अधर्म समझा जाने वाला काम भी धर्म रूप में परिणत हो सकता है। सुबुद्धि प्रधान ने विवेक से गंदे पानी को अच्छा बना लिया और राजा को प्रतिबोध देकर धर्मात्मा बना दिया। इसी तरह अविवेक से अच्छी वस्तु बुरी बना दी जाती है। जैसे प्रत्येक सांसारिक काम में विवेक की आवश्यकता है, ऐसे ही धर्म में विवेक प्रधान है।

अल्पपाप और महापाप के विषय में कई लोग मुझसे कहते हैं तथा पत्रों में भी इसकी चर्चा चलती है। इससे कई गृहस्थों ने मुझसे कहा कि आपकी मान्यता क्या है? इसलिए आज मैं अपनी मान्यता प्रकट करता हूँ।

कई लोग प्रश्न करते हैं कि हलवाई के यहाँ से सीधी चीजें लाकर खाने में कम पाप है या घर में बनाकर खाने में कम पाप है? इसी तरह कपड़े और मकान के लिए प्रश्न करते हैं और कई तो यहाँ तक प्रश्न करने लगते हैं कि हाथ से चमड़ा चीरकर जूता बनाना-पहनना ठीक है या सीधा खरीदकर पहनना ठीक है? जूते का प्रश्न तो शायद इसलिए किया जाता होगा कि जिससे इस तरह की बात सुनकर लोगों के विचार मेरे विरुद्ध हो जाएँ।

कई लोग तो मेरे विवेक विषयक कथन को यह रूप देते हैं कि महाराज तो हाथ से रोटी बनाकर खाने का कहते हैं। ऐसा असत् रूप बनाकर सावद्य उपदेश देने वाले बताते हैं। लोग पाप से बचना चाहते हैं और अपने समाज के लोग सावद्य उपदेश देने वाले को साधु नहीं मानते। अतः मेरे विषय में यह कहा जाता है कि महाराज तो सावद्य उपदेश देते हैं। इस तरह के कथन का उद्देश्य तो यही हो सकता है कि लोगों का चित्त मेरी ओर से हट जाए। लेकिन पूर्वजों का न मालूम क्या पुण्य है कि उन लोगों का इस तरह का आक्षेप करने पर लोगों का चित्त मेरी ओर से नहीं हटता है। फिर मैं आप से यही कहता हूँ कि किसी विषय में शंका अपने चित्त में रहने देना ठीक नहीं है। शास्त्र में शंका, कांक्षा, विचिकित्सा आदि समकित के पाँच अतिचार कहे हैं। अतिचार तो और व्रतों के भी हैं, किंतु व्रतों के अतिचार से समकित के अतिचार बड़े हैं। इसी से वहाँ '**पेयाला**' शब्द शास्त्रकार ने जोड़ा है।

किसी बात की शंका होने पर भी संकोच के कारण या किसी अन्य कारण से उस शंका को न मिटाने से शंका बनी ही रहती है और हृदय में शंका रहने पर गीता में कहा है— '**संशयात्मा विनश्यति**'। इस तरह शंका रह जाने से हानि होती है।

संशय से होने की बात मैं नहीं कहता हूँ, किंतु सभी कहते हैं। श्रद्धा को सबने महत्व दिया है और कहा है कि '**श्रद्धामयोऽयं पुरुषः**' अर्थात् पुरुष श्रद्धामय है। जैसी श्रद्धा होती है वैसा ही वह बन जाता है। इस तरह श्रद्धा को सबने महत्व दिया है। शंका से श्रद्धा में दोष आता है और जब श्रद्धा में दोष आ जाएगा तब बचेगा ही क्या? इसलिए शंका को मिटाने में संकोच करने की जरूरत नहीं है, शंका को मिटाना चाहिए।

अब जो अल्पारंभ-महारंभ का प्रश्न है, वह उन्हीं के

लिए हो सकता है, जो सम्यग्दृष्टि और व्रती हैं। मिथ्यात्वी के लिए नहीं हो सकता, क्योंकि जहाँ बड़ा कर्ज लदा हुआ है, वहाँ छोटे लेन-देन की गिनती ही क्या! जैसे 1-2-3-4-5 में से बड़ी संख्या दस हजार की है। जिस पर दस हजार रूप मिथ्यात्व का कर्ज लदा हुआ है वहाँ पाँच या पैंतालीस के लेन-देन की बात ही क्या की जा सकती है?

जहाँ मिथ्यात्व का पाप सिर पर घूम रहा है, वहाँ दूसरी बात करने की जरूरत नहीं रहती। परंतु जो सम्यग्दृष्टि हैं उनको तो इस बात का विचार रखना चाहिए कि अल्पपाप और महापाप कैसे और कहाँ होता है? मैं निश्चय से तो नहीं कह सकता कि यह काम अल्पपाप का है और यह महापाप का है, परंतु मैं अल्पपाप और महापाप के साथ विवेक को जोड़ता हूँ और यह कहता हूँ कि जहाँ विवेक है वहाँ तो अल्पपाप है और जहाँ विवेक नहीं है वहाँ महापाप है। मैंने एकांत पक्ष से कभी ऐसा नहीं कहा है, किंतु यही कहा है कि अल्पपाप और महापाप विवेक-अविवेक पर अवलंबित हैं।

जो काम महारंभ से होता है वही काम विवेक से होने पर अल्पारंभ से भी हो सकता है और जो काम अल्पारंभ से हो सकता है वही अविवेक के कारण महारंभ का बन जाता है। इस पर मैं अपने ही अनुभव का उदाहरण देता हूँ। जब मेरी आयु करीब दस-बारह वर्ष रही होगी, उस समय की बात है। जिस ग्राम में मैं पैदा हुआ था, वह मक्की प्रधान देश है। वहाँ मक्की पक जाए तब तो आनंद मानते हैं और मक्की न पकने पर वर्ष खराब समझते हैं। उस ग्राम के बड़े-बड़े लोगों ने मिलकर गोठ करने का निश्चय किया। जिस देश में जो चीज पैदा होती है वहाँ उसी चीज के खाने का रिवाज होता है, अतः उन लोगों ने मक्की के भुजिए आदि बनाने का विचार किया।

मक्की के भुजिए बनाने के साथ ही भांग के भुजिए भी बनाने का विचार हुआ। मेरे मामाजी ने मुझसे कहा कि बाड़े में भांग के पौधे खड़े हैं, उनमें से भांग की पत्तियाँ तोड़ लाओ। उस समय भांग के विषय में आज की तरह का कायदा न था, इसलिए जगह-जगह उसके पौधे होते थे। मेरे संसार के मामाजी वहाँ प्रतिष्ठित माने जाते थे। राज्य में भी उनका सम्मान था। धर्म का भी विचार रखते थे। संभवतः चौविहार करते थे और प्रतिक्रमण नित्य किया करते थे।

उनके कहने पर मैं दौड़कर गया और खोला (गोद) भरकर, जो करीब सेर-भर होगी, भांग तोड़ लाया। मैं कह चुका हूँ कि वे धर्म का विचार रखते थे, इसलिए अधिक पाप के भय से डरना स्वाभाविक था। वे मुझसे कहने लगे कि इतनी भांग क्यों तोड़ लाया। थोड़ी-सी भांग की जरूरत थी। इस तरह थोड़ी-सी भांग की जगह बहुत सारी भांग लाने के कारण उलाहना देने लगे। लेकिन वास्तव में मेरा कसूर था या उनका भी? वह अधिक पाप मेरे को हुआ या उनको? मैं बच्चा था, इससे मुझमें विवेक नहीं था और न उन्होंने कहा था कि कितनी लाना? इस तरह न उन्होंने विवेक दिया न बच्चा होने के कारण मुझमें विवेक था। इस तरह अधिक पाप का कारण अविवेक रहा। यदि विवेक होता तो वह अधिक पाप क्यों होता?

इसलिए पत्ते तोड़ने का कार्य करने की बजाय कराने में अधिक पाप हुआ क्योंकि अपने हाथ से लाते तो जितनी आवश्यकता थी उतनी ही लाते, अधिक नहीं।

विवेक न होने के कारण अल्पपाप होने की जगह महापाप होने के और भी बहुत-से उदाहरण दिए जा सकते हैं। सेठ वरदभाण जी कहते थे कि मैं जंगल गया। वहाँ नौकर से पानी भर लाने के लिए कहा। वह वनस्पति, लीलोतरी, फूलण आदि कुचलता हुआ दौड़कर गया और लोटा माँजकर उसी में धोकर जैसे-तैसे छाना-अनछाना पानी भर लाया। अब यह अधिक पाप किसको हुआ? इसका कारण क्या है? क्या यह पाप करने वाले को हुआ? करवाने वाले को नहीं? यदि सेठ स्वयं पानी भरने जाते और विवेक से काम लेते तो कितना पाप टाल सकते थे, लेकिन उन्होंने नौकर को भेजा और उसने विवेक नहीं रखा। वह सेठ द्वारा भेजने पर ही गया था, इसलिए क्या सेठ को उसका पाप नहीं लगा? मतलब यह है कि इस तरह करने की अपेक्षा दूसरे से कराने में ज्यादा पाप हो गया या नहीं? फिर भी किसी के मन में कोई संदेह की बात हो तो वह मुझको शांति से पूछ सकता है। मुझसे पूछने के विषय में किसी तरह की कोई रुकावट नहीं है।

इस धर्म के प्रवर्तक क्षत्रिय थे और यह धर्म प्रायः क्षत्रियों के पालने योग्य है। इस धर्म को राज्य करने वाले भी पाल सकते हैं। उदायन राजा सोलह देशों पर राज्य करते थे, फिर भी अल्पारंभी थे या महारंभी? इतना राज्य करते हुए भी

वे अल्पारंभी रहे, इसका क्या कारण है? इसका कारण यही है कि वे श्रावक होने के कारण विवेक से काम लेते थे। इसी से भगवान ने विवेक में धर्म बताया है। यदि विवेक में धर्म न होता तो यह धर्म क्षत्रियों के पालने योग्य कदापि न रहता, किंतु बनियों का ही रहता। लेकिन आज इस धर्म का ऐसा रूप बना दिया गया है कि जिससे यह धर्म केवल बनियों के काम का मालूम होता है। विवेक रखते हुए राज्य करने पर भी राजा इस धर्म का भली-भाँति पालन कर सकता है और महारंभी भी नहीं कहला सकता। इस तरह कभी करने में ज्यादा पाप हो जाता है, कभी कराने में ज्यादा पाप हो जाता है और कभी अनुमोदन में ज्यादा पाप हो जाता है। लेकिन विवेक न रखने से कभी-कभी करने और कराने में उतना पाप नहीं होता, जितना अनुमोदन से हो जाता है।

मान लीजिए एक राजा जैन है। उसके सामने एक ऐसा अपराधी आया कि जिसको फाँसी की सजा हो सकती थी। वह राजा सोचने लगा कि मैं तो चाहता हूँ कि यह बच जाए तो अच्छा, किंतु इसके अपराध की भयंकरता को देखते हुए यदि इसको फाँसी की सजा न दूँगा तो न्याय का उल्लंघन होगा। इस तरह उसने न्याय की रक्षा के खातिर बड़े संकोच के साथ उसको फाँसी की सजा दी। उसने फाँसी लगाने वाले को हुक्म दिया कि इसको फाँसी लगा दो। फाँसी लगाने वाला उस अपराधी को फाँसी लगाने ले चला, वह भी अपने मन में सोचता था कि यह फाँसी लगाने का काम बुरा है। मैं नहीं चाहता कि किसी को फाँसी लगाऊँ, लेकिन राजा की नौकरी में नाम लिखाया है, इसलिए अब काम करने के समय इनकार करना ठीक नहीं। राजा भी न्याय से बँधा हुआ है। इसी से उसने यह हुक्म दिया है। वह भी ऐसे हुक्म न देना चाहता होगा। इसी तरह मैं भी बँधा हुआ हूँ, इसी से यह फाँसी लगाने का काम करता हूँ।

इस तरह विचारता हुआ वह अपराधी को फाँसी लगाने के लिए ले गया और फाँसी दी। वहाँ एक तीसरा आदमी खड़ा था। राजा ने पश्चात्ताप करते हुए फाँसी का हुक्म दिया था और लगाने वाले ने मजबूरन फाँसी लगाई थी, लेकिन उस तीसरे आदमी का कोई हुक्म नहीं चलता, फिर भी खड़ा अतिउमंगवश हुक्म देता है कि क्या देखता है? इसको फाँसी लगा दे! इसको तो फाँसी देना ही ठीक है। लटका दे, देर मत कर।

अब इन तीनों में ज्यादा पाप किसको हुआ? राजा और फाँसी लगाने वाला फाँसी देकर भी फाँसी के काम की सराहना नहीं करते हैं, लेकिन वह आदमी मुफ्त में ही फाँसी लगाने के काम की सराहना करके अनावश्यक आज्ञा देकर महापाप कर रहा है।

फाँसी लगाने की जगह पर और लोग भी देख रहे थे। उनमें से जो विवेकी थे, वे तो सोचते थे कि यह बेचारा पाप के कारण फाँसी पर चढ़ रहा है। यदि इसने यह भयंकर पाप न किया होता तो इसको फाँसी क्यों लगती? अपने को ऐसे पाप से बचना चाहिए। लेकिन जो अविवेकी थे, वे कहते थे कि अच्छा हुआ जो इसको फाँसी लगी। यह बड़ा ही दुष्ट था, पर चतुर नहीं था। हम कैसे चतुर हैं कि अपराध भी कर लेते हैं और राजा को खबर भी नहीं होने देते। हमारा कार्य किसी तरह से प्रकट नहीं होने देते। हम वकील तो क्या, बड़े-बड़े बैरिस्टरों और राजा को घोलकर पी जाते हैं। सबको छका देते हैं। लोग धर्म की बात कहते हैं, लेकिन हम ऐसे हैं कि धर्म को न मानने पर भी आराम में हैं।

इन दोनों तरह के विचार वाले दर्शकों में से महापापी कौन और अल्पपापी कौन हुआ? इन दोनों तरह के विचार वाले दर्शकों में से अविवेकी दर्शकों ने महापाप बाँधा या नहीं? मैं यह नहीं कहता कि कराने से महापाप होता है और करने से नहीं या करने से महापाप होता है, कराने से नहीं। मैं तो यह कहता हूँ कि जहाँ अविवेक है वहाँ महापाप है और जहाँ विवेक है वहाँ अल्पपाप है। यह बात मैं और उदाहरण देकर भी बताता हूँ।

एक डाक्टर चीर-फाड़ का काम जानता है, लेकिन वह कहता है कि मुझे घृणा आती है, इस कारण मैं तो ऑपरेशन नहीं करता और ऐसा कहकर वह कंपाउंडर से ऑपरेशन करने के लिए कहता है। कंपाउंडर अनाड़ी है, होशियार नहीं है। ऐसी हालत में वह डाक्टर स्वयं अपने हाथ से ऑपरेशन न करके कंपाउंडर से कराए तो उस डॉक्टर को कराने में महापाप लगेगा। एक दूसरा डॉक्टर, जो स्वयं ऑपरेशन करना नहीं जानता या कम जानता है, वह जानने वालों से कहे कि तुम

ऑपरेशन कर दो तो उसको कराने में अल्पपाप लगेगा। ऑपरेशन तो उसने भी कराया और उसने भी। दोनों ने स्वयं तो नहीं किया, परंतु पहले डॉक्टर को तो महापाप लगेगा और दूसरे को अल्पपाप लगेगा। इसी तरह कोई तीसरा आदमी स्वयं ऑपरेशन करना जानता नहीं है, लेकिन जो जानता है उसे रोककर स्वयं ऑपरेशन करे तो उसको महापाप होगा। ऐसे आदमी का किया हुआ ऑपरेशन कदाचित् सुधर भी जाए तब भी सरकार उसको अपराधी मानेगी कि उसने न जानते हुए ऑपरेशन किया। उस पहले डॉक्टर के कराने पर महापाप लगा, दूसरे के कराने पर अल्पपाप लगा और तीसरे को स्वयं करने पर महापाप लगा। इसका कारण यही है कि इन तीनों में विवेक का अंतर है। इस तरह सरकार भी उस डाक्टर को अपराधी मानती है जिसने न जानते हुए ऑपरेशन किया है, यद्यपि उसका ऑपरेशन सुधर गया है, फिर भी उसमें विवेक नहीं है। इस तरह धर्म में भी विवेक को देखने की परमावश्यकता है और देखिए -

एक बाई विवेकरहित है और एक विवेकवती है। विवेक वाली बाई विचार करे कि रोटी बनाने में पाप लगता है, परंतु रोटी खाने और कुटुंबियों को खिलाने की जवाबदारी से मुक्त नहीं है। वह उस विवेकरहित बाई को रोटी बनाने के काम में लगाती है। वह अविवेकवती होने के कारण आग तत्व और उसकी शक्ति को नहीं जानती थी। इस कारण असावधानी से उसके कपड़े में आग लग गई, वह मर गई। उसके मरने से वह विवेक वाली बाई प्रसन्न होगी या अप्रसन्न? वह सोचेगी कि मैंने इसको कहाँ रोटी बनाने को बैठा दी? यदि मैं ही विवेक से करती तो यह अनर्थ नहीं होता। अब कहिए उसको कराने में अधिक पाप हुआ या वह स्वयं विवेकपूर्वक करती तो ज्यादा होता? इसी तरह एक बहन स्वयं तो विवेक रखती नहीं, परंतु उस विवेक वाली को न करने दे और आप खुद करने बैठे तो करने में अधिक पाप हुआ या नहीं?

इस तरह जहाँ विवेक है वहाँ तो करने में अल्पपाप है और कराने में भी अल्पपाप है, पर जहाँ विवेक नहीं है वहाँ करने में महापाप है और कराने में भी महापाप होता है। इस प्रकार विवेक होने से महापाप के काम अल्पपाप से हो सकते हैं और विवेक न होने से अल्पपाप के काम भी महापाप के बन जाते हैं। यह तो विवेक की बात हुई।

अब करने, कराने और अनुमोदन में से किसमें पाप अधिक हो सकता है, यह देखिए। आप स्वयं हाथ से आरंभ करने लगें तो कितना भी करें, वह होगा मर्यादित ही। लेकिन कराने में तो लाखों-करोड़ों से भी करने के लिए कहा जा सकता है। करने में तो दो हाथ रहते हैं, लेकिन कराने में तो लाखों-करोड़ों हाथ लग सकते हैं। करने का तो समय मर्यादित होगा, परंतु कराने में समय का विचार नहीं रह सकता। करने का तो क्षेत्र मर्यादित रहेगा, परंतु कराने का क्षेत्र बहुत होता है। इस तरह करने का तो द्रव्य भी मर्यादित रहता है, क्षेत्र मर्यादित रहता है और काल भी मर्यादित रहता है, परंतु कराने का तो द्रव्य बहुत है, क्षेत्र बहुत है और काल भी बहुत है। इस कारण स्वयं करने की अपेक्षा कराने में पाप ज्यादा खुला हुआ है। अब अनुमोदन को लीजिए- काम कराने में भी कोई व्यक्ति चाहिए, परंतु अनुमोदन तो यहाँ बैठे हुए सारे जगत् के पापों का कर सकते हो। मैंने बड़ों के मुँह से इस विषय में एक उदाहरण सुना है। वे कहा करते थे कि एक आदमी ने महल बनवाया तो भी वह आरंभ की सहराना नहीं करता, किंतु डरता है। लेकिन उस महल को देखने वाला कहता कि यह महल कैसा अच्छा झुकाया है। नाम अमर कर दिया है। अतः महल बनाने वाला तो अल्पपापी ही रहा, किंतु उसका अनुमोदन करने वाले महापापी हुए।

विलायती कपड़ा यहाँ नहीं बनता, लेकिन यहाँ बैठे हुए ही वहाँ के काम की अनुमोदना कर सकते हों। आजकल तो समाचार-पत्रों में विज्ञापन भी बहुत निकला करते हैं। उनको देखकर यह कह सकते हो कि यह हमको नहीं मिला, परंतु बड़ा अच्छा है। इस तरह यहाँ बैठे हुए विलायत में होने वाले काम का अनुमोदन कर सकते हो। इस तरह अनुमोदन का द्रव्य, क्षेत्र, काल करने और कराने से बढ़कर होता है। अनुमोदन का पाप ऐसा होता है कि बिना कुछ किए महारंभ का पाप हो जाता है। जैसे श्री भगवती सूत्र के चौबीसवें शतक में कहा है कि अंगुल के असंख्यातवें भाग की अवगाहना वाला तंदुलमत्स, जो मगरमच्छ की आँख के भौंहे पर उत्पन्न होता है, मरकर सातवीं नरक गया। उसने ऐसा क्या किया था? इसके लिए कहा जाता है कि बड़े मगरमच्छ का मुँह खुला हुआ

था। उसके मुँह में अन्य मछलियाँ श्वासोच्छ्वास की क्रिया से जाती थी और वापस निकल जाती थी। वह तंदुलमत्स यह देखकर सोचता था कि यह मगर कैसा मूर्ख है, जो अपने मुँह में आई हुईं मछलियों को वापस निकलने देता है! यदि इसकी जगह मैं होता तो एक भी मछली को बाहर न निकलने देता, सबको खा जाता। जबकि वह ऐसा कर नहीं सकता है, फिर भी मरकर सातवीं नरक में गया। इस तरह करने और कराने की अपेक्षा अनुमोदन का क्षेत्र बड़ा है।

पूज्यश्री उदयसागर जी महाराज से सुना हुआ यह स्तवन मुझे याद है -

जीवड़ा मत मेले रे यो मन मोकलो,
मन मोकलड़े रे हाण।
जिन हीज नयणे रे निरखे सुंदरी,
तिन हींज बेनड़ जाण।
पुन्यतणे परिणामे विचारतो मोटी निपजे रे हाम।।

यह पुराना भजन है। इसमें बताया है कि रक्षाबंधन आदि त्योहार पर बहन पहन-ओढ़कर अपने पितृगृह जाती है। वह जवान है, सुंदरी है, शृंगारयुक्त है। भाई उसको जिन आँखों से देखता है, उन्हीं आंखों से अपनी स्त्री को देखता है, किंतु इन दोनों के देखने में अंतर है या नहीं? यदि अंतर है तो आँखों में है या मन में? आँखें तो किसी को बहन या स्त्री बनाती नहीं, मन ही बनाता है। वही स्त्रियाँ जब किसी महात्मा के सामने जाती हैं तब वे उनको बहन मानते हैं।

इस तरह यह मन पाप भी पैदा करता है और पुण्य भी। इसीलिए कहा जाता है कि इसे संकोचकर रखो! पाप और पुण्य का कारण मन है। कहा भी है — **'मन एवं मनुष्याणां, कारणं बन्ध मोक्षयोः'** अर्थात् मन ही मनुष्यों के बंध और मोक्ष का कारण है। इस तरह काया से न करने पर भी जीव मन के द्वारा कर्मबंध कर लेता है।

कोई कह सकता है कि जैन धर्म में तो मन, वचन, काया, इन तीनों को कर्मबंध का कारण कहा है। फिर मन को पाप का कारण कैसे बता रहे हो? इसका उत्तर यह है कि वचन और काया के साथ मन रहता है। किंतु इस समय मैं मुख्यतया मन का वर्णन कर रहा हूँ, अतः मन के लिए कहता हूँ। आप देखते बहन को भी हैं और स्त्री को भी। फिर मन के भावों से पाप और पुण्य का बंध होता है। यह बात मनुष्य की हुई। तब पशु को भी देखिए। बिल्ली किसी जगह अपने बच्चों को तकलीफ में देखती है तब उनको वहाँ से हटाने के लिए पहले जाकर स्थान देख आती है। फिर उन बच्चों को मुँह में उठाकर ले जाती है। वे बच्चे उसके मुँह में दबे हुए अज्ञानता के कारण चूँ-चाँ करते हैं, फिर भी क्या आप उन बच्चों को छुड़ाने के लिए दौड़ते हैं? क्यों नहीं दौड़ते? आप जानते हैं कि ये इसके बच्चे हैं। इसके भाव मारने के नहीं हैं। समझ लो कि वह बिल्ली बच्चा रख आई और इतने में ही उसके सामने चूहा आया। उसने चूहे को पकड़ लिया। वह चूहा भी उसके बच्चों की तरह उसी के मुँह में दबा हुआ चूँ-चाँ करने लगा। तब क्या आप उसको छुड़ाने के लिए नहीं दौड़ते हैं? क्यों दौड़ते हैं? इस कारण कि बिल्ली के मन में बच्चों को मारने के भाव तो नहीं थे, लेकिन चूहे को मारने के भाव हैं। बिल्ली सारे संसार के चूहों को नहीं मार सकती, फिर भी वह संसार के सब चूहों की बैरन मानी जाती है, क्योंकि उसके भाव चूहों को मारने के हैं। वह भाव कहाँ है? मन में है ना! इस तरह मन पाप का कारण है। मन बड़ा शैतान है, इसके लिए शास्त्र का प्रमाण भी है।

श्री भगवती सूत्र में श्री गौतम स्वामी के प्रश्न के उत्तर में भगवान महावीर स्वामी फरमाते हैं कि जिस पुरुष ने किसी को मारने का संकल्प करके धनुष चढ़ाकर उसको कान तक खींचकर बाण छोड़ा। उस समय उस पुरुष को कायिकी आदि पाँचों क्रियाएँ लगती हैं, क्योंकि उसने संकल्प करके बाण चढ़ाया था व छोड़ा था, इसलिए उसको पाँचों क्रियाएँ लगती हैं। भगवान महावीर आगे फरमाते हैं कि बाण छोड़ने में धनुष, जीव, बाण आदि जिन पदार्थों का संयोग मिला है, यह धनुष आदि भूतकाल में जिन वनस्पति आदि जीवों के शरीर से बने हैं और वे वर्तमान जिस गति में हैं, उन जीवों को भी पाँचों क्रियाएँ लगती हैं और जहाँ संकल्प नहीं है वहाँ चार बताई हैं। वही बाण आकाश से नीचे गिरते हुए अन्य जीवों की हिंसा करे तो उस समय उस बाण व लकड़ी आदि के जीवों को तो पाँच क्रियाएँ बताई हैं और जिसने बाण छोड़ा था उसे तथा धनुष के जीवों को चार क्रियाएँ बताई हैं क्योंकि उसका संकल्प उन जीवों को मारने का नहीं था। अतः उसे

चार ही क्रियाएँ बताई गई हैं और बाण, भाले आदि के जीवों को पाँच क्रियाएँ बताई हैं। इसका कारण यह है कि निमित्त उनके शरीर का है, जिसके द्वारा हिंसा होती है। यह बात भगवती सूत्र के पाँचवें शतक के छठे उद्देशक में कही है। इससे यह सिद्ध हुआ कि जो पाप केवल हम करें वही लगे, जो न करें वह नहीं लगता, यह बात नहीं है।

कहने का सारांश यह है कि किसी समय करने में पाप ज्यादा होता है और कराने में कम होता है। कभी कराने में ज्यादा। यह बात विवेक-अविवेक पर निर्भर है। हाँ, यह अवश्य है कि करने की अपेक्षा कराने का द्रव्य, क्षेत्र, काल ज्यादा है और कराने की अपेक्षा अनुमोदना का ज्यादा है, उसी तरह पुण्य और धर्म के लिए भी है। फिर भी प्रत्येक काम में विवेक की आवश्यकता है। विवेक न होने पर अविवेक के कारण धर्म का पाप और अल्पारंभ का महारंभ भी होता जाता है।

कोई यह भी प्रश्न कर सकता है कि जब पाप का कारण अविवेक ही ठहरे तब यदि करने वाला और जिससे कराया जाए, वे दोनों ही विवेकी हों और उस दशा में स्वयं न करके उस दूसरे से, जो कि विवेकी है, कराया जाए तो क्या हर्ज है? उस दशा में तो कराने में ज्यादा पाप न होगा? फिर तो चाहे कराया जाए या किया जाए तो समान ही होगा। इसका उत्तर यह कि विवेक से कराने में ज्यादा पाप न लगेगा, लेकिन कराने में, करने की अपेक्षा द्रव्य, क्षेत्र, काल ज्यादा खुला हुआ है, उसका पाप तो ज्यादा लगेगा ही। इस विषय में विशेषतः विवेक और मन के भावों से अधिक जाना जा सकता है।

अब प्रश्न यह होता है कि हम सामायिक में बैठते हैं तब करने और कराने का ही पाप त्यागते हैं। जब अनुमोदन का पाप ज्यादा है, तब उसका त्याग क्यों नहीं करते? बड़े पाप का त्याग क्यों नहीं किया जाता? इसका उत्तर यह है कि अनुमोदन का पाप त्यागने की शक्ति न होने के कारण ही इसका त्याग नहीं कराया जाता। प्रत्येक काम अपनी शक्ति के अनुसार होता है।

भगवान ने अनुमोदन का त्याग करने की शक्ति नहीं देखी, इसलिए उसका त्याग नहीं बताया है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि करने और कराने के पाप से अनुमोदन का पाप छोटा है। आप गृहस्थ होने के कारण अनुमोदना के पाप से बच भी नहीं सकते। जैसे आप सामायिक में बैठे हैं। उस समय आप करने-कराने का त्याग तो करके बैठते हैं, लेकिन आपके घर पर व दुकान आदि का जो काम हो रहा है क्या उसका भी त्याग करते हैं? इस कारण अनुमोदना का त्याग कैसे कर सकते है?

इस प्रकार दुराग्रह का त्याग करके शास्त्र के विधान को दृष्टि में रखते हुए सत्य को समझने का प्रयत्न करना सम्यग्दृष्टि का कर्तव्य है।

साभार- श्री जवाहर किरणावली-21 (गृहस्थ धर्म भाग-1)

"साधक की अंतर्यात्रा का आरंभ बाहर से भीतर में प्रवेश करने के रूप में होता है यानी वह अपने व्यावहारिक जीवन से आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश करता है, देह से चेतना की तरफ उन्मुख होता है। किंतु यह क्रम पहले सामयिक ही रहता है क्योंकि साधना में निश्चित अवधि तक बैठने के बाद वह फिर से अपने व्यावहारिक जीवन में चला जाता है। किंतु उसका यह प्रत्यावर्तन भी उसे अपने लक्ष्य एवं आदर्श से विस्मृत नहीं बनाना चाहिए। आध्यात्मिक जीवन की ही यथोचित सम्यक् पूर्ति उसके व्यावहारिक जीवन में भी होनी चाहिए। फिर बार-बार जो एक जीवन से दूसरे जीवन में भावनात्मक प्रत्यावर्तन होता रहेगा, उसमें भावनात्मक परिवर्तन एवं उच्चतरता की अपेक्षा रहेगी। तब यह प्रत्यावर्तन एक-दूसरे का संपूरक बन जाएगा, बल्कि यों कहें कि दोनों जीवन आध्यात्मिकता से ओतप्रोत होने लगेंगे। व्यावहारिक जीवन में भी आदर्श एवं लक्ष्य के अनुकूल आचरण का विस्तार हो जाएगा।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

ज्ञान सार

श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

संकलनकर्ता -
कंचन कांकरिया, कोलकाता

29-30 मई 2025 अंक से आगे...

क्रियाएँ कितनी लगती हैं शतक 8 उद्देशक 6

पूर्वापर संबंध – क्रिया के प्रसंग में पूर्वभवों से लगने वाली क्रिया का वर्णन किया जा रहा है।

प्र.2656 मनुष्य के सिवाय नैरयिकादि 23 दंडक के जीवों को औदारिक शरीर की अपेक्षा कितनी क्रियाएँ लगती हैं?

उत्तर कदाचित् (कभी) तीन, कदाचित् चार, कदाचित् पाँच क्रियाएँ लगती हैं।

प्र.2657 नैरयिकों को नरकावासों में रहे हुए पृथ्वीकायिक एवं वायुकायिक जीवों की अपेक्षा तो 3-4-5 क्रियाएँ संभव हैं, किंतु नैरयिक तिरछेलोक में आते नहीं हैं। फिर औदारिक के शेष दंडक के जीवों की अपेक्षा उन्हें 3-4-5 क्रियाएँ क्यों लगती हैं?

उत्तर
1. नैरयिक को विरति के अभाव में 3 क्रियाएँ लगती हैं।
2. पूर्वभव के शरीर के प्रदूषित पुद्‌गलों से (प्लेगादि से) यदि जीव मरते हैं तो नैरयिक को औदारिक शरीर की अपेक्षा चौथी और पाँचवीं क्रिया भी लगती है।

इसी प्रकार शेष दंडकों की क्रिया का वर्णन करें।

प्र.2658 पूर्वभव का शरीर नैरयिक का शरीर क्यों कहलाता है?

उत्तर पूर्वभव के शरीर को वोसिरा (त्यागा) नहीं तो पूर्वभव प्रज्ञापना की अपेक्षा 'घृत घट' न्याय (घी के घड़े से घी निकाल लेने के बाद भी उसे घी का घड़ा कहते हैं) से पूर्वभव का शरीर नैरयिक का कहलाता है।

इसी प्रकार शेष दंडकों का भी कहना चाहिए।

प्र.2659 वैक्रिय, आहारक और तैजस-कार्मण शरीर की अपेक्षा प्रत्येक जीव को कितनी क्रियाएँ लग सकती हैं?

उत्तर
1. वैक्रिय, आहारक और तैजस-कार्मण शरीर की अपेक्षा जीवों को कदाचित् तीन, कदाचित् चार क्रियाएँ लगती हैं, कदाचित् अक्रिय होता है। मनुष्य कदाचित् अक्रिय होता है। शेष 23 दंडक के जीव अक्रिय नहीं होते हैं।
2. 24 ही दंडक के जीवों को इन चारों शरीरों से 5वीं प्राणातिपातिकी क्रिया नहीं लगती है, क्योंकि इन चारों शरीरों का छेदन-भेदन (विनाश) नहीं किया जा सकता है।

प्र.2660 नैरयिक और देवताओं को वैक्रिय शरीर की अपेक्षा 3-4 क्रियाएँ कैसे लगती हैं?

उत्तर
1. नैरयिक और देवताओं को परस्पर मारपीट, लड़ाई-झगड़ा आदि से 3-4 क्रियाएँ लगती हैं और
2. पूर्वभव के शरीर से यदि वैक्रिय शरीर बनाए हुए मनुष्य, तिर्यंच परितापित होते हैं तो भी 3-4 क्रियाएँ लगती हैं।

प्र.2661 नैरयिक और देवता को आहारक शरीर की अपेक्षा 3-4 क्रियाएँ क्यों लगती हैं?

उत्तर
1. नैरयिक और देवता को आहारक मुनिराज के प्रति जो ईर्ष्या, द्वेष था, उन परिणामों का त्याग नहीं करने से तीन क्रियाएँ लगती हैं एवं
2. पूर्वभव के शरीर का त्याग नहीं करने के कारण पूर्वभव के शरीर के अशुभ पुद्गलों से आहारक मुनि को पीड़ा हो सकती है। इस कारण से नैरयिक और देवता को आहारक शरीर की अपेक्षा चौथी क्रिया भी लगती है।

प्र.2662 तैजस-कार्मण शरीर की अपेक्षा 3 या 4 क्रियाएँ किस प्रकार लगती हैं?

उत्तर यद्यपि तैजस-कार्मण स्वतंत्र शरीर नहीं है, तथापि औदारिक, वैक्रिय, आहारक शरीर को परिताप पहुँचाने पर तैजस-कार्मण शरीर भी परितप्त हो जाते हैं।

प्र.2663 जिस समय आहारक शरीरी मुनिराज परितापित होते हैं, क्या उस समय उनके असाता वेदनीय का उदय होता है?

उत्तर हाँ, अमनोज्ञ गंधादि के कारण उनके असाता वेदनीय का उदय होता है, किंतु शुभ मनोयोग के कारण वह उदय नहींवत् रहता है।

प्र.2664 इन क्रियाओं से कैसे मुक्त हुआ जा सकता है?

उत्तर
त्याग बिना कोई मोक्ष न जावे,
त्याग किंया पाप रुक जावे।
केवलज्ञान उपाना हो तो,
त्यागी बनो, प्यारे त्यागी बनो।

इस भजन के माध्यम से दिए गए उपदेश को जीवन में उतारने से इन क्रियाओं से मुक्त हुआ जा सकता है।

अदत्त का थोकड़ा शतक 8 उद्देशक 7

पूर्वापर संबंध– आहारक शरीर श्रुत (ज्ञान) स्थविर ही बनाते हैं। अत: ज्ञानवान स्थविरों का 'चलमाणे चलिए' सिद्धांत पर अन्यतीर्थियों के साथ संवाद का वर्णन किया जा रहा है।

प्र.2665 अन्यतीर्थियों से संवाद करने वाले स्थविर भगवंतों का वर्णन कीजिए।

उत्तर वे स्थविर भगवंत जाति-संपन्न, कुल-संपन्न इत्यादि श. 2 उ. 1 (खंदक जी) में वर्णित गुणों से युक्त यावत् जीने की आशा और मरण के भय से रहित थे। वे श्रमण भगवान महावीर से न अति दूर न अति निकट घुटनों को ऊँचा और मस्तक को थोड़ा नीचा झुकाकर ध्यान रूपी कोठे में प्रविष्ट होकर संयम तप से अपनी आत्मा को भावित करते हुए विचरते थे।

प्र.2666 अन्यतीर्थियों ने स्थविर भगवंतों से क्या कहा?

उत्तर अन्यतीर्थियों ने स्थविर भगवंतों से कहा कि तुम तीन करण तीन योग से असंयत, अविरत, अप्रतिहत (बेरोकटोक) पाप कर्म करने वाले हो यावत् एकांत बाल हो क्योंकि तुम अदत्त (बिना दिया हुआ) को ग्रहण करते हो, अदत्त का भोजन करते हो, अदत्त की अनुमति देते हो।

प्र.2667 स्थविर भगवंतों ने पूछा कि हम किस प्रकार अदत्त को ग्रहण करते हैं?

उत्तर अन्यतीर्थियों ने कहा कि आपके मत में दिया जाता हुआ पदार्थ 'नहीं दिया हुआ', पात्र में डाली जाती हुई वस्तु 'नहीं डाली गई', ऐसा कथन है। पात्र में डालते वक्त उस वस्तु का कोई अपहरण कर ले तो आप कहते हो कि गृहपति के पदार्थ का अपहरण हुआ है। अत: आप अदत्त को ग्रहण करते हो।

साभार- श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

-क्रमशः

राम चमकते भानु समाना

श्रमणोपासक हेडलाइंस

- बीकानेर सेठिया कोटड़ी में **04 जून** को परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में **पाँच दीक्षाएँ** संपन्न। **मुमुक्षु मेघा जी डोसी** की दीक्षा **चातुर्मास काल** के लिए एवं **मुमुक्षु धनश्री जी चोरड़िया** की दीक्षा **13 अक्टूबर** को **देशनोक** के लिए घोषित। नवदीक्षित साध्वीवर्याओं की बड़ी दीक्षा (छेदोपस्थापनीय चारित्र) भी संपन्न।
- मासखमण तप सहित अनेकानेक तपस्याओं की पावन भेंट बीकानेर संघ द्वारा गुरुचरणों में समर्पित।
- बीकानेर में संतवृद आदि ठाणा-47 एवं साध्वीवृंद आदि ठाणा-93 का पावन सान्निध्य प्राप्त कर हर कोई आह्लादित। प्रार्थना, प्रवचन, आगम वाचनी, धर्मचर्चा, जिज्ञासा-समाधान आदि का लाभ लेने की होड़ लगी।
- बीकानेर, जगदलपुर, ब्यावर एवं उदयपुर में अंचल स्तरीय '**परिवर्धनम्**' शिविरों के सफल आयोजन। सैकड़ों शिविरार्थियों ने अपना जीवन परिवर्तन की ओर किया गया अग्रसर।
- संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, शिखर सदस्यगण, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, 92 वर्षीय शांति देवी बेगानी सहित हजारों गुरुभक्तों ने गुरुदर्शन-सेवा का अपूर्व लाभ प्राप्त कर जीवन धन्य बनाया।
- मुमुक्षु भाई-बहनों के उत्कृष्ट त्याग का देशभर में अनेक स्थानों पर स्वागत-बहुमान। अपनी भावाभिव्यक्ति में वीतराग पथ के पथिकों ने गुरु आज्ञा में रहकर आरुग्गबोहिलाभं में अध्ययन को बताया सर्वोपरि।
- देशनोक में **20 से 27 जुलाई** को '**अनुत्तरम्**' शिविर एवं **13 से 27 जुलाई** को '**तत्वानंद**' शिविर का होगा आयोजन। 09 से 11 जून को 25 से 50 आयु वर्ग हेतु '**जागरण**' शिविर का सफलतम आयोजन।
- **शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलता जी म.सा.** के महाप्रयाण से हर कोई स्तब्ध। अनेक संघों ने गुणानुवाद सभा का आयोजन कर दी भावांजलि। चार-चार लोगस्स का किया ध्यान।
- खिरकिया के समदड़िया परिवार द्वारा संघ पदाधिकारियों व गणमान्यजनों की उपस्थिति में धर्म साधना हेतु केंद्रीय संघ को भूमि का लोकार्पण। सर्वत्र भूरि-भूरि प्रशंसा।
- देशभर में उत्क्रांति नियमों की पालना के साथ अनेक कार्यक्रम संपन्न। '**अमृतम्**' आह्वान के अंतर्गत स्थानीय समता युवा संघों द्वारा अनेक स्थानों पर सेवा कार्यों के आयोजन। श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ द्वारा तरुण शक्ति के अंतर्गत 'Career Compass : A Career Counselling Session' विषय पर जूम ऑनलाइन सेशन के माध्यम से विद्यार्थियों का किया मार्गदर्शन।

गुरुचरण विहार समाचार

''दीक्षा मात्र वेश परिवर्तन नहीं, जीवन परिवर्तन है''
- आचार्य भगवन्

''दुनिया को प्रभावित नहीं, आत्मा को भावित करें''
- उपाध्याय प्रवर

युगनिर्माता आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. एवं उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में पाँच मुमुक्षु आत्माओं की जैन भागवती दीक्षा सोल्लास संपन्न

नवीन नामकरण संत श्री राममूर्ति मुनि जी म.सा., संत श्री रामहंस मुनि जी म.सा., साध्वी श्री रामरुचि श्री जी म.सा., साध्वी श्री रामनिभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री रामसुधा श्री जी म.सा. की घोषणा से सर्वत्र हर्ष की लहर

मुमुक्षु मेघा जी डोसी की जैन भागवती दीक्षा देशनोक चातुर्मास में एवं मुमुक्षु धनश्री जी चोरड़िया की दीक्षा 13 अक्टूबर को देशनोक के लिए घोषित

नवदीक्षित महासतीवर्याओं की बड़ी दीक्षा (छेदोपस्थापनीय चारित्र) संपन्न

सेठिया कोटड़ी, बीकानेर (राज.)।

ज्ञान और क्रिया के संगम, जिनशासन का तेज सितारा।
कलयुग में भी राम चरणों में, सतयुग का है दिव्य नजारा।।

स्व-पर कल्याण की साधना में अहर्निशरत रहने वाले युगनिर्माता, युगपुरुष, साधना के शिखर पुरुष, रत्नत्रय के महान आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील संप्रेरक, ज्ञान एवं क्रिया के बेजोड़ संगम, नानेश पट्टधर, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-47 एवं पर्याय ज्येष्ठा साध्वी श्री पारस कँवर जी म.सा., शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला

कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले) आदि ठाणा-93 के पावन सान्निध्य में साधुमार्गी इतिहास की साक्षी बीकानेर की पावन धरा पर अध्यात्म का अलख जग गया। संपूर्ण चतुर्विध संघ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप की आराधना में समर्पित है। उभय गुरु भगवंतों को अपने बीच पाकर श्रद्धालु धर्मप्रेमी जनता अभिभूत हो गई। प्रार्थना, प्रवचन, ज्ञानचर्चा, आगम वाचनी, जिज्ञासा-समाधान आदि में सभी श्रावक-श्राविकाएँ आबाल-वृद्ध बढ़-चढ़कर भाग लिया। पाँच मुमुक्षु आत्माओं की जैन भागवती दीक्षा बीकानेर के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गई।

बीकानेर-मारवाड़ अंचल के '**परिवर्धनम्**' शिविर का सफल आयोजन संपन्न हुआ। **मुमुक्षु मेघा जी डोसी**, डौंडीलोहारा की जैन भागवती दीक्षा देशनोक **चातुर्मास काल** में एवं **मुमुक्षु धनश्री जी चोरड़िया**, शहादा की दीक्षा देशनोक में **13 अक्टूबर** के लिए साधु-मर्यादा में रखे जाने वाले सभी आगारों सहित घोषित हुई। घोषणा के साथ ही सर्वत्र खुशी की लहर व्याप्त हो गई। तीन दिवसीय '**जागरण**' शिविर अत्यंत ही प्रभावी रहा। **तपस्विनी पिंकी जी सेठिया**, बीकानेर एवं **तपस्विनी गरिमा जी सिपानी**, उदयरामसर ने **मासखमण तप** करके शासन का गौरव बढ़ाया। महापुरुषों के सान्निध्य में नवदीक्षित चारित्रात्माओं की बड़ी दीक्षा (छेदोपस्थापनीय चारित्र) उल्लासपूर्ण वातावरण में संपन्न हुई। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर का बीकानेर का ऐतिहासिक पावन प्रवास अविस्मरणीय बन गया। संपूर्ण बीकानेर क्षेत्र राम गुरु की छाँव में धर्म के रंग में रँग गया।

धैर्यवान आत्मा को भय नहीं होता

01 जून 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। प्रात: मंगल बेला में रविवारीय समता शाखा में अपार अनमेदिनी की उपस्थिति देखते ही बन रही थी। संपूर्ण जनसैलाब अपने आपको गुरुदेव द्वारा प्रदत्त इस विशेष आयाम को धन्य बनाने को आतुर था। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाया।

साधना के शिखर महापुरुष आचार्य भगवन् ने उपस्थित गुरुभक्तों को दिव्य आगमवाणी का श्रवण कराते हुए अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''धर्म की आराधना करने से धैर्य आएगा। किसी भी स्थिति में जल्दी उत्तेजित नहीं होना। धर्म से सामर्थ्य बढ़ेगा। धर्म से मन प्रसन्न होना चाहिए, निर्भयता आनी चाहिए। मृत्यु का भय नहीं होना चाहिए। शरीर जन्म लेता है तो वह मरेगा, लेकिन आत्मा न जन्म लेती है और न मरती है। आत्मा अलग है, शरीर अलग है। मन चंचल होगा तो शरीर में चंचलता आ जाएगी। धैर्यवान आत्मा को कोई भय नहीं होता। धर्म में मजबूत रहें। कामदेव श्रावक उपसर्ग से घबराए नहीं। मन में जैसा सोचें, वैसा बोलें, फिर वैसा करें। आसक्ति, लगाव, जुड़ाव आदि अशांति के कारण हैं। संसार में रहते हुए संसार में न रहें। संसार से निर्वेद बनें। कैसा भी दृश्य सामने आए उससे प्रभावित नहीं हों। धर्म का मर्म जानने वाले बहुत कम होते हैं। धर्म, संग्रह छुड़ाता है। धर्म लगाव को तोड़ता है। धर्म के प्रभाव से आसक्ति कम होती है। आसक्ति घटेगी तो धर्म बढ़ेगा।''**

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने '**जिया कब तक उलझेगा, संसार विकल्पों में**' गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि इंद्रियों की शिथिलता निश्चित है। समय रहते हुए संयम मार्ग पर आगे बढ़ें। अहिंसा, संयम, तप को जीवन में आगे बढ़ाएँ। शासन दीपिका साध्वी सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले) आदि साध्वीवृंद ने '**भाग्यशाली हैं हम, पुण्यशाली हैं**' गीत प्रस्तुत किया। संपूर्ण सभा ने एक स्वर में '**जब भी हो गुरुदेव के दर्शन, समझो तीरथ हो गया**' गीत का संगान अहोभाव के साथ किया। संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, शिखर सदस्यगण सहित हजारों गुरुभक्तों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लेकर जीवन धन्य बनाया। प्रत्येक पक्खी को प्रतिक्रमण करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया।

श्री साधुमार्गी जैन सेवा समिति, बीकानेर एवं संस्कार शिविर समिति द्वारा महापुरुषों के सान्निध्य में आयोजित 10 दिवसीय बीकानेर-मारवाड़ अंचल '**परिवर्धनम्**' शिविर का समापन समारोह संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, शिखर सदस्य, शिविर संयोजक, अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, स्थानीय संघ अध्यक्ष, मंत्री आदि की उपस्थिति में सानंद संपन्न हुआ। बच्चों ने आकर्षक प्रस्तुतियाँ दीं। मुमुक्षु मयंक जी सोनावत, मुमुक्षु हार्दिक जी सोनावत, मुमुक्षु रेखा जी सोनावत ने शिविर के बालक-बालिकाओं को प्रेरक उद्बोधन में लक्ष्य सदैव ऊँचा रखते हुए संयम भाव जगाने एवं श्रेष्ठ कार्यों में विलंब न करने की अद्भुत प्रेरणा दी।

संयम के लिए हमारा पुरुषार्थ जगे

मुमुक्षु धनश्री जी चोरड़िया की दीक्षा 13 अक्टूबर के लिए घोषित

02 जून 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। प्रातः '**मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान**' एवं '**राम गुरु महाराज आपकी जय हो**' मधुर भक्ति गीतों के साथ प्रभु एवं गुरुभक्ति की गई। आचार्यदेव ने असीम कृपा बरसाते हुए मंगलपाठ श्रवण कराया। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि गुरुभक्ति, दर्शन से हमने क्या प्राप्त किया? संवर में सुख है। संयम में सुख है। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह की आराधना से हमारा कल्याण होने वाला है। मात्र जय-जयकार और हर्ष-हर्ष में नहीं रहें। हमें भी वैराग्यदीप जलाना है। अंतराय कर्म टूटे, संयम के लिए हमारा पुरुषार्थ जगे, अंतर् में ऐसा भाव जगाना चाहिए। संवर की आराधना से हमारे जीवन की दशा और दिशा बदल जाएगी।

श्री लाघव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि इंद्रियों का निग्रह किए बिना मुक्ति नहीं मिल सकती। भोग भोगने में अच्छे लगते हैं, पर उदयकाल जब आता है तो ये भोग दुख का कारण बन जाते हैं।

'**परिवर्धनम्**' शिविर में उपाध्याय प्रवर ने शिविरार्थियों को प्रतिबोधित करते हुए फरमाया कि ''**बुद्धि की पवित्रता मोक्ष का द्वार है। शुभ भावना को निरंतर आगे बढ़ाएँ। शुभ विचार, शुभ कार्य को निरंतर आगे बढ़ाएँ।**''

आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर की निर्मल संयम-साधना से प्रेरित होकर स्व-पर कल्याण हेतु अपना सर्वस्व समर्पित करने की भावना रखने वाली **मुमुक्षु सुश्री धनश्री जी चोरड़िया** सुपुत्री रमेश जी-हेमलता जी चोरड़िया, शहादा की दीक्षा हेतु परिजनों ने गुरुचरणों में अनुज्ञा-पत्र सहर्ष समर्पित किया। इस अवसर पर छोटे दादाजी मोहनलाल जी चोरड़िया ने अनुज्ञा-पत्र का वाचन किया। बड़े पिताजी इंद्रचंद जी चोरड़िया, संजय जी चोरड़िया, चाचाजी नवरतन जी चोरड़िया, नानाजी प्रकाश जी बोहरा, खेतिया, भाई जय जी चोरड़िया, बहन दीया जी आदि ने आचार्य भगवन् के पावन चरणों में अनुज्ञा-पत्र जैसे ही समर्पित किया, संपूर्ण सभा '**राम गुरु विराट हैं, दीक्षाओं का ठाट है**' आदि जयघोषों से गूँज उठी।

24 वर्षीय **मुमुक्षु सुश्री धनश्री जी चोरड़िया** ने प्रतिज्ञा-पत्र का पठन करते हुए कहा कि आज मेरी वर्षों से सँजोई हुई संयम ग्रहण करने की भावना साकार रूप लेने जा रही है। आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर व परिजनों के मंगल आशीर्वाद से मैं संयम पथ पर आगे बढ़ रही हूँ। संयम जीवन ही सर्वश्रेष्ठ है। साध्वीवर्याओं ने '**तेरी साधना को झुकती मेरी आत्मा**' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। विभिन्न तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए।

आचार्य भगवन् ने असीम कृपा कर **मुमुक्षु धनश्री जी चोरड़िया** की दीक्षा **13 अक्टूबर 2025** को **देशनोक** के लिए जैसे ही उद्घोषित की संपूर्ण सभा जय-जयकारों व जयवंता-जयवंता के स्वरों से हर्षातिरेक हो गई।

मुमुक्षुजनों मयंक जी सोनावत, हार्दिक जी सोनावत, रेखा जी सोनावत, नेहा जी डोसी, साक्षी जी भंसाली का आत्मीय स्वागत-बहुमान

वीतरागता की ओर बढ़ रहे चरण, धन्य-धन्य कह रहा है सबका मन।

होटल कला मंदिर, बीकानेर। सांसारिक बंधनों, सुख-सुविधाओं को छोड़कर त्याग, संयम, वैराग्य पथ पर आगे बढ़ने वाले मुमुक्षु भाई-बहनों का गरिमामय समारोह में श्री साधुमार्गी जैन सेवा समिति-बीकानेर, समता महिला मंडल, समता युवा संघ, समता बहू मंडल, समता बालिका मंडल एवं श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ सहित अनेक संस्थाओं द्वारा शानदार आत्मीय स्वागत किया गया। समारोह में मंच पर मुमुक्षु भाई-बहन व वीर परिजन शोभायमान थे। कार्यक्रम के प्रारंभ में समता महिला मंडल ने मंगलाचरण एवं समता बहू मंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। अभिनंदन-पत्र का पठन संघ मंत्री ने किया। मुमुक्षुओं का आत्मीय परिचय महेश नाहटा ने दिया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने अपने भावाभिनंदन में कहा कि आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर की महती कृपा से संयम शतम् में दीक्षाओं का ठाट लगा हुआ है। अल्पायु में संयम ग्रहण कर ये मुमुक्षु भाई-बहन सभी के लिए आदर्श बन गए हैं। शिविरों के माध्यम से कई प्रतिभाएँ अपने जीवन को आगे बढ़ा रही हैं। ये हर्ष का विषय है। दीक्षार्थी परिजन व बीकानेर संघ बधाई के पात्र हैं।

मुमुक्षु रेखा जी सोनावत ने अपने भावोद्‌गार में कहा कि मेरे घर से यह दान जाना चाहिए। सुपात्रदान हर कोई देता है, लेकिन मेरे बच्चों की भावना बनी और मेरे मन में भी ये भावना जगी। आज यह प्रसंग भी आ गया है। अपनी संतानों को महापुरुषों के सान्निध्य में और आरुग्गबोहिलाभं में भेजने का लक्ष्य अवश्य रखें।

मुमुक्षु मयंक जी सोनावत ने कहा कि श्री विदेह मुनि जी म.सा. का पावन सान्निध्य हैदराबाद में प्राप्त हुआ। शिविर में मुझे जीव-अजीव का ज्ञान हुआ और उसी समय आगे बढ़ने का लक्ष्य बना लिया। आज वह शुभ दिन आ गया है। संयम में जो आनंद है वह और कहीं नहीं है।

मुमुक्षु हार्दिक जी सोनावत ने कहा कि महापुरुषों के पावन सान्निध्य तथा माता-पिता के शुभ संस्कार प्राप्त कर इस संयम पथ पर आगे बढ़ रहा हूँ। आत्मकल्याण के लिए उम्र का बंधन नहीं होता है।

मुमुक्षु नेहा जी डोसी ने **'तेरी साधना को झुकती मेरी आत्मा'** गीत प्रस्तुत करते हुए कहा कि मोक्ष जाने का मार्ग संयम है। गुरु-भगवंतों एवं साध्वीवर्याओं के पावन दर्शन कर मेरे मन में भावना जगी और मैं संयम मार्ग पर आगे बढ़ गई।

मुमुक्षु साक्षी जी भंसाली ने कहा कि मनुष्य भव को सार्थक करने का सुंदर अवसर प्राप्त हुआ है। गुरु-भगवंतों सहित चारित्रात्माओं एवं माता-पिता से अपूर्व आत्मशिक्षा प्राप्त हुई। मेरे उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरे माता-पिता ने मुझे आज्ञा देकर महान उपकार किया है। शिविरों में जाने का अवसर प्राप्त हुआ और दीक्षा ग्रहण करने का संकल्प मैंने लिया और आज वह पावन दिन आ गया। मैं सभी के उपकारों के प्रति कृतज्ञ रहूँगी।

मुमुक्षु भाई-बहनों एवं वीर परिजनों का आत्मीय स्वागत श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, श्री साधुमार्गी जैन सेवा समिति, समता महिला मंडल, बहू मंडल, समता युवा संघ, बालिका मंडल, आरुग्गबोहिलाभं, गंगाशहर-भीनासर संघ सहित अनेक संस्थाओं द्वारा तिलक, माला, शॉल व अभिनंदन-पत्र भेंट कर किया गया। **'संयम के भाव आज जगे, मेरे नाम के आगे राम लगे'** एवं **'संसार खारो लागें, वैराग्य प्यारो लागें'** आदि गीत सभा को संयोजन कर रहे गुरुभक्तों ने प्रस्तुत किया।

सम्मानित सभा में संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, शिविर संयोजक, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, स्थानीय संघ अध्यक्ष-मंत्री सहित देश के अनेक स्थानों से पधारे भाई-बहनों की गरिमामय उपस्थिति रही।

चर्चा की नहीं, चर्या की कीमत है

03 जून 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना पश्चात् आयोजित धर्मसभा में उपस्थित गुरुभक्तों व अपार जनमेदिनी को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **''गुरुचरणों का सान्निध्य निरंतर प्राप्त हो रहा है। 'क्या पाया और क्या प्राप्त कर सकते हैं' इसे चिंतन का विषय बनाएँ। गुरु का सान्निध्य सोए ज्ञान को जगाने वाला होता है। अपना पुरुषार्थ जगाएँ, क्योंकि परिणाम पुरुषार्थ से मिलेगा। हमारा संकल्प दृढ़ व मजबूत होना चाहिए। जीवन में यह महत्व नहीं कि सोच कितनी ऊँची है। जीवन में मूल्य आचरण का है। सत्य की महिमा अपरंपार है। सत्य, ईमान से ही व्यापार ऊँचाइयों तक पहुँचता है। विचार, मन और जुबान की कला से दुनिया प्रभावित हो सकती है, लेकिन आत्मा को प्रभावित करने के लिए आचरण आवश्यक है। सत्यनिष्ठा, मर्यादित धर्ममय जीवन सिद्धांत के जितना अनुकूल होता है उतनी ही शक्ति प्रकट होती है। हमारी चर्या जितनी पवित्र होगी उतना ही उसका महत्व होगा। अच्छे व बुरे सभी विचारों का प्रभाव मन पर पड़ता है।''**

श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने '**आया कहाँ से कहाँ है जाना, ढूँढ़ ले ठिकाना चेतन ढूँढ़ ले ठिकाना**' गीत प्रस्तुत कर सबको भावविभोर कर दिया। श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि ब्रह्मचर्य पालन करने वाला साधक स्वाध्याय में मन लगाए। वह स्त्रीकथा न करे, न सुने। ब्रह्मचर्य के नौ बाड़ फरमाए गए।

साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने '**राम गुरुवर तेरे जीवन को करते हैं नमन**' गुरुभक्ति गीत एवं साध्वी श्री सुमेधा श्री जी म.सा., साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने '**रोम-रोम में बसिया राम गुरु**' वंदना गीत प्रस्तुत किया। विभिन्न तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए।

मुमुक्षु नेहा जी डोसी एवं साक्षी जी भंसाली का भव्य वरघोड़ा, अनेक स्थानों पर हुआ स्वागत

संयम पथ पर कदम बढ़ाऊँ, करूँ आत्म-संधान,
मेरा एक यही अरमान।

मानव जीवन का सार संयम है। ऐसे ही त्याग व संयम मार्ग पर आगे बढ़ने वाली **मुमुक्षु नेहा जी डोसी**, डौंडीलोहारा एवं **मुमुक्षु साक्षी जी भंसाली**, डौंडीलोहारा का भव्य वरघोड़ा श्री साधुमार्गी जैन सेवा समिति, बीकानेर द्वारा निकाला गया। वरघोड़ा राँगड़ी चौक से प्रारंभ होकर कोठारी मोहल्ला, ढड्ढा चौक आदि अनेकानेक मोहल्लों में होते हुए पुन: सेठिया कोटड़ी पहुँचकर धर्मसभा में परिवर्तित हो गया। मुमुक्षु बहनें व परिजन आकर्षक रथ में सवार थे। जैन-जैनेतर जन अनेक स्थानों पर स्वागत हेतु उमड़ पड़े। मुमुक्षुओं के आदर्श त्याग को देखकर सभी नतमस्तक हो रहे थे। संपूर्ण मार्ग '**त्रिशला नंदन वीर की, जय बोलो महावीर की**', '**जग में सुंदर दो ये नाम, जय गुरु नाना जय गुरु राम**', '**संयम इनका सख्त है, तभी तो लाखों भक्त हैं**', '**राम गुरु विराट हैं, दीक्षाओं का ठाट है**' आदि अनेकानेक जयघोषों से गुंजायमान हो रहा था।

मोह-ममत्व छोड़ना बहुत बड़ी बात है

युगनिर्माता आचार्य भगवन् एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में पाँच मुमुक्षु आत्माओं की जैन भागवती दीक्षा संपन्न, माँ अपने दो बेटों के साथ संयम पथ पर अग्रसर

संयम प्यारो लागै, म्हानै दीक्षा प्यारी लागै।
म्हाने राम गुरु सा री, चरणा री शरण प्यारी लागै।।
जहाँ राम गुरु की महर है, वहाँ संयम लीला लहर है।

04 जून 2025, सेलिया कोटड़ी। परमागम रहस्यज्ञाता परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर की निर्मल संयम साधना एवं ओजस्वी-तेजस्वी प्रवचनों से प्रभावित होकर अनेक आत्माएँ स्व-पर कल्याण की साधना में समर्पित हो रहे हैं। इसी कड़ी में 15 वर्षीय **मुमुक्षु मयंक जी सोनावत** व 13 वर्षीय **मुमुक्षु हार्दिक जी सोनावत** सुपुत्र विनीत जी-रेखा जी सोनावत, भीनासर-हैदराबाद, 39 वर्षीय **मुमुक्षु श्रीमती रेखा जी सोनावत** धर्मसहायिका विनीत जी सोनावत, भीनासर-हैदराबाद, 29 वर्षीय **मुमुक्षु नेहा जी डोसी** सुपुत्री महेंद्र जी-निर्मला जी डोसी, 27 वर्षीय **मुमुक्षु साक्षी जी भंसाली** सुपुत्री राजू जी-ललिता जी भंसाली, डौंडीलोहारा सभी भौतिक सुख-सुविधाओं को ठोकर मारकर आत्मकल्याण के सर्वश्रेष्ठ संयम पथ पर अग्रसर होकर सबके लिए आदर्श बन गए। आत्म-कल्याण के लिए कोई उम्र नहीं होती। सुंदर भावों के साथ जीवन के सुनहरे पलों को इन पाँचों मुमुक्षुओं ने सार्थक कर लिया।

प्रात: 6 बजे आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के साथ श्री रमेश मुनि जी म.सा., श्री प्रकाश मुनि जी म.सा., कविरत्न श्री वीरेंद्र मुनि जी म.सा., श्री गौतम मुनि जी म.सा. आदि संतवृंद एवं शासन दीपिका साध्वी श्री कमलप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा., साध्वी श्री कल्याण कँवर जी म.सा., साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री श्वेता श्री जी म.सा., साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री प्रभावना श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा., साध्वी श्री निखार श्री जी म.सा., साध्वी श्री चंद्रिका श्री जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. आदि के पावन सान्निध्य में श्रावक-श्राविकाओं की अपार जनमेदिनी की उपस्थिति समवसरण का अद्भुत दृश्य परिलक्षित कर रही थी। प्रारंभ में श्री गौतम मुनि जी म.सा. ने '**14 पूर्वों का सार, महामंत्र नवकार**' का सामूहिक जाप करवाया।

प्रात: 6:05 पर बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने दीक्षा विधि प्रारंभ करते हुए सम्यक्त्व का पाठ एवं अन्य विधियाँ संपन्न करवाई। 6:15 बजे परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. ने असीम कृपा करके तीन बार करेमि भंते के पाठ से मुमुक्षु आत्माओं को संपूर्ण सावद्य (पापकारी) क्रियाओं का त्याग करवाकर नवकार महामंत्र के पंचम पद '**नमो लोए सव्वसाहूणं**' पर आरूढ़ किया एवं नवीन नामकरण इस प्रकार घोषित किए -

- मुमुक्षु मयंक जी सोनावत .... **नवदीक्षित संत श्री राममूर्ति मुनि जी म.सा.**
- मुमुक्षु हार्दिक जी सोनावत .... **नवदीक्षित संत श्री रामहंस मुनि जी म.सा.**
- मुमुक्षु श्रीमती रेखा जी सोनावत .... **नवदीक्षिता साध्वी श्री रामरुचि श्री जी म.सा.**
- मुमुक्षु नेहा जी डोसी .... **नवदीक्षिता साध्वी श्री रामनिभा श्री जी म.सा.**
- मुमुक्षु साक्षी जी भंसाली .... **नवदीक्षिता साध्वी श्री रामसुधा श्री जी म.सा.**

नवीन नामकरण की घोषणा के साथ ही संपूर्ण सभा जय-जयकारों एवं संयम गीतों से गूँज उठी। हर किसी ने अपने धर्म आह्लाद को प्रकट किया। केशलुंचन का कार्य नवदीक्षित संतों का आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर ने तथा नवदीक्षिता साध्वीवर्याओं का साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले) के करकमलों से संपन्न हुआ।

दीक्षा से पूर्व रामपुरिया हवेली से मुमुक्षु भाई-बहनों का सफेद बाना धारण कर ऐतिहासिक स्थल सेठिया कोटड़ी में आगमन हुआ। चहुँओर संयम का वातावरण छा गया।

साधना के शिखर पुरुष आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''परमात्मा से सदा प्रीत बनी रहनी चाहिए। अहंकार, ममकार हमारे मन में रहता है तो प्रीत वहाँ से समाप्त हो जाती है। हमारी भक्ति सही दिशा में चलती रहेगी तो भगवान की भक्ति रहेगी। डौंडीलोहारा जैसे छोटे-से गाँव से अब तक 16 दीक्षाएँ हो चुकी हैं। ममत्व एवं मेरेपन का त्याग करना बहुत कठिन है। आज का प्रसंग हमको प्रेरणा देता है- 'दीक्षा आप लीजिए औरों को दिलाइए, जो भी लेता होवे दीक्षा, उनका साथ दीजिए'। इनकी भावना को बढ़ाना है। इतनी छोटी उम्र में आप दीक्षा लेकर बहुत उच्च कार्य के रूप में साधु जीवन स्वीकार कर रहे हैं। मोह-ममत्व को छोड़ना बहुत बड़ी बात है। एकत्व की भावना जब सध जाती है तो कैसी भी परिस्थिति आ जाए, फिर भी मोह की भयावहता हमें परेशान करने वाली नहीं बनेगी। साधना का लाभ केवल वेश परिवर्तन नहीं, जीवन परिवर्तन में है। छल-प्रपंच, विषय-वासना से मुक्ति हमारे से कोसों दूर हो जाएगी। आत्मकल्याण यानी आत्मा को आनंद से परिपूरित करना। जब भगवान की आज्ञा पर हमारा जीवन कटिबद्ध होगा तब जीवन में आनंद आएगा। भगवान की आज्ञा अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अचौर्य, ब्रह्मचर्य में है।''**

श्री लाघव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संयम जीवन सब कुछ खोकर, सब कुछ पाने का है। गुरु जब एक बार सिर पर हाथ फेरते हैं तो सारे कुसंस्कार दूर हो जाते हैं। धन-दौलत से आप सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं, किंतु राम का नाम प्राप्त नहीं कर सकते।

श्री गौतम मुनि जी म.सा. ने मुमुक्षुओं के आत्मिक परिचय के साथ उनसे प्रेरणा लेने का आह्वान किया।

श्री रामसौरभ मुनि जी म.सा. ने '**दुर्लभ चरण शरण में तुम्हें वास मिल गया**' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। श्री गगन मुनि जी म.सा., श्री धीरज मुनि जी म.सा., श्री गौरव मुनि जी म.सा. आदि संतों ने '**वीतरागता की ओर बढ़ रहे हैं ये चरण**', साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा., साध्वी श्री कमलप्रभा जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने '**राम का राज जो पाया, संयम हैं सुखकारी**' एवं साध्वी मंडल ने '**देवां बधाई आज राम गुरु ने**' विभिन्न गीत प्रस्तुत किए। सोनावत परिवार ने सुंदर भावाभिव्यक्ति में नवदीक्षित म.सा. को भोलावन देते हुए कहा कि गुरु आज्ञा में रहना है। संयम को खूब दीपाना है। परिवार का नाम रोशन करना है। महेश नाहटा ने इस दीक्षा महोत्सव को अलौकिक, अविस्मरणीय, अद्‌भुत निरूपित करते हुए दीक्षार्थियों व परिजनों के आदर्श त्याग की सराहना की।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने खुशियों का पिटारा खोलते हुए महापुरुषों के सान्निध्य में **20 से 27 जुलाई** को **देशनोक** में '**अनुत्तरम्**' शिविर एवं **13 से 27 जुलाई** को '**तत्वानंद**' शिविर की महत्वपूर्ण जानकारी दी। दीक्षा समारोह में सोनावत परिवार, डोसी परिवार, भंसाली परिवार सहित देश के अनेक स्थानों के श्रद्धालु धर्मप्रेमी भाई-बहनों ने उपस्थित होकर दीक्षा की अनुमोदना की। श्री साधुमार्गी जैन सेवा समिति, समता महिला मंडल, समता युवा संघ, समता बहू मंडल, समता बालिका मंडल, बीकानेर आदि की धर्मनिष्ठा एवं सेवा-भक्ति सराहनीय रही। यह दीक्षा महोत्सव बीकानेर के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया।

मुमुक्षु मेघा जी डोसी की दीक्षा देशनोक चातुर्मास काल के लिए घोषित

दोपहर में आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर के अद्‌भुत अतिशय का नजारा देखने को मिला। 27 वर्षीय वीर बाला अध्यात्म पथ साधिका **मुमुक्षु सुश्री मेघा जी डोसी** सुपुत्री रिखबचंद जी-मधु देवी डोसी, सुपौत्री स्व. श्री प्रेमराज जी-तारा देवी डोसी, डौंडीलोहारा की जैन भागवती दीक्षा हेतु परिजनों ने गुरुचरणों में अनुज्ञा-पत्र सहर्ष समर्पित किया। मुमुक्षु मेघा जी डोसी ने प्रतिज्ञा-पत्र श्रीचरणों में अर्पित किया।

महापुरुषों के सान्निध्य में **20 से 27 जुलाई** को **देशनोक** में '**अनुत्तरम्**' शिविर

आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मुमुक्षु मेघा जी डोसी की जैन भागवती दीक्षा चातुर्मास काल में **देशनोक** के लिए जैसे ही घोषित की, संपूर्ण सभा जय-जयकारों से हर्षानुमोदन करने लगी। एक अलग कार्यक्रम में मुमुक्षु मेघा जी डोसी व परिजनों-फूलचंद जी डोसी, रिखब जी डोसी, सौरभ जी डोसी, वीर माता मधु जी डोसी आदि का स्वागत बहुमान बोथरा भवन में श्री साधुमार्गी जैन सेवा समिति, बीकानेर द्वारा किया गया। स्वागत समारोह में '**संयम के भाव आज जगे, मेरे नाम के आगे राम लगे**' एवं '**राम गुरु की जय-जयकार**' आदि जयघोष अनवरत होते रहे।

आत्मतत्व ही सारभूत है

05 जून 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। भोर की मंगल प्रार्थना में '**मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान**' एवं '**आओ राम गुरुवर के चरणों में वंदन करें**' मधुर भजनों का गान किया गया। असीम कृपा करके उपाध्याय प्रवर ने मंगलपाठ फरमाया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संसार में यदि सुरक्षित स्थान है तो वह केवल गुरुचरणों की सन्निधि है। यदि हमारा विकास हो सकता है तो केवल गुरुचरणों में हो सकता है। आत्मतत्व ही सारभूत है। बाकी जितने भी पदार्थ हैं, जितने भी जड़ हैं, वे सारे के सारे असार हैं। केवल आत्मतत्व और उनके साथ जुड़े तत्व ही वास्तव में शांति और समाधि देने वाले हैं। गलती को गलती नहीं मानेंगे तो हमारा सुधार होने वाला नहीं है। यदि हमारा सुधार करना है तो गलती को गलती मानें।

महापुरुषों के सान्निध्य में **13 से 27 जुलाई** को '**तत्वानंद**' शिविर

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि काम, क्रोध को त्यागने वाला ही सच्चा वीर है। सभा ने '**जिनशासन के वीरों को वंदन हैं, अभिनंदन हैं**' गीत प्रस्तुत किया। इस अवसर पर एकासना, आयंबिल, उपवास, तेले की लड़ी आदि विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। अनेक तपस्याएँ निरंतर जारी हैं। 92 वर्षीय शांति देवी बेगानी ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

अशांति की जड़ सम्यक् निर्णय का अभाव है

06 जून 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। मंगलमय प्रात:कालीन प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति के पश्चात् आयोजित धर्मसभा में उपस्थित ज्ञानपिपासु श्रावक-श्राविकाओं को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी तेजस्वी वाणी में फरमाया कि ''**गुरु हमारे भीतर के अज्ञान को मिटाते हैं। अज्ञान सभी दुखों का कारण है। अज्ञान, मोह को पैदा करता है। अज्ञान, चिंता की जड़ है। हमारे जीवन की समग्र चिंताओं का प्रमुख कारण अनिर्णय है। अनिर्णय का प्रमुख कारण हमारी अज्ञान दशा है। जितना ज्यादा जानते हैं उतना ही ज्यादा भ्रमित होते हैं। ज्ञान का अभाव अनिर्णायक दशा पैदा करता है। उसका परिणाम चिंता है। जो सम्यक् निर्णय करने वाला है और जो समतामय है, वही**

जीवन सर्वश्रेष्ठ है। हमारी सारी अशांति की जड़ सम्यक् निर्णय का अभाव है। निर्णायक क्षमता प्रकट करेंगे तो जीवन का सच्चा आनंद प्रकट होगा। यह होगा ज्ञान की स्पष्टता से। गुरु ही ज्ञान का प्रकाश देते हैं। गुरु ही हमारे भीतर के अंधेरों को दूर करते हैं। जैसे ही अंधेरा छँटता है और ज्ञान प्रकट होता है फिर निर्णायक क्षमता विकसित होती है।''

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि प्रतिदिन गरिष्ठ भोजन करने से शरीर और विचारों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। पाँच विगय- दूध, दही, घी, तेल, मीठा में से प्रतिदिन एक विगय का त्याग करना चाहिए। '**जैसा खावे अन्न, वैसा होवे मन**' एवं '**जैसा पीए पानी, वैसी होवे वाणी**' लोकोक्तियाँ अपने आप में सही हैं।

साध्वी श्री लब्धि श्री जी म.सा., साध्वी श्री प्रभावना श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने '**धन्य हैं बहुश्रुत जी, धन्य तेरा ज्ञान**' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। स्थानीय श्रावक जी ने दिनांक 9 से 11 जून 2025 को प्रात: 7 से 8 बजे तक 25 से 50 आयु वर्ग के जागरण शिविर की जानकारी दी। दशवैकालिक सूत्र के प्रथम अध्ययन की पाँच गाथा एक माह में कंठस्थ करने का प्रत्याख्यान कई भाई-बहनों ने लिया। खैरोदा संघ ने चातुर्मास की विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की।

सुकुमारता का त्याग करें

07 जून 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। '**मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान**' एवं '**श्री महावीर स्वामी की सदा जय हो**' मधुर भजनों के साथ प्रात:कालीन प्रार्थना की गई। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आत्मा सुख चाहती है। वह स्वयं सुख रूप है। सुख उसका स्वभाव है। सुख हमारे भीतर रहा हुआ है। बाहर ढूँढ़ने की जरूरत नहीं है। वस्तुत: साधक की परीक्षा यहाँ नहीं, देवलोक में है। प्राप्त होने पर व्यक्ति जो छोड़ता है वही सच्चा त्याग है। अनुकूलता की इच्छा ही सबसे बड़ा दुख है। प्रतिकूलता वास्तव में जीवन को नई दिशा देती है। प्रतिकूलता को हमारा जीवन मंत्र बनाएँ। अनुकूलता हमारे पुण्य को ले जाने वाली होती है और प्रतिकूलता हमारे जीवन को खिलाने वाली होती है।

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि साधु हो या श्रावक, निंदा-प्रशंसा, शब्द, रूप, गंध, स्पर्श के आकर्षण से अलग रहें। दिनभर टी.वी., मोबाइल में जो देखते हैं, उससे क्या मनोस्थिति बन रही है ? इन सबसे मन के उन्माद को शांत करने के लिए गुरु का सान्निध्य जरूरी है। धर्म स्थान में साज-शृंगार करके आने की आवश्यकता नहीं है। संपूर्ण सभा ने '**जिनशासन के वीरों को वंदन हैं अभिनंदन हैं, महावीर के सूपतों को वंदन हैं अभिनंदन हैं**' गीत का संगान किया। एकासना, आयंबिल, उपवास, बेला, तेला के प्रत्याख्यान हुए। जीवदया की भावना को आगे बढ़ाने, नवकार जाप, लोगस्स का पाठ एवं 36 वंदना करने के नियम अनेक भाई-बहनों ने लिए। विभिन्न स्थानों एवं स्थानीय धर्मप्रेमी गुरुभक्तों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

हमारा दृष्टिकोण आत्मकेंद्रित हो

08 जून 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। रविवारीय समता शाखा आराधना करने हेतु प्रात:काल से हजारों कदम स्थानक की ओर बढ़ रहे थे। आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त इस विशेष आयाम के अंतर्गत समता आराधना की गई। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा कर मंगलपाठ फरमाया। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि यदि किसी व्यक्ति को शुद्धता की प्राप्ति करनी है तो अशुभ का परिहार

करना होगा। हमें मनुष्य भव मिला, जिनशासन मिला, सद्गुरु का योग मिला एवं सारी अनुकूलताएँ मिली। यह पुण्य की बदौलत ही संभव हुआ है। हमारा दृष्टिकोण आत्मकेंद्रित होना चाहिए। त्याग मुख्य है, किंतु उससे भी ज्यादा मुख्य है उसके पीछे रहा हुआ उद्देश्य। वंदना करने से जीव को उच्च कर्म का बंध और नीच कर्म का क्षय होकर सौभाग्य की प्राप्ति होती है। हम ऐसा पुण्य इकट्ठा कर लें कि संसार में उलझना चाहें तो भी उलझ नहीं पाएँ। भगवान द्वारा बताया गया प्रत्येक योग केवलज्ञान प्रकट करने में समर्थ है। दुनिया में सारे काम आसान हैं, लेकिन किसी कठिन कार्य पर क्षमा धारण करना, वात्सल्य भाव रखना, गुणों को प्राप्त करना और गुण प्राप्त करने के बाद उन पर अपने आपको टिकाए रखना बहुत कठिन है। हमारे सामने वंदनीय है वह नहीं तिराएगा, अपितु हमारी वंदना हमें तिराने वाली होती है।

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि पश्चात्ताप की उत्कृष्ट भावना से कर्म क्षय होते हैं। पश्चात्ताप की भावना से मृगावती को केवलज्ञान प्रकट हो गया। मुझे मेरे दोषों को दूर करना है। पूरी सभा ने '**जिनशासन के वीरों को वंदन हैं अभिनंदन हैं**' गुरुभक्ति गीत का सामूहिक गान किया। ऊपर से नमक नहीं लेने सहित अनेक त्याग-प्रत्याख्यान हुए। उदयरामसर संघ ने शेखेकाल विराजने की विनती प्रस्तुत की। चारित्रात्माओं में भी विभिन्न तपस्याएँ जारी हैं।

दुख की जड़ आशा की परिकल्पना है

09 जून 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। प्रात:कालीन मंगल बेला में '**मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान**' एवं '**हुक्मगणी का पाट हुआ हैं निहाल जी**' मधुर भक्ति भजनों के साथ प्रभु एवं गुरु वंदना की गई। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया।

प्रवचन स्थल पर आयोजित धर्मसभा में गुरुभक्तों की अपार जनमेदिनी को भगवान महावीर की अमृत देशना से पावन करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी मधुर वाणी में फरमाया कि "**गुरु ही हमें तत्व का बोध कराते हैं। तत्व यह है कि सारे दुखों का प्रारंभ या उनका बीज ही खुशी है। अगर हमने खुश होना नहीं छोड़ा तो हम दुखों से मुक्त नहीं हो सकते। आध्यात्मिक साधना बहुत सरल नहीं है तो बहुत कठिन भी नहीं है। कठिन है ऐसे दृष्टिकोण का निर्माण। व्यक्ति वर्तमान को सर्वोत्तम करने में अपना सर्वश्रेष्ठ लगा दे तो उसका भविष्य सुनिश्चित है। उनका वर्तमान भव्य और श्रेष्ठ होगा क्योंकि भविष्य वर्तमान के गर्भ से निकलने वाला बालक है। आशा का निर्माण नहीं करना, वह दुख का निर्माण करती है। आशा की परिकल्पना ही दुख की जड़ है।**"

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि वास्तव में शाश्वत सुख की ओर यदि दृष्टि रखने वाले के सामने कितनी भी समस्याएँ आ जाएँ वह खुशी-खुशी उन समस्याओं का सामना करने के लिए तैयार रहता है। हम वास्तविक सुख प्राप्त करना चाहते हैं, किंतु दौड़ भौतिक सुख की ओर लगा रहे हैं।

साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। जागरण शिविर में 25 से 50 वर्ष के युवक-युवतियों को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने फरमाया कि जीवन में आगे बढ़ने हेतु सूत्र '**नो कंपीटिशन एंड नो कंपेरिजन**' एवं जीवन में सुधार हेतु सूत्र - '**सेल्फ कंपीटिशन एंड सेल्फ कंपेरिजन**' को धारण करें। धार्मिक क्रियाओं का उद्देश्य सिर्फ भौतिक सुखों की प्राप्ति नहीं है। जो स्वयं के लिए नहीं सोच सकते वो दूसरों के लिए भी नहीं सोचते। धर्म से बाह्य सुख मिले या न मिले, लेकिन आत्मिक आनंद अवश्य प्राप्त होगा। धर्म में समभाव अवश्य आता है, जिससे दुख भी सुख रूप हो जाते हैं।

मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा की चाह दुखी बनाने वाली

10 जून 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। प्रात: मंगलमय प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति कर गुरुभक्तों ने जीवन धन्य बनाया। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आत्मा अतुल्य होती है। संसार में ऐसा कोई द्रव्य नहीं है, जिससे आत्म द्रव्य की तुलना की जा सके। यदि कोई हमें दुखी करने वाला है तो वह है दुर्गुण। दूसरों के अंदर अपने से ज्यादा गुण देखकर अंदर ही अंदर खुशी होती है तो उसके भीतर वास्तविक गुण रहे हुए हैं। दूसरों के दुर्गुणों पर दृष्टि जाने से गुण भी मंद पड़ जाते हैं। जिस पर अपनी दृष्टि होती है वही चीज बढ़ती है। अभाव पर दृष्टि पड़ेगी तो अभाव बढ़ेगा और पूर्णता पर दृष्टि होगी तो पूर्णता बढ़ेगी। मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा की चाह दुखी बनाने वाली है। जिसकी बुद्धि बड़ा करने में लगी हुई है वह छोटी-छोटी बातों पर ध्यान नहीं देता। सम्मान करने वाले एवं अपमान करने वाले के प्रति एकसमान भावना रखना महान एवं मुख्य साधना है।

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमारा लक्ष्य रहे कि हम जागरूक अवस्था में रहें, क्योंकि जागरूक रहकर किया गया कार्य सार्थकता दिलाता है। जो विषय वासना का जीवन है वह कर्म बाँधने वाला जीवन है। वह जागरूकता का नहीं बेहोशी का जीवन है। समय मात्र का भी प्रमाद मत करो। जो समय मिला है उसका सही उपयोग करो। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

जागरण शिविर में बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में शिविरार्थियों को प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि **''इसका परिणाम अच्छा ही होगा' इस सोच को हमेशा मन में बनाए रखें। धैर्य के साथ रखी गई सोच हमें विपरीत परिस्थितियों में भी एनर्जेटिक बनाए रखती है। सद्भावना के साथ किया गया कार्य हमेशा सफल होता है। जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे, लेकिन हम अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में समभाव बनाए रखें। सहयोग करने वाले बनो, निंदा करने वाले नहीं। हमेशा दूसरों के आत्मविश्वास को बढ़ाने वाले बनें।''** विभिन्न शुभ संकल्प हुए।

अंतर्मुखी दृष्टि से दुख दूर होते हैं

11 जून 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। दैनंदिनी के अनुसार प्रात: मंगल प्रार्थना में **'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'**, **'जय बोलो महावीर स्वामी की'** मधुर गीतों के साथ भक्ति आराधना की गई।

सेठिया कोटड़ी के विशाल प्रांगण में आयोजित धर्मसभा में जीवन के सच्चे सुख का ज्ञान कराते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **''गुरु आत्मा में खोज करने का रास्ता बताते हैं। अंतर्दृष्टि का बहुत महत्व है। जीवन का सच्चा सुख उसे मिलता है जिसकी आँखें लगातार अपने भीतर लगी रहती हैं। भीतर की आँखों से बाहर देखने का तात्पर्य है कि दुनिया हमारे प्रति क्या सोच रही है? कौन क्या बोल रहा है? कौन क्या कर रहा है? भीतर के वास्तविक स्वरूप को देखना अंतर् की दृष्टि है। जीवन कितना बाहर की ओर आकर्षित हो रहा है, यह चिंतन का विषय है। बाह्यदृष्टि स्वयं का आकलन दूसरों के आधार पर करती है और अंतर्दृष्टि बाहर से विमुख होकर अपने भीतर सतत नजरें लगाए रहती है। हमारे दुख का मुख्य कारण अंतर्दृष्टि का बाहर की ओर गमन है। हम लोगों की हमारे प्रति रहने वाली विचारधारा के प्रति कितने संवेदनशील हैं? अकसर हमारे दिमाग में जो बात उभरती है वह हमारे मध्य क्या चल रहा है, क्या बोल रहे हैं और क्या कर रहे हैं, इस पर आधारित है। यह विचारधारा हमारे अनेक दुखों की जड़ है।''**

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि गलत रास्ते पर चलने वाला कभी किसी का भला नहीं कर सकता, इसलिए सही मार्ग का चयन करें। हमारी विचारधारा यतना और विवेक की होनी चाहिए। जो जितना झुकेगा वह उतना ही ऊपर उठेगा। हमारी गलतियों को देख व सुनकर हमें अपने आपको सुधारने का लक्ष्य बनाना चाहिए।

जागरण शिविर में श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संकल्प शक्ति को मजबूत बनाएँ। यही उन्नति का द्वार है। मजबूत आत्मविश्वास से जीवन में संघर्ष करके भी सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले) आदि साध्वी मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए तथा तप की अनुमोदना में विभिन्न संकल्प हुए।

कल्पना-शक्ति पर नियंत्रण करें

12 जून 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। प्रात: मंगलमय प्रार्थना '**मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान**' एवं '**तुमसे लागी लगन, ले लो अपनी शरण**' भक्ति गीतों का गान किया गया।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आत्मा में इतनी ताकत है कि वह सर्वद्रव्य, सर्वक्षेत्र, सर्वकाल को संपूर्ण रूप से जानने में समर्थ है। जानना इतनी बड़ी बात नहीं है जितनी बड़ी बात है सम्यक् रूप से जानने के बाद भी सम बना रहना। ज्ञान इतना महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण है ज्ञान होने के बाद भी व्यक्ति समभाव में बना रहे। व्यक्ति यदि साधनाशील न हो तो उसे दुखी होने से कोई नहीं रोक सकता। ज्ञान बढ़ना अलग बात है और ज्ञान बढ़ने के बाद चित्त में वीतरागता का स्तर बढ़ना अलग बात है। लोगों के दुखी होने का कारण है कल्पना-शक्ति। यदि कल्पना-शक्ति दुखी बना सकती है तो वह सुखी भी बना सकती है। यदि हम सुखी बनना चाहते हैं, मन को पवित्र बनाए रखना चाहते हैं और मनुष्य जीवन का सार निकालना चाहते हैं तो कल्पना-शक्ति पर नियंत्रण करें।

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि व्यक्ति दूसरों का पुरुषार्थ देखकर ईर्ष्यालु हो जाता है, लेकिन पुरुषार्थशील नहीं होता। हमारे हर कार्य में यतना होनी चाहिए, मर्यादाओं का पालन होना चाहिए। हम अपने मन को शांत रखकर कोई भी कार्य कर सकते हैं। किसी भी नियम का उल्लंघन करके कार्य करने वाले नहीं बनें। हमारी कथनी और करनी में एकरूपता होनी चाहिए। सभा ने '**जिनशासन के वीरों को वंदन हैं, अभिनंदन हैं**' गीत प्रस्तुत किया। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। दर्शनार्थियों का आवागमन जारी रहा।

नवदीक्षित साध्वीवर्याओं की बड़ी दीक्षा संपन्न

तू धार सके तो धार, संयम सुखकारी।
तू छोड़ सके तो छोड़, दुनिया दुखकारी।।

13 जून 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। अनुपम दीक्षा प्रदाता आचार्य भगवन् एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में नवदीक्षिता **साध्वी श्री रामरुचि श्री जी म.सा., साध्वी श्री रामनिभा श्री जी म.सा., श्री रामसुधा श्री जी म.सा.** की बड़ी दीक्षा छेदोपस्थापनीय चारित्र धर्मोल्लासपूर्ण वातावरण में संपन्न हुई। प्रारंभ में नवकार महामंत्र का जाप किया गया। इस अवसर पर विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए विश्व की विरल विभूति आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**निर्ग्रंथ सरल दृष्टि वाले होते हैं। उनका दर्शन, उनका लक्ष्य सरल होता है। सरल का मतलब सीधी रेखा, कहीं पर टेढ़ापन नहीं। एकदम सीधा मोक्ष होगा।**

निर्ग्रंथ उस ऋजु को देखने वाला सरलता को देखने वाला होता है। विकल्पनाओं के जाल में वह अपने आपको उलझाता नहीं है। आत्मदृष्टि से हमने महाव्रतों को स्वीकार किया है, हमारा वही लक्ष्य जीवनपर्यंत रहना चाहिए। कोई भी कार्य करें, आत्महित के लिए करें। बोलना, चलना, खाना, पीना, सोना आदि कोई भी कार्य हो, वह आत्महित के लिए होना चाहिए। आत्महित मेरा लक्ष्य है। आत्महित के लिए साधु की पोशाक पहनी है। आत्महित के लिए परीषहों को सहन करना है, इंद्रियों के मौज-शौक के लिए नहीं। भगवान महावीर फरमाते हैं कि जिस श्रद्धा एवं भाव से, जिस उमंग से साधु जीवन स्वीकार किया है वही दृष्टि अंतिम समय तक बनी रहनी चाहिए। वीर पुरुष कठिनाइयों से घबराते नहीं है। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह बहुत कठिन व्रत हैं। मूलव्रतों को आपने स्वीकार किया है। आत्मकल्याण की दिशा में हमारा कदम निरंतर बढ़ते रहना चाहिए।''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने बड़ी दीक्षा विधि प्रारंभ की। दशवैकालिक सूत्र के चार अध्ययन का पठन करते हुए नवदीक्षिताओं को तीन करण तीन योग से हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन, परिग्रह का संपूर्ण रूप से त्याग के पच्चक्खाण करवाकर अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह महाव्रतों में आरूढ़ कर प्रतिज्ञाबद्ध करवाया।

नवदीक्षितों ने अपने संकल्प-पत्र का पठन करते हुए फरमाया कि हे भगवन्! संयम रत्न प्रदानकर आपने महान उपकार किया है। पाँच समिति, तीन गुप्ति और पाँच महाव्रतों का शुद्ध पालन कर हम अपने परम लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु दृढ़ संकल्पित हैं। हम आपकी आज्ञा की आराधना एवं चारित्रात्माओं व शासन की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

आचार-विचार में एकरूपता हो

14 जून 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। प्रात: मंगलमय प्रार्थना '**मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान**' एवं '**जय राम गुरु बोलो सा**' भक्ति गीतों के साथ भक्ति-साधना की गई। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आत्मा द्रव्य है। वह स्वयं परमात्म स्वरूप है। आत्मा का स्वरूप बादलों की छटा के समान बताया है। बादलों की छटा सूर्य के सामने आती है तो सूर्य के प्रकाश को भी मंद कर देती है। गुरुदेव ने फरमाया है कि हमें पुरुषार्थ करते रहना चाहिए। आत्मा-परमात्मा हमारे जीवन प्रसंग का एक मुख्य सिद्धांत है। धन की उपलब्धता होने से इस संसार में प्रत्येक प्राणी के कर्तव्यों में परिवर्तन आने लगता है। व्यक्ति जैसा अपने आपको मानता है उसी अनुसार उसके कृत्य और विचार रहते हैं। जब तक मनुष्य के पास धन की अनुपलब्धता रहेगी तब तक उसका आचरण भिन्न रहेगा और उसके पास धन की उपलब्धता होगी उसके स्वभाव और आचरण में भिन्नता प्रकट होगी।

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि सिर्फ ज्ञान नहीं, क्रिया भी होनी जरूरी है। कोई भी काम विधि अनुसार हो तो लाभ मिलेगा। प्रमार्जन, प्रतिलेखन समय पर होना जरूरी है।

साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले), साध्वी श्री कमलप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री कल्याण कँवर जी म.सा., साध्वी श्री श्वेता श्री जी म.सा., साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री प्रभावना श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा., साध्वी श्री निखार श्री जी म.सा., साध्वी श्री चंद्रिका श्री जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। परिवर्धनम् शिविर उदयपुर के 29 बालक-बालिकाओं ने गुरुचरणों में सुंदर भावों की अभिव्यक्ति दी। बीकानेर संघ के संरक्षक व पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष ने आचार्य भगवन् के आगामी 2026 के चातुर्मास एवं '**अभिमोक्षम्**' शिविर की पुरजोर विनती प्रस्तुत की।

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने स्वाध्याय में रत रहने की प्रेरणा देते हुए हर कार्य यतना-विवेक व उपयोगपूर्वक करने का आह्वान किया। महेश नाहटा ने आचार्य भगवन् के अतिशय एवं वीर दीक्षार्थी परिवार के आदर्श त्याग की सराहना की। अन्य अनेक त्याग-प्रत्याख्यान हुए। दीक्षा में अंतराय नहीं देने का संकल्प उपस्थित धर्मप्रेमी भाई-बहनों ने लिया। परम गुरुभक्त समीरमल जी मुणोत, रतलाम के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया।

स्थानीय सुश्रावकों ने '**जिनवाणी प्यारी लागे**' गीत प्रस्तुत कर सबको भाव-विभोर कर दिया। एकासना, आयंबिल, उपवास, बेला, तेला आदि के प्रत्याख्यान हुए।

अनुपम साधिका श्री प्रेमलता जी म.सा. को भावांजलि

15 जून 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। प्रातः मंगलमय बेला में रविवारीय समता शाखा में समता आराधना करने हेतु जनश्रद्धा का सैलाब उमड़ पड़ा। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया।

युगनिर्माता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलता जी म.सा. के चित्तौड़गढ़ में देवलोकगमन पर श्री साधुमार्गी जैन सेवा समिति, बीकानेर द्वारा गुणानुवाद सभा में हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

आराध्यदेव आचार्य भगवन् ने शांत-प्रशांत-गंभीर मुद्रा में अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि "**मृत्यु अवश्यंभावी है, सभी जानते हैं। लगभग लोगों का मौत से बचने का लक्ष्य रहता है, लेकिन मौत से बचा नहीं जा सकता। हमारे लिए जानना जरूरी है। जैसी मति होगी उसी दिशा में कदम बढ़ेंगे। महासती जी ने खेलने-कूदने की उम्र में संयम जीवन स्वीकार कर लिया। हाथ में खिलौनो की जगह पात्र-रजोहरण ले लिया। आपको महाश्रमणीरत्ना साध्वी श्री इंद्र कँवर जी म.सा., साध्वी श्री पैप कँवर जी म.सा. का सान्निध्य मिला। जो खाने को दिया वो खा लिया। जो पहनने को दिया, वो पहन लिया। कोई प्रतिक्रिया नहीं, समर्पणा में वस्तु गौण है। पूज्य गुरुदेव से अहोभाव से ग्रहण करते। श्रद्धा-समर्पणा महत्व रखती है। अपना वर्चस्व गौण कर दिया। सत्य के अनुरूप जीवन ढाल लिया तो सुखद समीर चलती रहेगी। दुख का कारण मैं और मेरापन है। सुख का कारण बड़ों ने जो दे दिया वह उपयोगी है। जहाँ समर्पणा है वहाँ सुख ही सुख है। रोग से दुख होता है। सरल महासती जी का वियोग खलने लायक है। एक दिन सभी का ऐसा प्रसंग बनना है। जन्म लेने वाले की मृत्यु निश्चित है। सहवर्ती साध्वियों ने दायित्व निर्वहन किया, पुरुषार्थ किया, सेवा धर्म को अपनाया। हम भी समता समाधि से जीएँगे। क्यों हाय-हाय करना! बीकानेर वालों को उनके सान्निध्य का सौभाग्य प्राप्त हुआ।**"

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि "**गुरु सत्य का दर्शन करवाते हैं। सत्य क्या है? जो अवश्य घटित होता है। मौजूद को नकारा नहीं जा सकता। सत्य को तर्कों से खारिज नहीं किया जा सकता। सत्य की लौ कैसा भी तूफान हो, जलती रहती है। मौत नजदीक जानकर क्षणमात्र का भी प्रमाद नहीं करना चाहिए। बल आज है, वैसा कल नहीं रहेगा। ये घटनाएँ प्रेरित करती हैं। मस्तिष्क पर गहरा झटका लगता है। मस्तिष्क को जागृत करना चाहिए। मौत पर हमारी भावना कैसी हो, अवलोकन का विषय है। ये छोटी उम्र में अतिमुक्तक कुमार, एवंता कुमार के जीवन में प्रकट हो गया। मौत को निर्भय होकर देखने का प्रयास करें। कितना भी परिश्रम हो, मौत जरूर आने वाली है। अहमदाबाद हवाई जहाज दुर्घटना हमें प्रेरणा देती है कि मौत कितने करीब है। हमारे अंदर कितना बदलाव आया? नाना गुरु अंतिम छह माह में अनासक्त हो गए थे। उन्हें मृत्यु का गहरा आभास हो गया था।**

महासती श्री प्रेमलता जी म.सा. पुण्यवानी लेकर आए थे। छोटी वय 13-14 वर्ष में दीक्षा हो गई। 59 वर्ष का संयम जीवन रहा। बड़ों का आशीर्वाद बरसता रहा। वृद्धावस्था में भी बालपन जैसी क्रियाओं में समर्थ थे। स्वाध्याय आदि करते रहते। शासननिष्ठा कूट-कूटकर भरी थी। उनके भजन भी शासननिष्ठा से ओत-प्रोत थे। जाते-जाते लू ने अपनी चपेट में ले लिया। उपचार भी हुआ, लेकिन आयुष्य को मार्ग ढूँढ़ने में कठिनाई नहीं होती है। हम मौत के मुँह में जाने वाले हैं, यह याद रखें। उनके गुणों को आत्मसात् करें, तभी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।''

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संयम ही जीवन है। संसार में उलझन ही उलझन है। साध्वी श्री प्रेमलता जी म.सा. बहुत ही सरल स्वभावी थे। महाश्रमणीरत्ना श्री इंद्र कँवर जी म.सा. से अलग विचरण कभी नहीं हुआ। उनकी आत्मा जहाँ कहीं भी गई है, मोक्ष का वरण करे।

श्री रमेश मुनि जी म.सा. ने '**मौत की हवा का एक झोंका आएगा**' गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि जो जन्म लेता है, उसकी मृत्यु निश्चित है। मरने के बाद जो याद किया जाए समझो उसका जीवन सार्थक है। साध्वीश्री जी ने नाना गुरु से दीक्षा ली। महाश्रमणीरत्ना साध्वी श्री इंद्र कँवर जी म.सा. के साथ शासन की भव्य प्रभावना की। उनका नाम, उनके गुण सदैव अमर रहेंगे।

साध्वी श्री पूर्णिमा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि समाचार सुनकर वज्रपात-सा लगा। नानेश-रामेश बगिया का कुसुम खुशबू बिखेरकर चला गया। स्वाध्याय, समता, सरलता के गुणों से साध्वीवर्या का जीवन परिपूर्ण था। गुणग्राही दृष्टि, त्याग, तपमय जीवन के धनी थे। अहमदाबाद में नाना गुरु के सान्निध्य में मासखमण तप पूर्ण किया।

साध्वी श्री विभा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि सभी आत्माओं को समय के साथ जाना पड़ता है। साध्वी जी बड़े सरल, सुकोमल स्वभाव के थे। अपने आत्मीय व्यवहार की खुशबू से सभी को सुरभित कर गए। आपने त्याग-तप के साथ जिनशासन की भव्य प्रभावना की। शरीर में आधि-व्याधि होते हुए भी मन में समाधि थी।

साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा जी म.सा. ने फरमाया कि जिनशासन का अनमोल मोती चला गया। वे संयम में सजग थे। शासन पर चार चाँद लगाए। धन्य है गुरुणी जी को, जो सुंदर संस्कार दिए। आपश्री जी ने जीवन को गुणमय बना लिया।

संघ मंत्री व अल्का जी डागा ने साध्वीवर्या के दिव्यगुणों का स्मरण करते हुए इसे संघ व शासन की अपूरणीय क्षति बताया। सभा ने 4-4 लोगस्स का ध्यान कर उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की। अनेक त्याग-प्रत्याख्यान हुए। सभा में अनेक स्थानों के भाई-बहन उपस्थित थे। परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में प्रतिदिन जिज्ञासा-समाधान, आगम वाचनी एवं प्रश्नोत्तरी आदि धार्मिक कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं।

तपस्या सूची

श्रावक-श्राविका वर्ग	
आजीवन शीलव्रत	शांतिलाल जी निर्मला देवी सेवग, ताराचंद जी डोसी-जोधपुर, गुलाबचंद जी भंसाली-डौंडीलोहारा, शांतिलाल जी जेठी देवी बैद-भीनासर, विजय जी चोपड़ा, लिखमाराम जी ओड, प्रदीप जी संतोष जी डागा, सुशील जी मंजू जी बोथरा-श्रीगंगानगर
उपवास	**33 –** पिंकी जी सेठिया, **30 –** गरिमा जी सिपानी-उदयरामसर/चेन्नई, **15 –** ज्योति जी बाँठिया
सिद्धि तप	ललिता जी कोठारी

-महेश नाहटा

राम चमकते भानु समाना

विविध समाचार

✧✧✧✧✧✧✧ मेवाड़ अंचल ✧✧✧✧✧✧✧

उदयपुर। शासन दीपक श्री मनीष मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री विमला कँवर जी म.सा. आदि ठणा-12 के पावन सान्निध्य में श्री साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आठ दिवसीय मेवाड़ स्तरीय **'परिवर्धनम्'** शिविर का सफल आयोजन 8 जून से किया गया, जिसमें इस अंचल के 10 से 30 वर्ष तक के अविवाहित 275 से अधिक बालक-बालिकाओं ने आध्यात्मिक जागरण एवं संस्कारों की शिक्षा ग्रहण कर अपना जीवन उन्नयन के मार्ग पर अग्रसर किया। बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु संस्कार, व्यक्तिगत विकास, प्रभु भक्ति, जीवन विकास, ध्यान, साधना सहित अनेक गतिविधियों से ज्ञानार्जन करवाया गया। शिविर के दौरान बच्चों ने आठ दिवस मोबाइल का पूर्ण त्याग, रात्रिभोजन त्याग, प्रतिदिन 5 से 10 सामायिक, प्रतिक्रमण आराधना, कुछ बच्चों द्वारा फुटवियर त्याग व भोजन उपरांत थाली धोकर पीने आदि अनेक संकल्पों का पालन किया। शिविरार्थियों को मोक्षार्थी, दीक्षा, संयम, प्रव्रज्या, निर्ग्रंथ, श्रवण, चारित्र, अणगार आदि कक्षाओं में विभक्त किया गया। शिविर स्थल पर जैन प्रतीक-चिह्न का मॉडल प्रदर्शित किया गया। चुनिंदा 29 बच्चों को बीकानेर में गुरुदर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

शिविर समापन समारोह का आयोजन 15 जून को आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में नरेश जी सिंघवी उपस्थित थे। बहू मंडल ने मंगलाचरण एवं महिला मंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। शिविर में सेवा देने वाले सदस्यों का सम्मान कर आभार प्रकट किया गया। कुछ शिविरार्थियों ने अपने शिविर अनुभव साझा किए। शिविर में भाग लेने सभी बच्चों को सम्मानित किया गया। समता युवा संघ अध्यक्ष एवं बहू मंडल अध्यक्ष ने शिविर प्रतिवेदन व विवरण प्रस्तुत किया। संघ अध्यक्ष ने अपने उद्बोधन में कहा कि आधुनिक युग में भौतिक सुखों को त्यागकर आठ दिवस बच्चों ने शुभ भविष्य का संकेत दिया है। महिला मंडल ने आभार प्रकट किया। **मुमुक्षु विपुल जी गांधी** एवं **मुमुक्षु अदिति जी चिप्पड़** का अभिनंदन-पत्र भेंट कर सम्मान किया गया। द्वय मुमुक्षुओं ने अपने उद्बोधन में कहा कि गुरुचरणों में रहकर ज्ञानार्जन अवश्य करें। आरुग्गबोहिलाभं की शिक्षा सभी के लिए सर्वोत्तम है। कार्यक्रम में श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल, समता युवा संघ, समता बहू मंडल, उदयपुर के पदाधिकारियों व सदस्यों ने उपस्थिति दर्ज कराई। **- अल्पेश धाकड़**

✧✧✧ बीकानेर-मारवाड़ अंचल ✧✧✧

गंगाशहर-भीनासर। श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संस्थान की ओर से बांठिया पौषधशाला (जवाहर सभागार) में मुमुक्षु भाई मयंक जी सोनावत, मुमुक्षु भाई हार्दिक जी सोनावत, मुमुक्षु बहन रेखा जी सोनावत का शानदार अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में मंगलाचरण पश्चात् महिला मंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। बालिका मंडल ने सभी मंचस्थ मुमुक्षु भाई-बहन व वीर परिवारजनों का तिलक लगाकर अभिवादन

किया। अभिनदंन पत्र के वाचन पश्चात् संघ सदस्यों द्वारा गीतिका प्रस्तुत की गई। संघ अध्यक्ष ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए मुमुक्षुओं के प्रति आभार प्रकट किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने अपने भावोद्‌गार में गुरु-भगवंतों के प्रति अहोभाव प्रकट किया। मुमुक्षुओं का परिचय महेश नाहटा ने प्रस्तुत किया।

मुमुक्षु बहन रेखा जी सोनावत ने अपनी भावाभिव्यक्ति में सभी से दीक्षा के अवसर पर पधारकर आशीर्वाद प्रदान करने का निवेदन किया। मुमुक्षु भाई-बहनों का अभिनंदन-पत्र भेंट कर शानदार स्वागत किया गया। संपूर्ण सभा हर्ष-हर्ष जय-जयकार से गूँज उठी। संचालन संघ मंत्री ने किया। कार्यक्रम में संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सहित अनेक गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। वीर पिता/वीर पति विनीत जी सोनावत, परिजनों नरेंद्र जी, विकास जी, सुशीला देवी सोनावत, निर्मला जी सोनावत, प्रमिला जी सोनावत, शांतिलाल जी बैद, जेठी देवी बैद, विनोद कुमार जी सोनावत, प्रदीप जी मीतू देवी बैद, पवन जी मंजू देवी बैद आदि का स्वागत-बहुमान किया गया।

– चंचल कुमार बोथरा

नोखा। शासन दीपक श्री विनय मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री वंदना श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 पावन सान्निध्य स्थानीय श्रावक-श्राविकाओं को प्राप्त हुआ। शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलता जी म.सा. के देवलोकगमन का समाचार ज्ञात होने पर 15 जून को स्मृतिसभा के आयोजन में चारित्रात्माओं ने स्मृतिशेष महासती जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए फरमाया कि आपने आचार्य श्री नानेश-रामेश के शासन को खूब दीपाया है। लघुवय में दीक्षा लेकर शासन की अपूर्व प्रभावना की। आपश्री का जीवन गुणों से भरपूर था। अंत में सभी ने 4-4 लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धासुमन अर्पित किए। **– गंगाराम लूणावत**

✧✧✧✧ जयपुर-ब्यावर अंचल ✧✧✧✧

ब्यावर। पर्याय जयेष्ठ श्री अनंत मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-7 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री रोशन कँवर जी म.सा. आदि ठाणा-9 के पावन सान्निध्य में आठ दिवसीय आवासीय **'परिवर्धनम्'** शिविर का 7 से 14 जून तक आयोजन किया गया। शिविर में अजमेर, किशनगढ़, उखलाना, जयपुर, सवाई माधोपुर, विजयनगर, सरवाड़, पीसांगन आदि क्षेत्रों के 120 बच्चों ने उत्साह के साथ भाग लेकर जीवन को परिवर्तन की ओर अग्रसर किया।

प्रतिदिन बच्चों को शासन दीपक श्री नीरज मुनि जी म.सा. द्वारा साधु जीवन सहित जैन दर्शन के विभिन्न विषयों का ज्ञानार्जन कराया गया। श्री राजन मुनि जी म.सा. ने बच्चों को धर्म, ध्यान, दया, व्रत के साथ विभिन्न गतिविधियाँ सिखाई।

श्री श्रुतप्रभ मुनि जी म.सा. ने एक्स्ट्रा सब्जेक्ट, श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने आठ विषयों, साध्वी श्री प्रियता श्री जी म.सा., साध्वी श्री प्रखर श्री जी म.सा. ने बारह भावना, साध्वी श्री रामत्रया श्री जी म.सा. ने पाँच गति पाँच महाव्रत व साध्वी श्री रामचर्या श्री जी म.सा. ने धर्म-ध्यान सिखाया।

समापन समारोह का आयोजन 15 जून को किया गया। मंगलाचरण व स्वागत गीत पश्चात् उखलाना से पधारे शिक्षक राकेश जी ने शिविर को ऐतिहासिक बताया। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ने भजन के माध्यम से शिविर की विशेषताएँ बताई व शिविरार्थियों को संघ समर्पणा में आगे बढ़ने का आह्वान किया। स्थानीय संघ उपाध्यक्ष एवं महामंत्री ने सभी का आभार व्यक्त किया। शिविर में अध्यापन सेवाएँ देने वाले माया जैन, स्नेहलता श्रीश्रीमाल, विमलेश जी ओस्तवाल, रौनक जी बोहरा, अंजू जी हिंगड़, सिंपल जी श्रीश्रीमाल, प्रतीक्षा जी मेहता, वंदना जी आदि का माला व प्रशंसा-पत्र देकर सम्मान किया गया। शिविर में सेवाएँ देने वाले कार्यकर्ताओं का माला व शॉल से बहुमान किया गया। शिविर संयोजिका ने कहा कि इस

अष्ट दिवसीय शिविर में प्रत्येक दिन बच्चों को विभिन्न प्रतियोगिताएँ करवाई गई व विजेताओं को पारितोषिक प्रदान किया गया। बच्चों ने शिविर अनुभव साझा किए। सभी शिविरार्थियों को सांत्वना पुरस्कार दिया गया।

इस अवसर पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, स्थानीय संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष, महामंत्री, पूर्व अध्यक्ष, शिविर संयोजिका सहित अनेक गणमान्यजनों व संघ सदस्यों की उपस्थिति रही। **- नोरतमल बाबेल**

कोटा। श्री साधुमार्गी जैन समिति का द्विवार्षिक मनोनयन सर्वानुमति ने 01 जून को निम्न प्रकार से संपन्न हुआ- अध्यक्ष सरदारमल जी कांकरिया, उपाध्यक्ष अरविंद जी जैन (पोरवाल), महामंत्री आसकरण जी बोहरा, कोषाध्यक्ष रतनलाल जी बाँठिया, सहमंत्री मनोज कुमार जी कांकरिया एवं 7 कार्यकारिणी सदस्य। नवमनोनीत अध्यक्ष की अध्यक्षता में 7 जून को समता भवन में मूक जीवों के लिए प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया, जिसमें 30 मिनट नवकार मंत्र जाप व चार लोगस्स के ध्यान के साथ आज ईद पर मारे गए तिर्यंच जीवों के लिए प्रार्थना की गई। अनेक गणमान्यजनों ने विचार व्यक्त करते हुए अपनी संवेदनाओं में कहा कि मांसाहार का सेवन बढ़ता जा रहा है। जीवों की रक्षा हेतु समाज में जागरूकता लानी चाहिए एवं सरकार का इस ओर ध्यान दिलाना चाहिए। **- हनुमान दुगड़**

✧✧✧ छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल ✧✧✧

धर्म साधना हेतु समदड़िया परिवार द्वारा भूमि समर्पित

खिरकिया। बहुत ही सादगीपूर्ण कार्यक्रम में 13 मई को आशीष समदड़िया की सुपुत्री ऋषिका के विवाहोपलक्ष्य में कुमकुम समारोह के पश्चात् धर्म साधना हेतु भूमि लोकार्पण समारोह कार्यक्रम संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, अंचल राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, संघ गौरव महेश जी नाहटा, संघ शिखर सदस्यगण,

नर्मदापुरम् के सांसद दर्शनसिंह जी चौधरी, म.प्र. सरकार के पूर्व मंत्री कमल जी पटेल, क्षेत्रीय विधायक आर.के. दोगने, नगर परिषद अध्यक्ष इंदरजीत जी कौर, जनपद पंचायत अध्यक्ष राजू जी पटेल, मोहन बाबा सिंगाजी, भाजपा जिलाध्यक्ष राजेश जी वर्मा, अखिल भारतीय जैन पत्रकार संघ जिलाध्यक्ष सुनील जी जैन सहित समदड़िया परिवार के गणमान्यजनों की गरिमामय उपस्थिति में संपन्न हुआ। कमलचंद समदड़िया, श्रीमती सुषमा समदड़िया, विमल समदड़िया, आशीष समदड़िया, रत्ना समदड़िया आदि ने अतिथियों का स्वागत किया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए नर्मदापुरम् के सांसद दर्शनसिंह जी चौधरी ने कहा कि जैन समाज जीओ और जीने दो के सिद्धांत का जिस प्रतिबद्धता से पालन करता है वह अनुकरणीय है। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, अनेकांतवाद और स्याद्वाद जैसे जीवन के मूल सिद्धांतों के साथ जीवन जीने की प्रेरणा हमें भगवान महावीर स्वामी सहित 24 तीर्थंकरों से प्राप्त होती है। जैन धर्म हमें अनुशासित रहकर सेवा करने की सीख देता है।

मप्र सरकार के पूर्व मंत्री कमल जी पटेल ने कहा कि अपने लिए तो पशु-पक्षी भी जीते हैं, लेकिन जो औरों के लिए जीता है उसका जीवन सार्थक होता है। 84 लाख योनियों में भ्रमण करने के बाद मनुष्य योनि में जन्म मिलता है। इसलिए जीवन को सफल बनाने की बजाय सार्थक बनाना चाहिए।

क्षेत्रीय विधायक डॉ. आर.के. दोगने ने कहा कि समदड़िया परिवार के गौरव संत श्री मधुर मुनि जी म.सा.

केवल समदड़िया परिवार के ही नहीं संपूर्ण देश के गौरव हैं।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने सेवा को सर्वोपरि बताते हुए इसे जीवन का अभिन्न अंग बनाने की प्रेरणा दी। समदड़िया परिवार ने संघ के राष्ट्रीय पदाधिकारियों को दान की गई भूमि की रजिस्ट्री सौंपकर अपने उच्च पारिवारिक गौरव का परिचय दिया। आभार ज्ञापन वीर भ्राता आशीष समदड़िया ने किया। इस अवसर पर आयोजित स्वामी वात्सल्य में धोवन पानी उपयोग की व्यवस्था की गई। साथ ही व्यसनमुक्ति प्रदर्शनी के माध्यम से व्यसनमुक्ति संदेश की प्रभावना की गई। अमानक डिस्पोजल का उपयोग नहीं किया गया। **- आशीष समदड़िया**

जगदलपुर। शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में श्री साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आठ दिवसीय **'परिवर्धनम्'** शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल के अनेक स्थानों के बच्चों ने भाग लेकर ज्ञानार्जन किया। शिविर में बच्चों ने तपस्याओं की झड़ी लगा दी। नमन जी गोलछा ने अठाई के साथ कक्षा में उपस्थित होकर अपूर्व आत्मबल का परिचय दिया। अनुशासन के लिए इन्हें सर्वश्रेष्ठ छात्र का सम्मान प्रदान किया गया। इसी क्रम में दो बच्चों ने चौला, पाँच बच्चों ने तेला, 8 बच्चों ने बेला, 55 बच्चों ने तप दिवस पर उपवास एवं 70 बच्चों ने एकासना व बियासना आदि तप किए। वरीयता सूची में स्थान प्राप्त करने वाले 10 बच्चों को विशेष रूप से पुरस्कृत किया गया। शिविरार्थियों ने गली-मोहल्लों में घूमकर व्यसनमुक्ति का संदेश दिया। बहुत से बच्चों ने **'अनुत्तरम्'** शिविर हेतु रजिस्ट्रेशन कराया। शिविर को सफल बनाने में सभी का पूर्ण सहयोग रहा। **- प्रिंस जैन**

बंगाल, बिहार, नेपाल, भूटान, झारखंड, आंशिक ओड़िशा अंचल

कोलकाता। समता भवन में 4 मई को **नॉ एंड ग्रो** कार्निवल का आयोजन **नॉ एंड ग्रो** कोलकाता की टीम द्वारा किया गया, जिसमें लगभग 170 बच्चों ने भाग लिया। कार्यक्रम में जैन धर्म के विभिन्न विषयों पर आधारित आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भरपूर **'मिशन मंगलम्, फेम बनाम फेथ, पापों को दूर भगाओ अपनी राह आसान बनाओ'** आदि दस ज्ञानार्जन धार्मिक स्टॉल लगाए गए। बच्चे-बड़े सभी उत्साह से भरपूर नजर आए। डीआईवाइ एक्टिविटीज, जीवदया के साथ टैटू कॉर्नर, मैमरी कॉर्नर एवं अभिभावकों के लिए शानदार चुनौतियों से इस कार्निवल ने संस्कृति, ज्ञान और आनंद का एक अद्वितीय संगम प्रस्तुत किया। **- चेतना भंडारी**

विविध भेंट मार्फत

31 मार्च 2025 की शेष भेंट

संघ सदस्यों द्वारा समय-समय पर संघ की विभिन्न गतिविधियों में आर्थिक सहयोग हेतु भेंट राशि प्रदान की जाती है, ताकि विभिन्न गतिविधियाँ, प्रवृत्तियाँ निर्विघ्न गतिमान रहें। इसी कड़ी में विभिन्न प्रवृत्तियों में उदार महानुभावों के सौजन्य से प्राप्त भेंट का उल्लेख आपके समक्ष है -

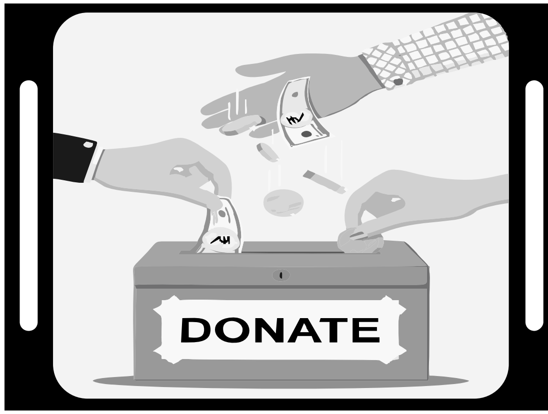

दानपेटी योजना

1,080/- धनपत जी नाहर, भीलवाड़ा
1,080/- चेतन जी हिंगड़, ब्यावर
1,050/- राजेश जी मयंक जी बरड़िया, रायपुर
1,050/- अरविंद जी मूथा, ब्यावर
1,041/- जितेंद्र जी सुभाष जी ओस्तवाल, मोरतलाई
1,030/- देवीलाल जी रांका, ब्यावर
1,015/- चंदा जी कोठारी, उज्जैन
1,013/- हस्तीमल जी दुग्गड़, पाली
1,011/- लाभचंद जी नितेश जी बाफना, अहिवारा
1,008/- शोकिनलाल जी मुणोत, नीमच
1,007/- राकेश जी काँठेड़, उज्जैन
1,001/- रंजना जी उमेश जी मेहता, सूरत

1,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- मांगीलाल जी संजय जी संखलेचा, खरियार रोड, दीप जी ढोलकिया, खरियार रोड, पारस जी ओस्तवाल, ब्यावर, उत्तमचंद जी चौधरी, ब्यावर, मदन कँवर जी बाफना, हरदा, जितेंद्र जी टाटिया, अर्जुनी, राजकुमार जी जैन, धमधा, राजेश जी भैरुलाल जी जारोली, पलसाना, रानीदान जी ललित जी चोपड़ा, अटरिया, रतनलाल जी कोठारी, डौंडी, ज्ञानचंद जी नाहटा, अर्जुंदा, संजय जी मिथुन जी सांखला, साजा, संजय जी बाफना, बॉम्बे मार्केट, संदेश जी बैद, जोधपुर, स्नेहा एंटरप्राइजेज, लुधियाना, उत्तमचंद जी नाहर, अहमदाबाद, अमन जी मनन जी बरड़िया, महासमुंद, आदेश जी जैन, मुंबई, **सूरत से-** धीरज जी हनुमानमल जी सामसुखा, प्रभावती जी सोहनलाल जी बोथरा, प्रवीण जी शिवराज जी बच्छावत, मंजू जी सुभाष जी बोथरा, महावीर जी शांतिलाल जी गोखरू, मोक्षार्थ जी शुभम् जी सरूपरिया, मनोज जी कुशल जी डूंगरवाल, पंकज जी विमल जी लूणिया, पुष्पा जी सोमप्रकाश जी नाहटा, राकेश जी मदन सिंह जी डांगी, रोशनलाल जी मांगीलाल जी भंडारी, राजकुमार जी त्रिलोकचंद जी सेठिया, राजकमल जी संपतराज जी श्रीश्रीमाल, रजनी जी मनीष जी सुराणा, शेखरचंद जी पूनमचंद जी बोथरा, संदीप जी सोहनलाल जी करणपुरिया, संजू जी गणेश जी सांड, सुधीर जी सुंदरलाल जी सुराणा, सुनील जी समीरमल जी मूणत, ऊषा देवी अजीत जी कांकरिया, दीपक जी गौतमचंद जी बैद, वीणा जी आलोक जी बाँठिया, वैभव जी मनोज जी बैद, नाथूलाल जी मोगरा, अनिल जी शांतिलाल जी मूथा, आशीष जी प्रकाशचंद जी ललवानी, अशोक जी हस्तीमल जी देसरला, गुंजन जी सुदीप जी पटवा, पवन जी बाबूलाल जी देसरला, **पाली से-** इंद्रचंद जी अमित जी अजीत जी बाँठिया, प्रकाश जी तरुण जी अभिषेक जी डूंगरवाल, प्रेमचंद जी अर्पित जी ढेढ़िया, रमेश जी अंकुर जी अर्पित जी लसोड़, प्रदीप जी अंकित जी शुभम जी श्रीश्रीमाल, उर्मिला जी मेड़तवाल, **कवर्धा से-** ईश्वरचंद

जी आदर्श जी छतिलाल जी मांगीलाल जी, बसंत जी विकास जी चोरड़िया, बसंत जी विजय जी चोरड़िया, महेंद्र जी ऋषभ जी कोटड़िया, दिनेशचंद जी अक्षय जी छातीमल जी मांगीलाल जी, विनोद जी विनय जी श्रीश्रीमाल, निर्मलचंद जी नितिन जी मांगीलाल जी, निर्मलचंद जी पदम जी श्रीश्रीमाल, हुक्मीचंद जी अजय जी पारख, हुक्मीचंद जी प्रणय जी पारख, हुक्मीचंद जी प्रशांत जी पारख, रतनलाल जी मनीष जी पारख, ज्ञानचंद जी यश जी मांगीलाल जी श्रीश्रीमाल, सतीश जी प्रांजल जी श्रीश्रीमाल, नेमीचंद जी पंकज जी श्रीश्रीमाल, अनिल जी मुकुंद जी श्रीश्रीमाल, टोडरमल जी राजेंद्र जी सांखला, अतुल जी अमित जी देशलाल जी निर्मलचंद जी देसरला, गुलाबचंद जी आकाश जी मांगीलाल जी श्रीश्रीमाल, **गंगापुर से-** प्रकाशचंद जी देसरड़ा, कुंदन जी देसरड़ा, कैलाशचंद जी कोठारी, मदनलाल जी सिंघवी, मिश्रीलाल जी जैन, विनोद जी पिछोलिया, विनोद जी देसरड़ा, भगवतीलाल जी पिछोलिया, सुरेश जी मोगरा, सुंदरलाल जी सिंघवी, **नीमच से-** प्रकाशचंद्र जी जितेंद्र जी छिंगावत, कन्हैयालाल जी आशीष जी काँठेड़, पारसमल जी डांगी, शेखर जी बंब, सुरेशचंद्र जी गांग, नवीन जी आनंदीलाल जी काँठेड़, अमृतलाल जी जुबिन जी मूणत, **बिरमावल से-** प्रदीप जी श्रेणिक जी पीपाड़ा, मनोज जी पारसमल जी पीपाड़ा, दिलीप जी अजीत जी सोनी, राहुल जी श्रेणिकराज जी शीर्ष श्रीश्रीमाल, **राजनांदगाँव से-** भागचंद जी राजेश जी चोरड़िया, राजा जी मोहन जी ओस्तवाल, अनिल जी ओस्तवाल, **रायपुर से-** मोहनलाल जी किशन जी गोलछा, राजेश जी बोथरा, सुरेश जी जयंत जी बाफना, अतुल जी चोपड़ा, स्नेहा जी धारीवाल, जय जी विजय जी सांखला, **अमरोली से-** शांतिलाल जी बदरमल जी कोठारी, सुनील जी गहरीलाल जी मांडोत, नरेंद्र जी शांतिलाल जी कोठारी

970/- रोशन जी ढेलड़िया, डौंडी
953/- प्रदीप जी सांखला, रायपुर
950/- विनोद जी रांका, ब्यावर
934/- समता भवन, पाली (बच्चों द्वारा संग्रहित)
924/- अभय जी तुषार जी देशलहरा, रायपुर
917/- अर्जुन जी तोलाराम जी सुराणा, सूरत
904/- अशोक जी बाबूलाल जी पोखरना, सूरत
901/- विकास जी रतनलाल जी सुराणा, सूरत
901/- सागर जी विनीता जी बंबकी, इंदौर

900 का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- प्रवीण जी प्रफुल्ल जी जैन, भाटापारा, मोहनलाल जी संजय जी गुणधर, दल्लीराजहरा, राजेंद्र जी अरिहंत जी जैन, रायपुर, सुंदरलाल जी हीरालाल जी लूणावत, सूरत, अखिल जी सूर्या, उज्जैन, अशोक जी चंडालिया, भीलवाड़ा

880/- विजय जी ओस्तवाल, ब्यावर
865/- अशोक जी भूरा, धमतरी
850/- महेंद्र जी गुलाबचंद जी पोखरना, सूरत
832/- मूलचंद जी पूनमचंद जी सुराणा, सूरत
810/- हस्तीमल जी बुरड़, धमतरी
800/- दिलीप जी डांगी, ब्यावर,
800/- दिलपेश जी पारसमल जी बडोला, सूरत
800/- संगीता जी सुराणा, इंदौर
800/- अनिल जी सहलोत, भीलवाड़ा
780/- मुकेश जी बाबेल, ब्यावर
770/- विजय जी शेखरचंद जी सांड, सूरत

751/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- धनराज जी लोढ़ा, बेरला, प्रेमचंद जी छाजेड़, कुसुमकसा, कंवरलाल जी कुचेरिया, कुसुमकसा, विजय जी अतुल जी आकाश जी पारख, भिलाई, विनय जी विपिन जी काँठेड़, नीमच, निर्मल जी केशरीचंद जी बरड़िया, सूरत, पन्नालाल जी अशोक जी कोटड़िया, राजनांदगाँव, अमित जी छाजेड़, कुम्हारी

750/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- बालचंद जी पारख, राजनांदगाँव, कमलेश जी गुणधर, डौंडी, कोमल जी दीपक जी सुराणा, सूरत, हितेश जी विद्या जी भवर जी सिपाणी, सूरत, दिलीप जी सांखला, जगदलपुर, विकास जी गुणधर, दल्लीराजहरा, नीलेश जी प्रकाशचंद जी ललवानी, सूरत, गेंदमल जी बुरड़, डौंडी

740/- सोहनलाल जी रांका, ब्यावर
730/- सुरेंद्र जी जयचंद जी लोढ़ा, सूरत

725/– कमल जी रायसोनी, नगरी
721/– ज्ञानचंद जी पारख, राजनांदगाँव
711/– प्रकाश भीखमचंद जी पींचा, सूरत,
711/– कानमल जी पारख, राजनांदगाँव
711/– लक्ष्मीलाल जी हस्तीमल जी देरासरिया, सूरत
705/– मनोज जी हीरालाल जी बेगानी, सूरत

701/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– शांतिलाल जी बच्छावत, सूरत, सुमन जी नारायण जी सेठिया, सूरत, सुशील जी बाबूलाल जी संचेती, सूरत, प्रमोद जी प्रणय जी जैन, बेरला, महावीर जी हर्ष जी सांखला, बागबहारा, महेंद्र जी टाटिया, अर्जुनी, मांगीलाल जी राजेंद्र जी लोढ़ा, राजनांदगाँव, सुनील जी संजय जी गोलछा, देवरी, दूलीचंद जी टाटिया, अर्जुनी, देवराज जी सुराना, राजनांदगाँव, अर्जुन जी खिमेसरा, अमरोली

700/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– इंद्रचंद जी बच्छावत, दिल्ली, कमलचंद जी डागा, दिल्ली, कंवरलाल जी सेठिया, लूणकरणसर, जितेंद्र जी संपतलाल जी सेठिया, लूणकरणसर, शिखरचंद जी छाजेड़, नगरी, जीवनलाल जी नाहटा, नगरी, जीवराज जी वीरेंद्र जी खिंवेसरा, पाली, आदर्श जी रामकुमार जी टाटिया, भाटापारा, ललित जी सौरभ जी, भाटापारा, प्रकाशचंद जी सिंघवी, वलसाड, कमलेश जी नाहर, चारामा, मनीष जी गौरव जी श्रीश्रीमाल, कवर्धा, विनोद जी बाफना, जगदलपुर, निर्मलचंद जी बछराज जी कांकरिया, बेगमपुरा, हेमंत जी सांखला, बागबहारा, राकेश जी टाटिया, अर्जुनी, राजेश जी सिंघी, अंबागढ़ चौकी, रतनलाल जी शीतल जी पारख, दल्लीराजहरा, सुरेश जी जैन, सिमगा, छाया जी बनवट, हरदा, ज्योति जी चंडालिया, उज्जैन, जीतमल जी लोढ़ा, डौंडीलोहारा, नवीनचंद जी भंडारी, इंदौर, आसकरण जी धीरज जी बोथरा, हिंदमोटर, जीवराज जी वीरेंद्र जी खिंवेसरा, पाली, **सूरत से–** प्रकाशचंद जी रोशनलाल जी कोठारी, प्रभा जी सुंदरलाल जी सेठिया, प्रवीण जी बाबूलाल जी पोखरना, मुकेश जी लक्ष्मीलाल जी देरासरिया, मुकेश जी चांदमल जी कोठारी, रमेशचंद्र जी शंकरलाल जी कोठारी, रचित जी रणजीत जी सिपाणी, श्रीचंद जी चतुर्भुज जी बैद, राजेंद्र जी मूलचंद जी सुराणा, शांतिचंद जी तोलाराम जी डोसी, संजय जी गौरीशंकर जी चोरड़िया, सुरेश जी बरदीचंद जी सुराणा, नरेंद्र जी सोहनलाल जी हड़पावत, गुप्तदान, **कानोड़ से-** करणमल जी मुर्ड़िया, कोमल जी गादिया, महावीर जी मेहता, पूनमचंद जी जारोली, तेज सिंह जी पितलिया, नक्षत्रमल जी जैन, अशोक जी कोठारी, **छुईखदान से-** धनराज जी पारख, शांतिलाल जी पारख, शुभमचंद जी सांखला, संतोषचंद जी कोचर, संतोषचंद जी पारख, **रायपुर से-** शिखरचंद जी गोलछा, सुमेरमल जी विभेद जी पारख, राजेंद्र जी अभय जी खटोड़, आरती जी धवल जी गादिया, **ब्यावर से-** प्रकाशचंद जी मूथा, त्रिलोक जी बाबेल, उत्तमचंद जी लोढ़ा, **अर्जुंदा से-** सचिन जी आशीष जी बाफना, नमन जी गौरव जी बाफना, अनूपचंद जी सिसोदिया, **राजनांदगाँव से-** ललित जी चोरड़िया, रूपम कटपीस, मनीष जी गोलछा

692/– कमलचंद जी बोहरा, बेमेतरा
671/– अशोक कुमार जी ओस्तवाल, भाटापारा
670/– कमलेश जी रमन जी छाजेड़, साजा
651/– प्रमोद जी शिवराज जी बच्छावत, सूरत
650/– प्रदीप जी बुरड़, महासमुंद
650/– संजय जी शांतिलाल जी चावत, सूरत
635/– प्रकाशचंद जी लोढ़ा, बेमेतरा
630/– विवेक जी कमलेश जी गादिया, रायपुर
630/– अशोक जी चोपड़ा, मोरतलाई
630/– गुप्तदान
625/– ज्ञानचंद जी कोठारी, ब्यावर
613/– अभिषेक जी बाफना, महासमुंद
611/– अमृतलाल जी उत्तमचंद जी बेगानी, सूरत
609/– सरदारमल जी प्रदीप जी गांधी, धमतरी
601/– अनिल जी राजमल जी बोड़ावत, नीमच

600/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– धर्मीचंद जी ओस्तवाल, ब्यावर, अशोक जी बोरूंदिया, ब्यावर, शांतिलाल जी मनोज जी कुमठ, संबलपुर, खूबचंद जी

जीवन जी बुरड़, संबलपुर, रूपेश जी कोठारी, डौंडी, पूनमचंद जी ओस्तवाल, भाटापारा, मोलकचंद जी धनेंद्र जी जैन, नुआपाड़ा, राकेश जी पावेचा, उज्जैन, सरदार सिंह जी सुरेंद्र सिंह जी राठौड़, नीमच, उमेश जी आकांश जी बाफना, धमतरी, नंदकिशोर जी चोपड़ा, मोरतलाई, अर्चना जी बाफना, हरदा, गौतमचंद जी चोपड़ा, नगरी, ललित जी बुरड़, संबलपुर, **बालाघाट से-** प्रकाश जी चोरड़िया, कांतिलाल जी कांकरिया, विशाल जी चोरड़िया, विजयराज जी भादानी, जितेंद्र जी चोरड़िया, राजेंद्र जी चोरड़िया, श्रेयांश जी चोरड़िया, **सूरत से-** श्रीपाल जी किरणचंद जी तातेड़, राजकरण जी झंवरलाल जी बैद, नाथी देवी पूनमचंद जी बोथरा

579/- राजेश जी खींचा, ब्यावर

575/- अनिल जी किशनलाल जी चोपड़ा, मोरतलाई

568/- अनीता जी जैन, जैन

565/- धनराज जी पींचा, महासमुंद

565/- सोहनलाल जी संचेती, मोरतलाई

555/- योगेश जी अमित जी जैन, सिमगा

555/- ताड़केश्वर जी बोथरा, अहमदाबाद

555/- गौतम जी विजयचंद जी सुराणा, सूरत

551/- प्रमोद जी सेठिया, सांखला, अर्जुनी

551/- हंसा जी पारख, इंदौर

551/- गुलाबी बाई दुग्गड़, सिमगा

550/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- विनोद जी मांगीलाल जी कुदाल, सूरत, नवरतन जी लूणकरण जी लालाणी, सूरत, मुन्नालाल जी लसोड़, भीलवाड़ा, अशोक जी लसोड़, भीलवाड़ा, शांतिलाल जी मूथा, ब्यावर, ओमप्रकाश जी नाहटा, ब्यावर, सुरेश जी संदीप जी दुग्गड़, पाली

540/- अनिल जी डोसी, सरोना

531/- राजेंद्र जी कन्हैयालाल जी हड़पावत, सूरत,

531/- ज्ञानचंद जी दिलीप जी सांखला, राजनांदगाँव

531/- शरद जी जैन, राजनांदगाँव

527/- राकेश जी नानालाल जी देरासरिया, सूरत,

525/- ओमचंद जी संखलेचा, डौंडी

522/- दिनेश जी सुराणा, कुम्हारी

521/- अजय जी तोलाराम जी सेठिया, सूरत,

520/- महेंद्र सिंह जी डूंगरवाल, भीलवाड़ा

520/- उत्तमचंद जी डोसी, सरोना

512/- सुमित जी श्रीश्रीमाल, ब्यावर

511/- महेंद्र जी ऋषभ जी कवाड़, राजनांदगाँव

511/- सुरेंद्र जी करणीदान जी भूरा, सूरत,

511/- गंभीरमल जी सेठिया, राजनांदगाँव

511/- गुजराती मिष्ठान भंडार, बेमेतरा

510/- सुरेश जी नानालाल जी नागौरी, सूरत,

505/- अतुल भाई संदीप जी ढोलकिया, खरियार रोड

502/- विकास जी अग्रवाल, नुआपाड़ा

501/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- मूलचंद जी मनोज जी जैन, बेरला, संजय जी तेजश जी जैन, बेरला, पन्नालाल जी लोढ़ा, रायपुर, कस्तूरीचंद जी सांखला, रायपुर, ऋषभ जी सांखला, बागबहारा, झूमरलाल जी नाहटा, अटरिया, प्रकाशचंद जी पीपाड़ा, नीमच, कमल जी सोनी, इंदौर, मुकेश जी सुराणा, मोवा, मनोहरमल जी जयंत जी पींचा, महासमुंद, मनोज जी छाजेड़, नगरी, विमल जी मीठालाल जी मेहता, पांडेसरा, हुकुमचंद जी टाटिया, अर्जुनी, हुलासमल जी फूसराज जी लूणिया, सूरत, गिरीश जी जैन, नुआपाड़ा, राजकुमार जी बुरड़, भिलाई, सुभाषचंद जी संचेती, नर्मदा, **सूरत से-** रूपेश जी शायरचंद जी पारख, बाबूलाल जी छगनलाल जी सिपाणी, मयंक जी झंवरलाल जी बैद, मनोज जी प्रकाशचंद जी देरासरिया, मनोज जी पारसमल जी पींचा, हीराचंद जी भंसाली, पंकज जी रोशनलाल जी मारू, पुनीत जी लालचंद जी सिंघी, राजकुमार जी शांतिलाल जी डागा, सुरेंद्र जी चोरड़िया, उत्तमचंद जी वल्लभचंद जी भटेवरा, जितेंद्र जी राजेंद्र जी बुच्चा, अमृत जी केवलचंद जी चोपड़ा, अनिल जी आसकरण जी गोलेछा, आर्यन जी शांतिलाल जी बच्छावत, लता देवी देवीलाल जी बाबेल, **इच्छापुर से-** मनोज जी माणकचंद जी बाफना, विजय जी चंपालाल जी घीया, रवींद्र जी नेमीचंद जी बाफना, संदीप जी शांतिलाल जी टुकलिया, संगीता जी राजेंद्र जी चोरड़िया, सुभाषचंद जी

जवरीलाल जी ललवानी, सुशील जी शांतिलाल जी चोरड़िया, अनिल जी तेजमल जी नाहटा, अभय जी तेजमल जी नाहटा, अशोक जी माणकचंद जी बाफना, अशोक जी उत्तमचंद जी चोरड़िया, लोकेश जी अशोक जी छिया, **राजनांदगाँव से-** प्रवीण जी चोरड़िया, केतन जी पारख, मदनचंद जी गिरीश जी गोलछा, पंकज जी श्रीश्रीमाल, राजेश जी सिद्धार्थ जी गोलछा, जीवन जी गिड़िया, नथमल जी नवीन कोटड़िया, अशोकचंद जी अंकेश जी बाफना, **दल्लीराजहरा से-** नथमल जी दिनेश जी कवाड़, अरविंद जी सजल जी गुणधर, आकाश जी अंकुश जी गुणधर, **गंडई से-** विजय जी मयंक जी जैन, उमेश जी छाजेड़, गौतम जी गोलछा,

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- धर्मचंद जी टाटिया, अर्जुनी, प्रमोद जी टाटिया, अर्जुनी, केशरीचंद जी डोसी, सरोना, राजेश जी नीलेश जी गोलछा, सरोना, महेश जी कवाड़, कांटाबांजी, मनीष जी पारख, कांटाबांजी, दिलीप जी छाजेड़, सिमगा, वीरेंद्र जी छाजेड़, सिमगा, नरेंद्र जी ओस्तवाल, कुरुद, राकेश जी ओस्तवाल, कुरुद, ज्ञानचंद जी पिंकेश जी रायसोनी, अहिवारा, डालचंद जी दिव्यांशु जी रायसोनी, अहिवारा, सोनम देवी सुमित जी बोथरा, लूणकरणसर, अजय जी सेनकरण जी राखेचा, लूणकरणसर, अशोक जी कांकरिया, केशकाल, गौतमचंद जी चरणजीव जी चोपड़ा, केशकाल, ख्यालीलाल जी मनोहरलाल जी पिछोलिया, पांडेसरा, प्रकाशचंद जी पीयूष जी गुणधर, दल्लीराजहरा, प्रीति जी सोनावत, बर्दवान, बाबूलाल जी सेठिया, भिलाई, प्रेमराज जी लक्ष्मीलाल जी सांखला, जगदलपुर, माणकचंद जी छाजेड़, मोहनलाल जी तलेसरा, पाली, मनसुख जी भूरट, केशकाल, प्रियंका जी राजेश जी कोठारी, उज्जैन, दिनेश जी हर्षद जी जैन, बेरला, विजयराज जी जैन, पांचूड़ी, पंकज जी बाघमार, मोवा, पुष्पा जी राखेचा, संबक, राजेंद्र जी मनीष जी पारख, पंडरिया, राजेंद्र जी नाहर, चारामा, सुरेश जी बुरड़, जोधपुर, अंकुश जी अर्पित जी सेठिया, अमित जी सेठिया, भिलाई, अनिल जी लादूराम जी खींचा, रांदेर, टीकमचंद जी गांधी, कांकेर, अरविंद जी पोखरना, जयपुर, अरविंद जी झामड़, भीलवाड़ा, गणपतलाल जी नंदावत, इच्छापुर, **सूरत से-** धर्मेंद्र सिंह करणीदान सिंह जी बैद, धर्मचंद जी ईश्वरचंद जी भूरा, धर्मचंद जी जेठमल जी लूणावत, धनपत जी हनुमानमल जी आंचलिया, श्याम जी नथमल जी सिपानी, झंवरलाल जी नितिन जी मनीष जी सुराणा, प्रकाश जी मीठालाल जी श्रीमाल, प्रकाश जी त्रिलोक जी सेठिया, प्रकाशचंद जी कंवरलाल जी लोढ़ा, प्रकाशचंद जी पिछोलिया, प्रदीप जी गुलाबचंद जी बोहरा, प्रवीण जी पारसमल जी पींचा, प्रवीण जी उत्तमचंद जी सेठिया, प्रवीण जी गोलचंद जी सुराणा, प्रेमचंद जी विजयचंद जी पारख, कंचन देवी मोतीलाल जी कोठारी, कमल जी पूनमचंद जी रामपुरिया, कमलेश जी बोथमल जी नंदावत, कमलेश जी शंकरलाल जी कोठारी, करणीदान जी चंपालाल जी भूरा, कुंदनलाल जी लूणावत, महावीर जी फतेहचंद जी खजांची, महेंद्र जी कन्हैयालाल जी कांकरिया, महेंद्र जी भंवरलाल जी सूर्या, महेंद्र जी बछराज जी भूरा, मीना जी नितेश जी चोरड़िया, मोहनलाल जी हीरालाल जी चोरड़िया, मुकेश जी भंवरलाल जी देरासरिया, मुकेश जी राजेंद्र जी बुच्चा, मेहुल जी राजेश जी संचेती, मनीष जी बच्छराज जी भूरा, मनीष जी भंवरलाल जी डागा, मनोहरलाल जी रतनलाल जी देसरला, मनोज जी कन्हैयालाल जी कांकरिया, मनोज जी कन्हैयालाल जी राखेचा, मनोज जी मेघराज जी सेठिया, मनोज जी निर्मल जी बैद, मनोज जी गुलाबचंद जी सुराणा, मूलचंद भंवरलाल जी पितलिया, मूलचंद जी पूनमचंद जी बरड़िया, मूलचंद जी चुन्नीलाल जी सांखला, हितेश जी शांतिलाल जी बच्छावत, शिखरचंद जी लक्ष्मीलाल जी भूरा, दिलीप जी पाबूदान जी लूणावत, दिल्पेश जी पारसमल जी बडोला, विमलेश जी घीसूमल जी तातेड़, विनोद जी श्रीचंद जी बोथरा, विनोद जी सुजानमल जी चावत, निर्मल जी विद्याजी भवर जी सिपानी, निर्मल जी शुभकरण जी दफ्तरी, हीरालाल जी महेंद्र जी कोठारी,

हीरालाल जी गणेशमल जी पिछोलिया, हेमंत जी कन्हैयालाल जी हड़पावत, हेमंत जी कन्हैयालाल जी डागा, हनुमानमल जी मेघराज जी लालानी, हनुमानमल जी चतुर्भुज जी बैद, भंवरलाल जी पाबूदान जी लूणावत, भोजराज जी किशनलाल जी बरड़िया, भूपेश जी रामलाल जी सामसुखा, पंकज जी प्रेमचंद जी गांधी, परेश जी हेमराज जी आंचलिया, पवन जी ख्यालीलाल जी दक, पवन जी लालचंद जी मरोठी, पुखराज जी मुन्नालाल जी बुच्चा, श्रीपाल जी पारसमल जी ललवानी, राकेश जी रतनलाल जी श्रीश्रीमाल, राकेश जी गौतमचंद जी दुग्गड़, रोहित जी शांतिलाल जी सेठिया, रोशनलाल जी हस्तीमल जी देरासरिया, रोशनलाल जी कोठारी, राजकुमार जी भंवरलाल जी मरोठी, राजकुमार जी सुंदरलाल जी सिंघवी, राजेंद्र जी चंदनमल जी मारू, राजेंद्र जी जयचंद जी दुग्गड़, राजेंद्र जी ओमप्रकाश जी सुराणा, राजेश जी यशराज जी भूरा, रतनलाल जी छगनमल जी मिन्नी, शंकरलाल जी रंगलाल जी नंगावत, शांतिलाल जी रोशनलाल जी कोठारी, शैलेंद्र जी सज्जनराज जी कांकरिया, संतोष जी मीठालाल जी श्रीमाल, संजय जी कन्हैयालाल जी कांकरिया, संजय जी छीतरमल जी कोठारी, संपतलाल जी शोभालाल जी देसरला, सचिन जी पदम सिंह जी बैदमेहता, सागरमल जी पारसमल जी बाघमार, सागरमल जी कन्हैयालाल जी भूरा, सुधा जी विजयचंद जी सुराणा, सुखलाल जी हस्तीमल जी देरासरिया, सुंदर देवी इंद्रचंद जी कांकरिया, सुंदरलाल जी मेघराज जी लूणावत, सुमित जी केवलचंद जी बच्छावत, सुरेंद्र जी कन्हैयालाल जी कांकरिया, सुरेंद्र जी माणकचंद जी राखेचा, सुरेंद्र जी श्रीचंद जी बोथरा, सुरेश जी हस्तीमल जी मुणोत, सुरेश जी सुगनलाल जी चंडालिया, सुशील जी रोशनलाल जी कोठारी, सज्जनराज जी शांतिलाल जी डूंगरवाल, उर्मिला जी शांतिलाल जी फलोदिया, डालचंद जी करणीदान जी लूणिया, उत्तम जी शोभालाल जी देसरला, दीपक जी कपूरचंद जी केवड़िया, दीपक जी मूलचंद जी कोठारी, दलचंद जी आसकरण जी बाफना, वंदना जी दिनेश जी सेठिया, चंदा जी सुरेंद्र जी मालू, चंचल जी कन्हैयालाल जी राखेचा, चांद सिंह जी हरपावत, जीवन जी जेठमल जी आंचलिया, जितेंद्र जी संपतराज जी चोपड़ा, जसकरण जी लूणकरण जी लालाणी, जेठमल जी जुगराज जी दुगड़, अरुण जी उत्तमचंद जी सेठिया, अमर सिंह जी मदनलाल जी कंठालिया, अमरचंद जी शंकरलाल जी देरासरिया, अनिल जी मदनलाल जी कोठारी, अनिल जी मदनलाल जी दुग्गड़, अरविंद जी जतन जी सुराणा, अरविंद जी हनुमानमल जी आंचलिया, अशोक जी मूलचंद जी सुराणा, अशोक जी मूलचंद जी सुराणा, अशोक जी भंवरलाल जी बैदमेहता, अशोक जी रतनलाल जी सुराणा, अशोक जी सियाल, अशोक जी नेमीचंद जी सुराणा, आनंद जी ज्ञानचंद जी रांका, आनंदमल जी मानमल जी भूरा, अजय जी मोहनलाल जी डागा, अजीत जी पंचीलाल जी भूरा, गणपतलाल जी मांगीलाल जी कोठारी, गणपतलाल जी मांगीलाल जी देरासरिया, गणपतलाल जी मांगीलाल जी गांधी, गोपाल जी भंवरलाल जी पितलिया, गौतम जी हनुमानमल जी हीरावत, गौतम जी पन्नालाल जी ढेढ़िया, गौतमचंद जी ताराचंद जी ललवानी, गुणवंत जी दीपक जी लोढ़ा, गुप्तदान, गुप्तदान, ललित जी मोहनलाल जी पारख, लोकेश जी इंद्रचंद जी दफ्तरी, लोकेश जी पूनमचंद जी बोथरा, लोकेश जी राजेंद्र जी बेगानी, लूणकरण जी फूसेराज जी लालाणी, राकेश जी बाबूलाल जी देसरला,

नीमच से- घनराज जी माणकलाल जी रांका, प्रकाश जी मेघराज जी पीयूष जी कड़ावत, बसंत जी संजय जी काँठेड़, बसंतीलाल जी काँठेड़, प्रदीप जी प्रकाशचंद जी गोदावत, प्रदीप जी ओस्तवाल, कमल जी सूरजमल जी बंबोरिया, कांतिलाल जी सुशील जी मुणोत, कला बाई अशोक जी पटवा, महेंद्र जी बंबोरिया, मांगीलाल जी पिंकेश जी चौधरी, मान बाई अशोक जी चौधरी, किशोर सिंह जी मांगीलाल जी नांदेचा, किशनलाल जी लोढ़ा, मिश्रीलाल जी सुशील जी काँठेड़, मितेश जी सेठिया, दिलीप जी आंचलिया, विजय जी हिमांशु जी पोरवाल,

विनोद जी मुणोत, गिरीश जी अंकित जी मुणोत, भूरालाल जी राजेश जी नलवाया, पारसमल जी काँठेड़, पारसमल जी खिंदावत, पारसमल जी सुशील जी सहलोत, रोशनलाल जी भाविक जी फांफरिया, राजमल जी नलवाया, राजेश जी मनीष जी मोगरा, शशिकला जी गांग, शांतिलाल जी पंकज जी कुदाल, शोभागमल जी मुणोत, शैलेंद्र जी भंडारी, संदीप जी खाबिया, समरथमल जी अजय जी काँठेड़, सोहनलाल जी दिलीप जी छाजेड़, सागरमल जी नलवाया, सागरमल जी दिलीप जी धींग, सागरमल जी वया, सागरमल जी अखिलेश जी सहलोत, सुमतिलाल जी चौधरी, सुरेशचंद्र जी मुणोत, सुशील जी नागौरी, सत्यप्रकाश जी खींचा, सूरज जी बाफना, तरुण जी आशीष जी पटवा, तेजमल जी सुशील जी नलवाया, नरेश जी नलवाया, नरेंद्र जी राहुल जी चौधरी, नवीन जी अभय जी फांफरिया, अरुण जी बंबोरिया, अक्षय जी सुरेंद्र जी चौहान, अमृतलाल जी नागौरी, अमृतलाल जी नलवाया, अमर सिंह जी मुणोत, सुरेश जी राजेश जी सेठिया, सुरेश जी गौरीलाल जी गांधी, नरेंद्र जी जिनेश जी गांग, अमित जी विनोद जी सिंघवी, अनिल जी जैन, अभय जी नितिन जी कुदाल, अभय जी अभिषेक जी सोनी, आशीष जी कछारा, अशोक जी कटारिया, अशोक जी मुणोत, आनंदीलाल जी पंकज जी काँठेड़, अजीत जी भंडारी, अजीत जी नाहर, **रायपुर से-** खुशाल जी बाफना, प्रकाशचंद जी पारख, बसंती बाई उत्तमचंद जी चोरड़िया, मुन्नालाल जी सेठिया, मनोहरलाल जी भंसाली, रूपेश जी अमरचंद जी बैद, प्रखर जी छाजेड़, प्रकाशचंद जी लूणिया, प्रकाशचंद जी चरण जी संचेती, कमलेश जी सांखला, दिलीप जी टाटिया, विकास जी डाकलिया, विकास जी गुणधर, विपुल जी पींचा, पंकज जी गोलछा, श्रेणिक जी मुणोत, रोहित जी गोलछा, श्रेणिक जी देशलहरा, ज्ञानचंद जी संचेती, संतोष जी बरड़िया, सोहन जी गोलछा, दानमल जी कटेर, जोगराज जी बुरड़, नरेश जी बाफना, टीकम जी पारख, सुरेश जी अनिल जी खटोड़, अजय जी खटोर, ललितचंद जी संचेती, **राजनांदगाँव से-** प्रभात जी बाफना, प्रेमचंद जी कोमल जी बाफना, कन्हैयालाल जी चोरड़िया, किशोर जी शैली जी सांखला, किशन जी रमेश जी ओस्तवाल, दिनेश जी चोरड़िया, रमेश जी सिंघी, रमेश जी अर्पित जी श्रीश्रीमाल, राजेंद्र जी बाफना, संदीप जी गिड़िया, सुरेश जी सांखला, उमेश जी ऋषभ जी गिड़िया, उत्तमचंद जी श्रीमाल, उत्तमचंद जी सोपान जी बाफना, दलचंद जी प्रणय जी पारख, स्वप्निल जी शिखर जी छाजेड़, अनिल जी पारख, आशीष जी राकेश जी ओस्तवाल, अशोक जी गिड़िया, गौतमचंद जी विनय सिंगी, गौतमचंद जी अक्षय जी सांखला, लालचंद जी चोरड़िया, **खैरागढ़ से-** धर्मेंद्र जी सांखला, घेवरचंद जी कोठारी, खूबचंद जी छाजेड़, इंद्रचंद जी चोरड़िया, कोमलचंद जी कोटड़िया, मोतीलाल जी पारख, सिद्धार्थ जी सांखला, नितेश जी नाहर, हीरालाल जी सिंघवी, भीखमचंद जी कोटड़िया, भैरवलाल जी नाहर, पूनमचंद जी कोटड़िया, रमेशचंद जी मोदी, शांतिलाल जी चोपड़ा, शैलेश जी सांखला, स्वरूपचंद जी चोरड़िया, सुनील जी चोरड़िया, चतुर्मल जी सालेचा, नरेशचंद जी चोपड़ा, अमृतलाल जी सालेचा, टीकमचंद जी सालेचा, आशीष जी कोटड़िया, अशोक जी सुराणा, अशोक जी चोरड़िया, अजय जी सुराणा, गौतमचंद जी चोपड़ा, गौतम जी चोपड़ा, गुलाबचंद जी चोपड़ा, **बेगूँ से-** प्रकाश जी पोखरना, बाबूलाल जी कोठारी, बाबूलाल जी पोखरना, कोमल जी आंचलिया, कन्हैयालाल जी आंचलिया, महावीर जी नाहर, मदनलाल जी सोनी, दिनेश जी चौधरी, रोशनलाल जी कोठारी, रोशनलाल जी चौधरी, राजकुमार जी पोखरना, शांतिलाल जी नाहर, शेरूमल जी कोठारी, सागरमल जी सुराणा, सुरेंद्र जी बोहरा, सुशील जी सोनी, सुशील जी आंचलिया, दीपक जी आंचलिया, वीरेंद्र जी काँठेड़, वृद्धिचंद जी कोठारी, तेजमल जी नाहर, नरेंद्र जी (नारू जी) पोखरना, नेमीचंद जी आंचलिया, नेमीचंद जी पोखरना, अशोक जी सोनी, लाभचंद जी पोखरना, **भीलवाड़ा से-** विनीत जी

भैरुलाल जी ओरड़िया, मांगीलाल जी पदम जी डूंगरवाल, मनोहरलाल जी तलेसरा, भोपराज जी मेहता, भगवतीलाल जी सेठिया, पारसमल जी अभिनव जी ओरड़िया, रामलाल जी भूरा, राजेंद्र जी भड़कतिया, राजेश जी आंचलिया, शांतिलाल जी रांका, सुरेश जी भूरा, नवरतमल जी अनिल जी नंदावत, अमरचंद जी बेताला, अमरचंद जी दुग्गड़, अमरचंद जी, अशोक जी सांखला, गौतमचंद जी नंदावत, **अहमदाबाद से-** प्रकाश जी कोठारी, प्रमोद जी मिन्नी, कपिल जी बरड़िया, महेंद्र जी बाँठिया, माणकचंद जी सेठिया, मोतीलाल जी आंचलिया, विनोद जी बोथरा, विनोद जी सुराणा, हनुमान जी पंकज जी सेठिया, भूपेंद्र जी सोनी, पारस जी आयुष जी फलोदिया, पुखराज जी बाघमार, शांतिलाल जी खींचा, संजय जी बाघमार, जीवन जी वया, अशोक जी बाघमार, गणपत जी चोरड़िया, **मानपुर से-** प्रेमचंद जी चोरड़िया, कल्याणचंद जी छाजेड़, मुकेश जी ढेलड़िया, दिनेशचंद जी चोरड़िया, विकास जी श्रीश्रीमाल, राजकुमार जी पारस जी, सुभाषचंद जी संचेती, सुभाष जी नवरतन जी बोथरा, उत्तमचंद जी प्रकाशचंद जी लोढ़ा, दीपेश जी जैन, अजय जी चोरड़िया, अगरचंद जी ढेलड़िया, गौतमचंद जी ढेलरिया, गौतमचंद जी सेठिया, लक्ष्मीचंद जी मनीष कुमार जी चोरड़िया, **इंदौर से-** घनश्याम जी पोरवाल, मोहिका जी रूपावत, पुष्पा जी जैन, पुनीत जी पावेचा, राजेश जी पुगलिया, श्रुति जी मेहता, रेणु जी गांधी, संतोष जी चोरड़िया, सरोज जी सांखला, सुरभि जी रूपावत, सुरेश जी जैन, सुनीता जी गांधी, ऊषा जी मेर, अशोक जी खिंदावत, ओनिशा जी जैन, **ब्यावर से-** प्रेमचंद जी मोहता, विमल जी हिंगड़, विनोद जी नाहर, निहाल जी कोठारी, हुक्मीचंद जी ओस्तवाल, पवन जी खींचा, प्रेमचंद जी देरासरिया, श्रवण जी बोहरा, सुशील जी मेहता, सतीश जी बाबेल, जसवंत जी चौधरी, अंकुश जी बोहरा, अभिषेक जी नाहटा, अरविंद जी नाहटा, **धमतरी से-** बंशीलाल जी संजय जी गोलछा, धमतरी, माणकलाल जी टीकमचंद जी गोलछा, धमतरी, मोतीलाल जी प्रवीण जी छाजेड़, धमतरी, पांचूलाल जी आशीष जी मिन्नी, धमतरी, रमेशचंद जी पवन जी मिन्नी, धमतरी, जितेंद्र जी सौरभ जी संचेती, धमतरी, लालचंद जी नरेंद्र जी लोढ़ा, धमतरी, **अमरोली से-** प्रकाशचंद जी मीठालाल जी दलाल, बालचंद जी बदरमल जी कोठारी, किशोर भाई हरकचंद जी दक, हीनल जी जगदीश जी देरासरिया, दिलीप जी फूलचंद जी गांधी, निर्मल जी सोहनलाल जी कोठारी, रतनलाल जी छाजेड़, दीपिका जी धर्मेश जी कोठारी, **दल्लीराजहरा से-** धर्मचंद जी वर्धमान जी टाटिया, रूपचंद जी अंकित जी टाटिया, कमलचंद जी संतोष जी चोपड़ा, कैलाशचंद जी श्रेयांश जी गुणधर, रमेश जी यश जी बाँठिया, सुनील जी गुणधर, नरेश जी प्रवीण जी बाँठिया, नवीन जी पारख, अंजना देवी पारख, **कवर्धा से-** प्रवीण जी सोम जी श्रीश्रीमाल, कोमलचंद जी श्रेयांश जी, शेषमल जी प्रशांत जी, सुमित जी छाजेड़, देवराज जी बिपिन जी श्रीमाल, जेठमल जी गौरव जी चोरड़िया, नीलमचंद जी देवेंद्र जी पारख, अविनाश जी अभिषेक जी पारख, **संबलपुर से-** कन्हैयालाल जी बुरड़, मांगीलाल जी संचेती, निकेश जी डोसी, राजेंद्र जी दिलीप जी बुरड़, संतोष जी पारख, सुरेशचंद जी अशोक जी बरड़िया, नीलमचंद जी बुरड़, लक्ष्मीलाल जी संचेती, लोकेश जी संचेती, **नगरी से-** रूपेश जी छाजेड़, रवींद्र जी नाहटा, राजेश जी नाहटा, दुर्गालाल जी गोलछा, देवीचंद जी ढेलरिया, नीलमचंद जी ढेलरिया, गणेश जी चोपड़ा, गौतमचंद जी गोलछा, गगन जी नाहटा, **हिंदमोटर से-** इंद्रचंद जी मेघराज जी मुणोत, इंद्रचंद जी दिलीप जी भूरा, कांतिलाल जी सुराणा, मोतीलाल जी भूरा, सुभाष जी जितेश जी सेठिया, अशोक जी सुशील जी मुणोत, **थानखम्हरिया से-** प्रदीप जी चिराग जी श्रीश्रीमाल, मुकेश जी चोपड़ा, प्रिंस जी अनमोल जी छाजेड़, ज्ञानचंद जी निखलेश जी श्रीश्रीमाल, सुनील जी श्रीश्रीमाल, सतीश जी चोपड़ा, **बिरमावल से-** महेंद्र जी पारसमल जी पीपाड़ा, सौरभ जी प्रकाश जी पीपाड़ा, सुनील जी माणकलाल जी

श्रीश्रीमाल, अनिल जी माणकलाल जी श्रीश्रीमाल, अशोक जी माणकलाल जी श्रीश्रीमाल, **लुधियाना से-** धीरज जी सांड, मोनू जी संचेती, राजेश जी छाजेड़, ललित जी भूरा, **देवकर से-** युगलचंद जी वैभव जी, प्रकाशचंद जी गौरव जी बोरा, पन्नालाल जी गगन जी बोरा, लक्ष्मीलाल जी राकेश जी बोरा, **छुईखदान से-** इंद्रचंद जी कोठारी, इंद्रचंद जी सांखला, किशोरचंद जी संचेती, **परपोड़ी से-** बाबूलाल जी बाँठिया, नथमल जी कोठारी, आशीष जी श्रीश्रीमाल, अशोक जी करण जी जैन, **बीजा से-** बसंत जी नमन जी सांखला, नीतू बाई सांखला, राजेश जी शुभम् जी सांखला, शांतिलाल जी राहुल जी कर्णावट, शांतिलाल जी संदीप जी कर्णावट, **डूंगरी से-** बलवंत जी गांधी, दिलीप जी पोखरना, रतनलाल जी गांधी, **डौंडी से-** कमलचंद जी चोरड़िया, पारसमल जी बाघमार, पूनम जी कोठारी, **बागबहारा से-** कस्तूर कुमार जी सांखला, जिनेश जी सांखला, राजेश जी सांखला, सज्जनराज जी मुणोत, नरेश जी सांखला, **अतरिया से-** केवलचंद जी नाहटा, भंवरलाल जी नवीन जी नाहटा, जीवनचंद जी हेमंत जी चोपड़ा, **डौंडीलोहारा से-** महावीर जी तातेड़, राजेंद्र जी भंसाली, अनूपचंद जी भंसाली, **पाली से-** महेंद्र जी रक्षित जी कुकड़ा, मूलचंद जी चोरड़िया, पदमचंद जी धर्मेंद्र जी विकास जी लोढ़ा, नेमीचंद जी उदित जी अंकुरा जी बाँठिया, ललित जी जय जी कुकड़ा, **कानोड़ से-** महेंद्र जी अलावत, दिनेश जी सहलोत, शेषमल जी नलवाया, सुंदरलाल जी धींग, अमृतलाल जी नंदावत, अनिल जी मेहता, गणेश जी जारोली, **अंबागढ़ चौकी से-** मोहनलाल जी नाहटा, दिनेशचंद जी नाहटा, रमेशचंद जी नाहटा, आकाश जी लोढ़ा, ललित जी नाहटा, **दाढ़ी से-** मदनलाल जी गोलछा, पारसलाल जी चोरड़िया, राजेश जी चोरड़िया, अनिल जी श्रीश्रीमाल, **गंडई से-** मुकेश जी सांखला, राजेंद्र जी निशांत जी, रानीदान जी त्रिलोकचंद जी जैन, आनंद जी आशीष जी सांखला, **वलसाड से-** मीठालाल जी सामरा, फतेहलाल जी हिंगड़, पवन जी देसरला, अनिल जी बाबूलाल जी पोखरना, ललित जी देसरला, **कुसुमकसा से-** दिनेश जी रायसोनी, नितिन जी कोटड़िया, भीखमचंद जी कोटड़िया, **खरियार रोड से-** विजयलाल जी सुनील जी सोनी, गिरधारीलाल जी नागेश जी चोरड़िया, हेमचंद जी रोहन जी सोनी, राजेश जी रजत जी छल्लाणी, **राजा खरियार से-** शीशम जी रजत जी जैन, नरेश जी जैन, अंकुर जी जैन, नवीन जी जैन, **धमधा से-** यशवंत जी जैन, राज जी पारख, राजेश जी पारख, ज्ञानचंद जी पारख, नवीन जी पारख, ललित जी अभिषेक जी पारख, **दिल्ली से-** शांतिलाल जी भूरा, सोहनलाल जी नवलखा, सुमेरचंद जी सेठिया, नरेंद्र जी बोथरा, **अर्जुंदा से-** संतोषचंद जी बोहरा, जीवनलाल जी लूणावत, देवकरण जी नाहटा, **भाटापारा से-** प्रकाशचंद जी सांखला, तेजप्रकाश जी ओस्तवाल, रेखचंद जी सांखला, **डोंगरगाँव से-** ओमप्रकाश जी अजीत जी श्रीश्रीमाल, आशीष जी सांखला, ललित जी शौर्य जी लोढ़ा

01 मई से 31 मई 2025 तक

संघ शिखर सदस्यता (सौजन्य से प्राप्त)

25,00,001/- चित्रेश जी मेहता, इंदौर

25,00,000/- कमला बाई चोरड़िया परिवार (सुरेश जी दिलीप जी चोरड़िया), बालाघाट (श्री मांगीलाल जी चोरड़िया की पुण्यस्मृति में)

14,00,000/- राजकुमार जी बाफना पुत्र मदन कँवर जी बाफना, हरदा

संघ महाप्रभावक सदस्यता (सौजन्य से प्राप्त)

4,40,000/- महेंद्र जी सोनावत, भीनासर

2,20,000/- किरणचंद जी गुलगुलिया, चिकमगलूर

2,20,000/- निर्मल जी खिंवसरा, ब्यावर

2,20,000/- अखराज जी ओस्तवाल, दुर्ग

2,20,000/- झंवरलाल जी कुम्मट, सिलचर

1,70,000/- सुंदर बाई कोटड़िया, कोंडागाँव

समता भवन प्रवृत्ति (सौजन्य से प्राप्त)

50,000/- बाबूलाल जी राजेश कुमार जी मनीष

कुमार जी पोखरना, जावरा

समता भवन, मंदसौर

4,20,000/- छाऊ देवी दुल्हराज जी रांका ट्रस्ट, जयनगर/मुंबई

समता भवन, राधा निकुंज (जयपुर)

1,11,000/– जिनेश जी महावीर प्रसाद जी जैन, जयपुर

समता भवन, गुराड़िया

50,000/– नथमल जी जसकरण जी तातेड़, करीमगंज

25,000/– पंकज जी केशरीचंद जी सेठिया, जयपुर

समता भवन, हावड़ा

50,000/– नथमल जी जसकरण जी तातेड़, करीमगंज

40,000/– पंकज जी केशरीचंद जी सेठिया, जयपुर

समता भवन, रावतसर

25,000/– पूनमचंद जी सुराणा, सूरतगढ़

25,000/– पंकज जी केशरीचंद जी सेठिया, जयपुर

दानपेटी योजना

11,000/– विनय जी कातेला, लुधियाना

11,000/– माणकचंद जी डागा, बेंगलुरु

7,100/- भंवरलाल जी गणेशमल जी पींचा, जोरावरपुरा

5,100/– अमरलाल जी पींचा, जोरावरपुरा

3,500/– हिम्मतलाल जी मोगरा, उदयपुर

3,100/– विनीत जी निर्मल जी जैन, जावद

2,700/– जतनलाल जी भूरा, लाला बाजार

2,500/– छगनलाल जी लूणकरण जी सेठिया, तूफानगंज

2,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– पूनमचंद जी सुराणा, सूरतगढ़, **नारायणपुर-** पारसमल जी सुराणा, प्रेमराज जी लोढ़ा, के.डी. सुराणा, **जोरावरपुरा-** आसकरण जी भंवरलाल जी पींचा, हनुमानमल जी पींचा, पुखराज जी मांगीलाल जी पींचा, रुख्मा देवी बोहरा

1,500/– धर्मचंद जी भंडारी, नारायणपुर

1,500/– सोहनलाल जी बोथरा, जोरावरपुरा

1,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– संचालाल जी कोठारी, मंडाणा, प्रवेश जी जैन, सूरतगढ़, अबीरचंद जी पारख, सूरतगढ़, हस्तीमल जी सुराणा, लुधियाना, **नारायणपुर-** आनंदमल जी सुराणा, पवन जी सुराणा, मांगीलाल जी गोलछा, जवरीलाल जी चोरड़िया, बंशीलाल जी श्रीश्रीमाल, हुक्मीचंद जी, संतोष जी सुराणा, **जोरावरपुरा-** बिमलचंद जी राजेंद्र जी बिनायकिया, ताराचंद जी महेंद्र जी बिनायकिया, भंवरलाल जी कुंभट, **पंचकूला-** नवरतन जी बोथरा, मनोज जी भूरा, उत्तमचंद जी भूरा

इदं न मम

1,06,000/– धर्मीचंद जी रांका, विजयनगर

38,880/– दिनेश कुमार जी जैन, सवाई माधोपुर

11,000/– विपिन कुमार काँठेड़, नीमच

11,000/– प्रेमचंद जी अर्पित जी ढेढ़िया, पाली

11,000/– लूणकरण जी कोठारी, सूरत

10,200/– दिलीपचंद जी सुराणा, लाला बाजार

10,200/– रूपचंद जी कमल जी संचेती, सिलापथार

7,700/– सुरेंद्र जी सोनावत, डिब्रूगढ़

7,100/– अरुण जी कन्हैयालाल जी खुरड़िया, अहमदाबाद

7,000/– धनराज जी मालू, डिब्रूगढ़

6,200/– मुकेश जी डागा, सिलापथार

6,000/– मुकेश जी लालचंद जी पोखरना, बेगूँ

6,000/– हनुमानचंद जी डोसी, डिब्रूगढ़

5,100/– राजेंद्र जी गोलछा, बीकानेर

5,100/– आसकरण जी भंवरलाल जी पींचा, जोरावरपुरा

5,100/– मिलापचंद जी बोथरा, सूरत

5,100/– हर्ष जी महेश जी सुराणा, सूरत

5,100/– उत्तमचंद जी चोरड़िया, राँची

5,000/– सुशीला देवी बाबूलाल जी पोखरना, बेगूँ

5,000/– अनिल कुमार जी लूणिया, बदनावर

4,231/– गुप्तदान, जगदलपुर

3,100/– सुशील जी शाह, राजनांदगाँव (प्रतिभा शाह के जन्मदिवस के उपलक्ष में)

2,500/– राकेश कुमार जी जैन, पिपलिया मंडी

2,500/– सुरेश जी बाफना, खिरकिया
2,500/– उज्ज्वला जी बाफना, खिरकिया
2,200/– जतन जी राजेश जी मालू, सिलापथार
2,200/– संजय जी मोगरा, मंदसौर

2,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त–
शांतिलाल जी रूपावत, मंदसौर, नवरतनमल जी राकेश जी रमेश जी सेठिया, सूरत, मनोज जी भंडारी, कंर्जाड़ा, गुप्तदान, प्रवेश जी जैन, सूरतगढ़, सुरेश जी बेगानी, सूरतगढ़, महेंद्र जी बेगानी, सूरतगढ़, असलेखा जी सोनावत, गंगाशहर, राजेंद्र जी बोहरा, इंदौर, रतनलाल जी जैन (खिंदावत), इंदौर, सुशील जी शाह, राजनांदगाँव (स्नेहा जी शाह के जन्मदिवस के उपलक्ष में), हुलास जी सुराणा, सूरत, राजेंद्र जी सुराणा, सूरत, शुभकरण जी भूरा, सूरत, सुरेश जी चंडालिया, सूरत, महावीरचंद जी डागा, सूरत, जयकुमार जी डागा, सूरत, सोहनलाल जी नाहटा, सूरत, प्यारेलाल जी सुनील जी गांधी, सूरत

1,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– सुरेश जी डागा, तूफानगंज, सुनील जी लूणावत, सूरत, सुमित जी लुणिया, रायगंज, कमल जी श्रीश्रीमाल, ब्यावर, धर्मचंद जी लूणावत, सूरत, रसीला देवी कांकरिया, रायगंज, नरेंद्र जी शाह, राजनांदगाँव (अर्हम जी जय जी शाह के जन्मदिवस के उपलक्ष में), प्रदीप जी गोलछा, सूरत, उमेश जी मेहता, सूरत, दिलीप जी भंडारी, कंजार्ड़ा, हेमा जी गौतम जी कांकरिया, सूरत

जीवदया

21,100/– महेंद्र कुमार जी बेगानी, बीकानेर
14,000/– हिया देवी जारोली, बेंगलुरु
11,000/– सुंदर बाई कोटड़िया, कोंडागाँव (श्री रोशनलाल जी कोटड़िया की पुण्यस्मृति में)
11,000/– गौतमचंद जी महावीरचंद जी धारीवाल, पुणे
10,550/– सोमेश्वर जी सिपानी, अहमदाबाद
4,000/– गुप्तदान
3,300/– श्वेता जी हस्तीमल जी बरड़िया, सूरत (1. श्री पूनमचंद जी सोनावत की 15वीं पुण्यतिथि पर, 2. श्रीमती सुशीला देवी सोनावत की छठीं पुण्यतिथि पर, 3. श्रीमती सुमन कुमारी जी सोनावत की छठीं पुण्यतिथि पर)
3,100/– पारसमल जी पितलिया, नीमच
2,100/– डागा परिवार, कडूर (श्री जतनलाल जी डागा की पुण्यस्मृति में)
2,100/– अजीत जी खुरड़िया, उदयपुर
1,500/– पीयूष जी मांडोत, पुणे
1,111/– गौरव जी प्रकाश जी खटवाड़, बेंगलुरु
1,100/– शांतिलाल जी रूपावत, मंदसौर
1,100/– माणकचंद जी जितेंद्र जी जैन, सवाई माधोपुर
1,100/– कोमलचंद जी प्रवीण कुमार जी मोदी, भदेसर (श्रीमती कांता बाई मोदी के स्वर्गवास के उपलक्ष में)

साधुमार्गी पब्लिकेशन सहयोग

1,50,000/– सुनील जी बंब, टोंक
21,000/– भोजराज जी सेठिया, दिनहट्टा

श्रमणोपासक भेंट

5,1000/– पीयूष जी नपावलिया एवं परिवार, मोड़ी (म.प्र.) (वीर पुत्र, वीर भ्राता श्री पारसमल जी नपावलिया की पुण्यस्मृति में)
2,100/– सुरेश जी डागा, तूफानगंज (सुपुत्री कविता के विवाह के उपलक्ष में)
1,100/– श्याम जी गुप्ता, श्योपुर (रजत जी के विवाह के उपलक्ष में)
1,100/– मनोज जी सांखला, खरगोन (श्री अशोक जी सांखला की पुण्यस्मृति में)
1,100/– महेश जी जैन (बाबाईवाले), सवाई माधोपुर (जितेंद्र संग शिवानी की शुभविवाह के उपलक्ष में)
1,100/– कोमलचंद जी प्रवीण जी मोदी, भदेसर (श्रीमती कांता बाई मोदी के स्वर्गवास के उपलक्ष में)

समता सरिता सेवा (विहार सेवा)

50,000/– दीपिका जी महावीर जी जारोली, बेंगलुरु

समता साहित्य स्टॉल अनुदान

34,000/- हेमंतलाल जी बाफना, मुंबई
11,000/- महावीर जी जारोली, बेंगलुरु
6,000/- मैना बाई संकलेचा, सेमरा
3,100/- शांतिलाल जी बोथरा परिवार, सूरत (स्व. श्री शांतिलाल जी बोथरा की पुण्यस्मृति में)

समता जनकल्याण प्रन्यास

10,000/- सतीश जी राकेचा, सेलंबा

सर्वधर्मी सहयोग (महिला समिति)

11,000/- गुप्तदान, बीकानेर
5,100/- गुप्तदान, रायपुर
2,200/- मोनाली जी ओस्तवाल, दुर्ग
1,100/- मोनालिसा जी लोकेश जी जैन, रायपुर

:: **विशेष** ::

श्रमणोपासक सदस्यता-4, साहित्य सदस्यता-2, महिला समिति-22

::: 1 अप्रैल 2025 से 31 मई 2025 तक :::

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के बैंक खाते में निम्नलिखित राशियाँ विभिन्न दानदाताओं ने जमा करवाई हैं, लेकिन जमाकर्ता के नाम व किस मद हेतु राशि जमा की गई है इसकी सूचना कार्यालय को प्राप्त नहीं होने से ये राशियाँ संघ के सस्पेंस खाते में संयोजित हैं। अत: जिन दानदाताओं ने राशि के सामने अंकित दिनांक को ये राशियाँ जमा करवाई हैं, वे केंद्रीय कार्यालय, बीकानेर को मोबाइल नंबर 7976520588 पर सूचित कर अपनी पक्की रसीद अतिशीघ्र ही प्राप्त करें।

दिनांक	राशि	अन्य विवरण
SBI बैंक		
07.04.25	2,200/-	नकद
08.04.25	10,000/-	UPI निखिल
09.04.25	2,400/-	UPI जय गेलड़ा
11.04.25	21,320/-	नकद
12.04.25	1,100/-	NEFT विपुल
16.04.25	300/-	UPI संदीप
16.04.25	5,000/-	UPI यशवंत
17.04.25	192/-	NEFT Exotic India Art
23.04.25	1,100/-	UPI मुदित गांधी
06.05.25	11,000/-	CH. 732505
12.05.25	501/-	NEFT विपुल जैन
15.05.25	3,000/-	UPI राजेंद्र
20.05.25	5,100/-	UPI शुभम
21.05.25	2,580/-	UPI जवरीलाल
21.05.25	18,000/-	UPI इंद्रजीत
23.05.25	1,100/-	UPI वनिता
23.05.25	1,100/-	UPI अरिहंत
24.05.25	1,100/-	UPI दिलपेश
25.05.25	4,200/-	UPI शिखर
26.05.25	1,100/-	NEFT राजेंद्र कुमार
28.05.25	65,000/-	NEFT शैलेंद्र
30.05.25	11,000/-	UPI वैभव
31.05.25	1,000/-	UPI सौरभ
31.05.25	1,000/-	UPI अविनाश
31.05.25	51,000/-	NEFT विनयचंद
HDFC बैंक		
08.04.25	3,000/-	UPI

- **उपरोक्त भेंटदाताओं का श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आभार व्यक्त किया जाता है। आप इसी तरह संघ के उत्थान में अपना योगदान बनाए रखें।**
- **दिनांक 21-22 जुलाई, 2024 को भीलवाड़ा में संपन्न कार्यकारिणी बैठक में हुए निर्णयानुसार 1 अप्रैल 2025 से न्यूनतम ₹1,100/- की राशि प्रदान करने वाले दानदाता का नाम ही प्रकाशित किया जाएगा।**

|| जय गुरु नाना || || जय महावीर || || जय गुरु राम ||

भावभीनी श्रद्धांजलि

सुश्रावक श्री घेवरचंद जी कांकरिया

(गोगेलाव/सूरत)

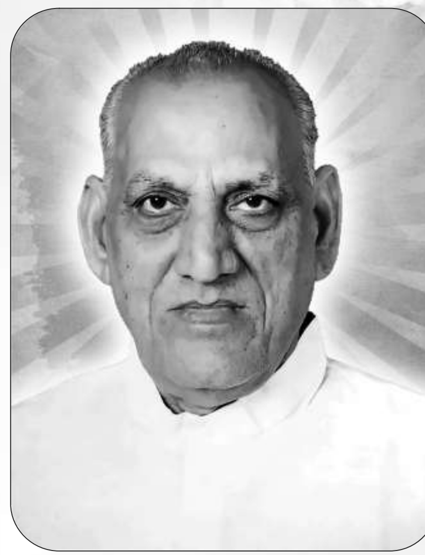

गोगेलाव निवासी सूरत प्रवासी **सुश्रावक श्री घेवरचंद जी कांकरिया** सुपुत्र स्व. श्री झूमरमल जी कांकरिया का 90 वर्ष की आयु में **22 मई 2025** को सूरत में देवलोकगमन हो गया। आपश्री परिवार, संघ व समाज के वरिष्ठतम, धर्मनिष्ठ, विनीत सुश्रावक होने के साथ-साथ सादा जीवन उच्च विचार के प्रतीक थे। आपका संपूर्ण जीवन धर्मनिष्ठा, सेवा कार्यों, जिनशासन अनुमोदना, गुरुभक्ति एवं संयम व संस्कारों से ओत-प्रोत रहा। आपको तीन आचार्यों की सेवा का लाभ प्राप्त हुआ। श्री घेवरचंद जी ने धर्म को व्यवहार में उतारकर परिवार व समाज को जैन मूल्यों, आदर्शों, संस्कारों के साथ करुणा और सेवा का मार्ग दिखाया। आपकी वाणी में मधुरता, जीवन में मर्यादा और आचरण में संयम का अद्भुत समन्वय था। आपने '**जीओ और जीने दो**', '**समता में सार है**' एवं '**संयम ही जीवन है**' आदि जैन सिद्धांतों को आत्मसात् कर एक अपूर्व प्रामाणिक जीवन जीया।

आपका संपूर्ण परिवार संघ सेवा में सक्रिय भूमिका निभाता है। आपके ज्येष्ठ सुपुत्र अजीत कुमार जी कांकरिया संघ में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद के गुरुत्तर दायित्व का निर्वहन कर रहे हैं एवं संघ महाप्रभावक सदस्य भी हैं। पूर्व में आप श्री साधुमार्गी जैन संघ, सूरत में अध्यक्ष पद पर सेवाएँ दे चुके हैं। **कर्मभूमि तमकुही रोड (उत्तर प्रदेश) में भी श्री घेवरचंद जी का उत्कृष्ट मार्गदर्शन व योगदान विभिन्न संस्थाओं को निरंतर मिलता रहा, जो आपकी सेवा भावना और सामाजिक समर्पणा को दर्शाता है।** आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान, सन्मार्ग पर अग्रसर एकजुट परिवार छोड़कर गए हैं, जो आपके आदर्शों का अनुसरण कर जिनधर्म की प्रभावना में समर्पित है।

:: श्रद्धानवत ::

अजीत कुमार-ऊषा देवी, आनंद कुमार-राजश्री देवी, राज कुमार-रेखा देवी, अनिल कुमार-संगीता देवी (पुत्र-पुत्रवधू), **अरुण-समता, रौनक-नेहा, निशांत-शिल्पा, निखिल-रुचिका कांकरिया** (पौत्र-पौत्रवधू), **मंजू देवी-विजयराज जी भंसाली** (पुत्री-दामाद), **अनिशा-अंकुश जी गेलड़ा, रिद्धि-रिषभ जी सुरेखा** (पौत्री-दामाद), **अंकिता, युक्ता, एकता** (पौत्रियाँ), **आरुष, कियांश, ध्रुव, युग** (पड़पौत्र), **कृशा** (पड़पौत्री), **सिद्धार्थ-महिमा** (दोहिता-वधू), **स्वाति-प्रणव जी ओरा** (दोहिती-दामाद) एवं **समस्त कांकरिया परिवार।**

निवास स्थल

1-ए, रतन कुंज अपार्टमेंट, रविधाम काम्प्लेक्स, घोड़दौड़ रोड, सूरत (गुजरात) मो.: 9824154976

राम चमकते भानु समान

विनम्र श्रद्धांजलि

उदयपुर। सुश्राविका प्रेमकुमारी जी धर्मपत्नी स्व. श्री जीवन सिंह जी दलाल का 24 अप्रैल को चौविहार संथारे सहित महाप्रयाण हो गया।

आप अत्यंत ही धार्मिक, सेवाभावी, मिलनसार प्रकृति की धनी थी। जीवनपर्यंत यथाअवसर अठाई, तेला, बेला, आयंबिल व ओली आदि तपस्याएँ की। आपको साध्वी श्री सिद्धमणि जी म.सा. ने संथारे के प्रत्याख्यान करवाए। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

रतलाम। सुश्रावक राजेंद्र कुमार जी मेहता का 70 वर्ष की आयु में 26 अप्रैल को संथारापूर्वक महाप्रयाण हो गया।

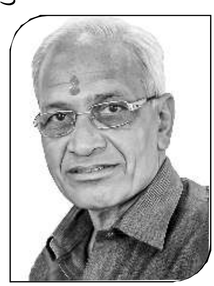

आप धर्म के प्रति अटूट श्रद्धावान व विनम्र, हँसमुख प्रकृति के धनी थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

रायपुर, भीलवाड़ा। सुश्राविका पान बाई धर्मपत्नी स्व. श्री शांतिलाल जी बोरदिया का 20 मई को निधन हो गया।

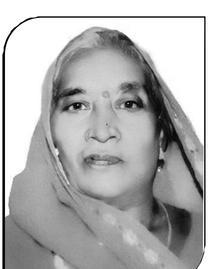

आपके नियमित पाँच सामायिक करने का लक्ष्य रहता था। चारित्रात्माओं की सेवा में अग्रणी रहते हुए आपने अपने जीवन को धन्य बनाया। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

रतलाम। सुश्रावक वीरभ्राता हीरालाल जी सुपुत्र स्व. श्री सुगनचंद जी पिरोदिया का 11 मई को देहावसान हो गया।

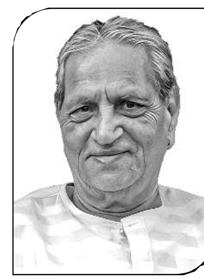

आप साध्वी श्री चंद्रकांता जी म.सा. एवं साध्वी श्री ताराकँवर जी म.सा. के संसारपक्षीय भाई, साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा. के संसारपक्षीय मामाजी एवं साध्वी श्री चित्तरंजना श्री जी म.सा. के सांसारिक चाचाजी थे। आपकी आचार्य श्री रामेश के प्रति अनन्य श्रद्धा व समर्पणा थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

उदयपुर। सुश्राविका सोरम बाई धर्मपत्नी स्व. श्री पृथ्वी सिंह जी मेहता, टिंबावाला का 85 वर्ष की आयु में 17 मई को देहावसान हो गया।

आप अत्यंत ही धार्मिक व सेवाभावी प्रकृति की धनी थीं। आचार्यदेव एवं शासन के पूर्ण समर्पित रहते हुए आप चारित्रात्माओं की सेवा का लक्ष्य रखती थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

चेन्नई। संथारा साधक सुश्रावक माणकचंद जी सुपुत्र स्व. श्री अमोलकचंद जी चंडालिया बराखण निवासी का 26 मई को महाप्रयाण हो गया।

आप पूज्य आचार्य श्री नानेश-रामेश एवं

उनके शासन के प्रति पूर्ण श्रद्धावान थे। आपने बेला, तेला, पाँच, अठाई, ग्यारह, मासखमण आदि तपस्याओं से जीवन सजाया हुआ था। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

तोंगपाल (बस्तर)। सुश्राविका चंपा देवी गुलेछा का 30 मई को विशाखापट्टनम् में निधन हो गया।

आप आचार्य श्री रामेश के प्रति अटूट श्रद्धावान थीं। आप चारित्रात्माओं एवं स्वधर्मी सहयोग में सदैव अग्रणी रहती थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

इंदौर। युवारत्न तपन जी सुपुत्र पदम प्रकाश जी चंडालिया का 6 जून को 36 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपके जमीकंद त्याग एवं प्रतिदिन 14 नियम चितारने आदि अनेक त्याग-

प्रत्याख्यान थे। आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा, भक्ति व समर्पणा थी। आप संत श्री ब्रह्मऋषि मुनि जी म.सा. के सांसारिक दोहिते एवं साध्वी श्री स्वागत श्री जी म.सा. के सांसारिक भाई थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

सरदारशहर। सुश्राविका कमला देवी धर्मपत्नी स्व. श्री बच्छराज जी डागा अलीपुरद्वार प्रवासी का

10 जून को 95 वर्ष की आयु में चौविहार संथारे सहित महाप्रयाण हो गया। आपको चार आचार्यों की सेवा का लाभ मिला। आपको श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र कंठस्थ था। अनेकानेक त्याग-प्रत्याख्यान व तपस्या आदि से आपने अपना जीवन सजाया हुआ था। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

“ ठोकर लगती है तब बुद्धि काम देती है। बुजुर्ग कहते हैं ठोकर लगनी चाहिए, तभी तो आदमी बनेगा, नहीं तो पशु का पशु रह जाएगा। पर ठोकर लगे कैसे? कल्पना कीजिए कि कोई व्यक्ति समुद्री यात्रा पर जा रहा है और समुद्र में जहाज चट्टान से टकराकर टूट जाए, सब कुछ डूब जाए। जैसे-तैसे कोई पाटिया हाथ लग जाए और वह हाथ-पैर चलाने की कोशिश करे। पहले वह तैरना नहीं जानता था, पर जैसे ही डूबने लगा, उसका दिमाग चल पड़ा, उसकी बुद्धि काम करने लगी। जब जान पर आ बनती है तब ऐसा ही होता है। उसी प्रकार "पइसो म्हारो परमेश्वर" का चिंतन रूपी यह बेड़ा जब तक नहीं टूटेगा तब तक बुद्धि जागृत नहीं होगी। जब यह टूटेगा तब पता लगेगा कि यह तो बेड़ा नहीं, कुछ और ही था। कागज की नाव थी, पानी लगा और गल गई। तब समझ लीजिए कि यह नाव पार नहीं लगाएगी। यह मोह की नाव है। इसने किसी को तिराया होता तो सारे तिर गए होते। इससे पार नहीं हो पाएँगे। यह ज्ञान जब जगेगा तभी व्यक्ति उसे छोड़ पाएगा। नहीं जागेगा तब तक तो यही लगेगा कि इसी में कुछ मिलेगा। क्या मिलेगा? अनादिकाल से इसी नाव पर बैठे हैं, पर गिनती कर पाएँगे जन्मों की? यहाँ तो वर्षों की गिनती फिर भी लग जाएगी। हो सकता है कंप्यूटर घंटे, मिनट और सेकंड तक आपकी लाइफ का हिसाब बता दे, पर कितने जन्म हो चुके हैं इसकी गणना तो वह भी नहीं कर पाएगा। हम अनादिकाल से इसी पोत पर बैठे हैं, किंतु अब तक कहीं कोई किनारा मिल नहीं पाया। अभी भी बैठे रहे तो आगे भी मिल नहीं पाएगा। इसलिए कहा है- वीतराग वाणी के यान में बैठिए, मोह-कर्म के क्षयोपशम रूपी यान में बैठिए। फिर देखिए किस गति से यान चलता है और मंजिल की ओर गतिशील होता है!

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

संथारा साधिका साध्वी श्री प्रेमलता जी म.सा. का देवलोकगमन, महाप्रयाण यात्रा में उमड़े श्रद्धालु

चित्तौड़गढ़, 14 जून 2025। परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के सान्निध्य में संयम साधना में रत **साध्वी श्री प्रेमलता जी म.सा.** का 14 जून 2025 को सायं 7:15 बजे शास्त्रीनगर स्थित समता भवन में देवलोकगमन हो गया। साध्वीश्री जी का स्वास्थ्य नरम चल रहा था, लेकिन सुधार पर था। अचानक ही देवलोकगमन से सभी स्तब्ध रह गए। सान्निध्यवर्ती साध्वीवर्याओं साध्वी श्री पुष्पलता जी म.सा., साध्वी श्री जिनप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री सिद्धप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री प्रतिज्ञा कँवर जी म.सा. ने सेवा का अद्‌भुत उदाहरण प्रस्तुत किया। देवलोकगमन के समाचार ज्ञात होते ही अनेक स्थानों से श्रावक-श्राविकाओं का दर्शनार्थ आवागमन होने लगा।

सुरेंद्रनगर निवासी सुश्री प्रेमलता जी शाह कोठारी मेहता की दीक्षा समता दर्शन प्रणेता, समीक्षण ध्यान योगी परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म.सा. के मुखारविंद से 17 अक्टूबर 1966 को राजनांदगाँव में संपन्न हुई। दीक्षा पश्चात् नामकरण साध्वी श्री प्रेमलता जी म.सा. किया गया। आपश्री जी ने मात्र 14 वर्ष की आयु में दीक्षा ग्रहण कर 59 वर्ष तक अपूर्व दृढ़ संयम पालन किया।

साध्वीवर्या की डोलयात्रा 15 जून 2025 को प्रात: 8 बजे शास्त्रीनगर समता भवन से प्रारंभ होकर विभिन्न मार्गों से होते हुए मोक्षधाम पहुँची। संपूर्ण मार्ग जय-जयकारों एवं भक्ति भजनों से गुंजायमान हो रहा था। मार्ग के दोनों ओर अंतिम दर्शनार्थ खड़े हजारों शहरवासियों ने साध्वीवर्या के अंतिम दर्शन कर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। मोक्षधाम में संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, मेवाड़ अंचल के राष्ट्रीय मंत्री, श्री साधुमार्गी जैन संघ, चित्तौड़गढ़ के अध्यक्ष-मंत्री सहित श्रावक-श्राविकाओं ने मुखाग्नि दी। मुक्तिधाम में आयोजित गुणानुवाद सभा में सर्वप्रथम नवकार मंत्र का जाप किया गया तत्पश्चात् महेश नाहटा ने कहा कि साध्वी श्री प्रेमलता जी म.सा. का जीवन स्व-पर कल्याण की साधना में रत रहा। यथा नाम तथा गुण उनके प्रेम व वात्सल्य को सदा-सदा याद रखा जाएगा।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा कि साध्वी श्री प्रेमलता जी म.सा. संघ व शासन के मजबूत स्तंभ थे। संयम से सराबोर उनका जीवन अन्यों के लिए प्रेरणीय था। उन्होंने जैन जगत को महकाया है।

राष्ट्रीय महामंत्री ने कहा कि महासती जी एकनिष्ठा एवं अनुशासन की अनुपम मिसाल थे। अंचल राष्ट्रीय मंत्री ने कहा कि सेवा का अनुपम अवसर मिला इसके लिए हम आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के आभारी हैं। स्थानीय संघ के अनेक पदाधिकारियों व गणमान्यजनों ने अपने भावसुमन अर्पित करते हुए महासती जी के संयमी जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही। गुणानुवाद सभा में संघ सहित अनेक संस्थाओं के पदाधिकारियों व विशिष्टजनों की उपस्थिति रही।

संक्षिप्त परिचय

साध्वी श्री प्रेमलता जी म.सा.

सांसारिक नाम :

सुश्री प्रेमलता जी शाह कोठारी मेहता

जन्म स्थल : सुरेंद्रनगर (गुजरात)

दीक्षा स्थल : राजनांदगाँव (छत्तीसगढ़)

पारिवारिक परिचय

माता-पिता :

श्रीमती जवेरीबैन-श्री चिमन भाई शाह कोठारी मेहता

भाई : नरेंद्र जी, सुशील जी शाह कोठारी मेहता

बहन : स्व. सुरेखा जी

- करण सिंह सेठिया

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

रविवारीय समता आराधना – आंचलिक रिपोर्ट (मई 2025)

क्रमांक	अंचल का नाम	आंचलिक गतिविधि	04–05	11–05	18–05	25–05
1.	मेवाड़	आंचलिक उपस्थिति	1224	1413	1416	1565
		आंचलिक क्षेत्र	88	89	85	86
2.	बीकानेर–मारवाड़	आंचलिक उपस्थिति	910	793	585	366
		आंचलिक क्षेत्र	41	41	43	37
3.	जयपुर–ब्यावर	आंचलिक उपस्थिति	428	445	414	417
		आंचलिक क्षेत्र	22	23	22	22
4.	मध्य प्रदेश	आंचलिक उपस्थिति	839	666	587	506
		आंचलिक क्षेत्र	63	59	57	59
5.	छत्तीसगढ़–ओड़िशा	आंचलिक उपस्थिति	1613	1773	1630	1599
		आंचलिक क्षेत्र	135	149	142	130
6.	कर्नाटक–आंध्र प्रदेश	आंचलिक उपस्थिति	220	234	200	246
		आंचलिक क्षेत्र	18	20	23	20
7.	तमिलनाडु	आंचलिक उपस्थिति	175	194	190	229
		आंचलिक क्षेत्र	17	15	17	14
8.	मुंबई–गुजरात–यू.ए.ई.	आंचलिक उपस्थिति	346	349	415	333
		आंचलिक क्षेत्र	21	21	22	21
9.	महाराष्ट्र–विदर्भ–खानदेश	आंचलिक उपस्थिति	363	400	348	466
		आंचलिक क्षेत्र	37	43	33	41
10.	बंगाल–बिहार–नेपाल–भूटान–झारखंड–आंशिक ओड़िशा	आंचलिक उपस्थिति	248	334	270	293
		आंचलिक क्षेत्र	36	38	39	41
11.	पूर्वोत्तर	आंचलिक उपस्थिति	224	250	254	291
		आंचलिक क्षेत्र	37	42	39	41
12.	दिल्ली–पंजाब–हरियाणा–उत्तरी	आंचलिक उपस्थिति	90	95	144	54
		आंचलिक क्षेत्र	5	7	6	4
13.	अंतरराष्ट्रीय शाखा	आंचलिक उपस्थिति	8	52	3	11
		आंचलिक क्षेत्र	5	6	2	5
	संयुक्त रिपोर्ट					
	कुल उपस्थिति		6688	6998	6456	6376
	कुल क्षेत्र		525	553	530	521

मई माह में समता शाखा आराधना में विभिन्न अंचलों में निम्न नवीन क्षेत्र शामिल हुए हैं –

- **मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई अंचल -** म्हसला (जिला- रायगढ़, महा.)
- **पूर्वोत्तर अंचल -** खारुपेटिया (जिला- दरंग, असम)
- **महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल -** विटनेर (जिला- जलगाँव, महा.)

इन क्षेत्रों में समता शाखा के लिए प्रयास करने हेतु सभी पदाधिकरियों एवं स्थानीय संघ सदस्यों को बहुत-बहुत साधुवाद। आशा करते हैं कि इन क्षेत्रों में समता शाखा का आयाम निरंतरता के साथ गतिमान रहे तथा संख्या में अभिवृद्धि होती रहे। जिन ग्राम/शहर में अब तक समता शाखा नहीं हो रही है वहाँ भी आचार्य भगवन् के इस अनुपम आयाम से अवश्य जुड़ें।

उत्क्रांति कार्यक्रम

हुक्मसंघ के नवम नक्षत्र, सिरीवाल प्रतिबोधक, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. द्वारा समाज में व्याप्त कुरीतियों, फिजूलखर्ची, दिखावे और बढ़ती आर्थिक विषमता के उन्मूलन के लिए उद्घोषित उत्क्रांति की आभा सर्वत्र फैल रही है। समाजजन उत्क्रांति के नियमों को ग्रहण कर पूरे मनोयोग से पालना कर रहे हैं। आप सभी निश्चित ही धन्यवाद के पात्र हैं। उत्क्रांति के अंतर्गत गत दिनों संपन्न कार्यक्रमों का विवरण – 1. नोखा निवासी गुलाबचंद जी प्रकाशचंद जी सेठिया का नूतन गृह-प्रवेश 30 अप्रैल को संपन्न हुआ। 2. नोखा निवासी माणकचंद जी कांकरिया के सुपुत्र पीयूष का विवाह गंगाशहर निवासी अरविंद जी बोथरा की सुपुत्री स्वाति के साथ 07 मई को संपन्न हुआ। 3. सिवनी मालवा निवासी राजेंद्र प्रसाद जी मुणोत के सुपौत्र अमन का विवाह खिरकिया निवासी कमलचंद जी समदड़िया की सुपौत्री ऋषिका के साथ 17 मई को इटारसी में संपन्न हुआ। दोनों परिवारों द्वारा उत्क्रांति नियमों का पालन किया गया। 4. बालोद निवासी मगराज जी नाहटा के सुपौत्री डॉ. हर्षा का विवाह बीजा निवासी मोहनलाल जी छाजेड़ के सुपौत्र डॉ. विकास छाजेड़ के साथ 28 मई को संपन्न हुआ। 5. देशनोक निवासी तुलसीराम जी सुराणा की सुपुत्री सुरेखा का विवाह गंगाशहर निवासी सुरेश जी चौपड़ा के सुपुत्र ललित के साथ 28 मई को संपन्न हुआ। 6. राजनांदगाँव निवासी अशोक जी गिड़िया की सुपौत्री सियल के जन्मदिवस कार्यक्रम का आयोजन 05 जून को हुआ।

विविध समाचार

‘**अमृतम्**’ आह्वान के अंतर्गत अनेक समता युवा संघों द्वारा विभिन्न दिवसों पर सेवा कार्य किए गए, जिनका विवरण इस प्रकार है – ● चेन्नई द्वारा 11 मई को बटर मिल्क व छाछ का वितरण किया गया। ● आसावरा में 14 मई को पक्षियों के लिए 10 परिंडे बाँधे गए। ● हावड़ा में 26 मई को ए.सी. मार्केट के समीप शरबत वितरण किया गया एवं 07 जून को जीवदया प्रकल्प के अंतर्गत 14 गायों को कत्लखाने ले जाने से बचाया गया। ● गुवाहाटी में 26 मई को समता जल सेवा का शुभारंभ किया गया। इसी के साथ फैंसी बाजार के पास शरबत वितरण किया गया। ● कोलकाता में 01 जून को 71 गायों को कत्ल होने से बचाया गया एवं बरानगर में शरबत वितरित किया गया। ● भदेसर में 08 जून को शरबत एवं शिकंजी का वितरण किया गया।

Career Compass : A Career Counselling Session

31 मई 2025। श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन समता युवा संघ द्वारा तरुण शक्ति प्रवृत्ति के अंतर्गत ‘**Career Compass : A Career Counselling Session**’ विषय पर जूम ऑनलाइन सेशन आयोजित किया गया। यह सेशन इस वर्ष कक्षा 10वीं की परीक्षा कर चुके एवं कक्षा 11 व 12 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से उपयोगी रहा, ताकि वे आगे के अध्ययन हेतु विषय व दिशा का निर्धारण कर सकें।

तरुण शक्ति के राष्ट्रीय संयोजक ने संचालन के साथ सेशन की मार्गदर्शक डॉ. प्रतिभा जी जैन का संक्षिप्त परिचय देते हुए बताया कि आपका शिक्षा, काउंसलिंग में हजारों विद्यार्थियों के जीवन निर्माण में तीन दशकों से अधिक का अनुभव है। आप भारत सरकार की शिक्षा नीति सलाहकार समिति की सदस्य भी हैं। संयोजक द्वारा मंगलाचरण पश्चात् दो घंटे के सेशन में डॉ. प्रतिभा जी ने कहा कि सबसे अधिक पूछा

जाने वाला सवाल है- मुझे क्या बनना चाहिए? और इसका सही उत्तर खोजने का तरीका है कि आप **1. अभिरुचि (Interest), 2. अभिवृत्ति (Aptitude), 3. व्यक्तित्व (Personality),** इन तीन बातों का संतुलन समझें। केवल चाहने से कुछ नहीं होता। डॉक्टर, इंजीनियर या अन्य किसी भी क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने के लिए लगन, अच्छा प्रदर्शन एवं वास्तविक रुचि आवश्यक है। आपने विभिन्न संकायों के कैरियर विकल्पों, एक्चुरियल साइंस, बिजनेस एनालिटिक्स आदि उभरते विकल्पों, रिसर्च, लॉ मीडिया, मास कम्यूनिकेशन, सोशल मीडिया, कंटेंट क्रिएशन, इवेंट मैनेजमेंट, इंटीरियर, फैशन, यूआई/यूएक्स, प्रोडक्ट डिजाइन, एनिमेशन, मेडिकल, कम्प्यूटर साइंस, डेटा साइंस, एआई, रोबोटिक्स एवं फॉरेन स्टडी आदि के बारे में विस्तार से समझाया।

विदेश में पढ़ाई के लिए आवश्यक जानकारी साझा करते हुए आपने पढ़ाई के खर्च, पाठ्यक्रम का लचीलापन, प्रवेश हेतु आवश्यकताएँ, नौकरी के अवसर, वीजा व विभिन्न विश्वविद्यालयों की मान्यताओं, प्रवेश प्रक्रिया आदि का विस्तार से विवेचन किया। इस प्रकार आपने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु सर्वोत्तम मार्गदर्शन प्रदान किया।

कार्यक्रम से पूर्व बच्चों ने ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन के साथ अपनी जिज्ञासाएँ प्रेषित कीं, जिनका समाधान भी डॉ. प्रतिभा जी द्वारा किया गया। 110 से अधिक बच्चों ने कार्यक्रम में भाग लिया। अंत में तरुण शक्ति के राष्ट्रीय संयोजक ने डॉ. प्रतिभा जी का आभार प्रकट करते हुए कहा कि आपने अपने अमूल्य समय एवं मार्गदर्शन से हमें लाभान्वित किया है। आपने विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ दीं।

मध्य प्रदेश अंचल का सघन प्रवास संपन्न

31 मई-01 जून 2025। श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन समता युवा संघ के राष्ट्रीय पदाधिकारियों द्वारा मध्य प्रदेश अंचल के रतलाम, बिरमावल, कानवन, बदनावर, उज्जैन, इंदौर आदि क्षेत्रों में संघ उन्नयन के संकल्पों के साथ सघन प्रवास सम्पन्न हुआ।

सभी प्रवास स्थलों पर स्थानीय युवा संघों के साथ आयोजित सभाओं का शुभारंभ नवकार मंत्र आराधना व युवा साथियों के आपसी परिचय के साथ हुआ। प्रवासी दल ने संगठन की मजबूती हेतु प्रभावना करते हुए कानवन एवं उज्जैन संघों में समता युवा संघ के सत्र 2024-26 हेतु सर्वसम्मति से नवीन पदाधिकारियों का मनोनयन किया।

प्रवास स्थलों पर धार्मिक, समता शाखा, उत्क्रांति, व्यसनमुक्ति, तरुण शक्ति, समता ऊर्जा साधना, प्रतिक्रमण कंठस्थ, सामाजिक कार्यक्रम व संगठन सहित श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ द्वारा संचालित प्रवृत्तियों की प्रभावना की गई।

सभी संघों में प्रवासी दल का आत्मीयता से स्वागत अभिनंदन किया गया। युवा साथियों ने प्रत्येक सभा में उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाते हुए संघ-विकास हेतु सकारात्मक सुझावों का आदान-प्रदान किया। इस दौरान प्रवास नियमावली का पूर्ण पालन किया गया। प्रवासी दल ने आतिथ्य सत्कार एवं सुंदर व्यवस्था के लिए सभी का आभार प्रदर्शित किया गया।

प्रवास के दौरान शासन दीपक श्री रोहित मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2, शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री श्रीकांता जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन, वंदन, प्रवचन श्रवण एवं ज्ञानचर्चा का सौभाग्य मिला।

- आचंलिक राष्ट्रीय मंत्री

This document was created with the Win2PDF “Print to PDF” printer available at

https://www.win2pdf.com

This version of Win2PDF 10 is for evaluation and non-commercial use only.
Visit https://www.win2pdf.com/trial/ for a 30 day trial license.

This page will not be added after purchasing Win2PDF.

https://www.win2pdf.com/purchase/

।। जय महावीर ।।

।। जय गुरु नाना ।।

।। जय गुरु राम ।।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अ.भा.सा. जैन संघ)

स्वर्ण कुंभ

Block Booking 45...

2.0

आयु सीमा

45 वर्ष से कम

शुक्रवार

शनिवार

15–16 अगस्त

देशनोक

// जय महावीर //

// जय गुरु नाना // // जय गुरु राम //

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अ.भा.सा. जैन संघ)

समता छात्रवृत्ति योजना

(कक्षा 1 से 12 तक)

- साधुमार्गी परिवार के विद्यार्थियों के लिए -

- जैन संस्कार पाठ्यक्रम की प्रमाण-पत्र की प्रति।
- जैन साधुमार्गी ग्लोबल कार्ड बना हुआ होना अनिवार्य है।
- छात्रवृत्ति आवेदन के लिए विद्यार्थी ने गत कक्षा में कम से कम 70 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हो।
- छात्रवृत्ति की राशि विद्यार्थी के विद्यालय के खाते में प्रदान की जाएगी, इसलिए विद्यालय के बैंक खाते का विवरण।

फॉर्म के लिए स्कैन करें।

कृपया फॉर्म भरने के पश्चात् उसे सीधे केंद्रीय कार्यालय के पते पर ही प्रेषित करें। फॉर्म किसी अन्य व्यक्ति को न सौंपे।

संपर्क सूत्र : 63756 33109

|| जय महावीर ||

|| जय गुरु नाना || || जय गुरु राम ||

जीव दया रखने से मन में, मिट जाए भव पीर...
सबको समझे निज समान, कह गए प्रभु वीर...

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अ.भा.सा. जैन संघ)

राम चमकते भानु समाना

द्वारा सामाजिक कार्य की शृंखला में प्रस्तुत है

जीवदया

(जुलाई-अगस्त-सितंबर)

सव्वजीवा वि इच्छंति, जीविउं न मरिज्जिउ

- कम से कम एक दिन के लिए कत्लखाने बंद करवाना।
- मांसाहारी व्यक्ति को प्रेरणा देकर मांसभक्षण छुड़वाना ।
- गौशाला में गाय आदि को रोटी, चारा, गुड़ आदि खिलाना ।
- मच्छरदानी का वितरण करना। मच्छर मारने में उपयोग होने वाले उपकरणों को रोकना।

क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम्

- पक्षियों को दाना-पानी देना ।
- वृद्धाश्रम, अनाथालय, अंध विद्यालय, मूकबधिर संस्था आदि में सेवाएँ देना।
- शारीरिक श्रम करते हुए रिक्शाचालक, कुली, कड़ी धूप में मेहनत करते हुए मजदूर आदि को साता पहुँचाना।

आप सभी से निवेदन है कि अपने-अपने क्षेत्रों की रिपोर्ट बनाकर अवश्य भेजें।

।। जय गुरु नाना ।। ।। जय महावीर ।। ।। जय गुरु राम ।।

राम चमकते भानु समाना

हर पक्खी पर्व पर हो साधना

रात्रि संवर

से हो धर्म आराधना

सभी सुज्ञ श्रावक-श्राविकाओं से विनम्र निवेदन है कि हर पक्खी पर्व पर धर्म स्थानक में रात्रिकालीन संवर कर अपने कर्मबंध को रोकने और बद्धमान कर्मों की निर्जरा करने का लक्ष्य रखावें।

मोह नींद जब उपशमे, सदगुरु देय जगाय।
कर्म चोर आवत रुके, तब कुछ बने उपाय।।

आश्रव का रुकना, आश्रव द्वारों को बंद करना संवर है।
संवर के द्वारा पापों का बंध रोका जा सकता है, ऐसा चिंतन करना संवर भावना है।

- जहाँ तक संभव हो सूर्यास्त पूर्व पलेवण (संवर उपयोग सामग्री) करने का लक्ष्य रखावें।
- जहाँ तक संभव हो पक्खी प्रतिक्रमण और रात्रि संवर में राइसी/रात्रिक (सूर्योदय से पूर्व) प्रतिक्रमण करने का लक्ष्य रखावें।
- कारण विशेष की स्थिति में रात्रि 9:00 बजे तक तो अनिवार्य रूप से धर्म स्थानक में उपस्थित होकर रात्रि संवर करने का लक्ष्य रखावें।
- सभी आंचलिक और स्थानीय पदाधिकारियों से निवेदन है कि रात्रि संवर की अपने-अपने क्षेत्रों में पुरजोर प्रभावना करें एवं इसका डेटा नंबर **7073238777** पर अपडेट करने की कृपा करावें।

****टीम धार्मिक****

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ
(अंतर्गत : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ)

||जय गुरु नाना|| ||जय महावीर|| ||जय गुरु राम||

राम चमकते भानु समाना

चातुर्मासिक स्थापना दिवस

के उपलक्ष्य में

दिनांक : 8-9-10 जुलाई 2025

तेले तप की आराधना

लक्ष्य 3100

सभी स्थानीय संघ प्रतिनिधि पुरजोर पुरुषार्थ कर अधिक से अधिक तेले करने, करवाने के लक्ष्य के साथ ज्यादा से ज्यादा तप, त्याग, संवर, पौषध और धार्मिक प्रभावना कर इस पावन पर्व को कर्म बंधनों से परे रहकर कर्मनिर्जरा का माध्यम बनाएँ।

आप सभी स्थानीय पदाधिकारियों से निवेदन है कि आपके स्थानीय संघ में आयोजित कार्यक्रमों का विवरण हमें वॉट्सएप नंबर 70732 38777 या ईमेल yuva@sadhumargi.com अथवा गूगल लिंक पर अपडेट करें।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

|| जय् गुरु नाना || || जय् महावीर || || जय् गुरु राम् ||

राम चमकते भानु समाना

अक्षय तृतीया के पावन अवसर से प्रारंभ होने वाला

समता जल सेवा प्रकल्प

अमृतम्

"सेवा की एक बूँद, जीवन का अमूल्य रस!"

दिनांक: 30 अप्रैल 2025 से लेकर ग्रीष्म ऋतु तक

जल-सेवा कहाँ कर सकते हैं ?

1. बस स्टैंड, रेलवे स्टैंड, हॉस्पिटल, प्रतीक्षालय।
2. विद्यालय, सार्वजनिक स्थान, व्यस्त मार्ग।
3. स्थानीय भौगोलिक परिस्थिति अनुरूप स्थान का चयन।

जल-सेवा में ध्यान रखने योग्य बातें-

1. स्थान का चयन स्थानीय प्रशासनिक नियमानुसार हो।
2. स्थान साफ-सुथरा व स्वच्छ हो और वहाँ पानी का भराव न हो।
3. स्थानीय सदस्य देखरेख कर सकें, ऐसा स्थान हो।

सभी संघों से निवेदन ग्रीष्मकाल में प्याऊ संचालन का लक्ष्य रखें।

Save Water - Save Earth

टीम सामाजिक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

(अंतर्गत श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ)

|| जय गुरु नाना || || जय महावीर || || जय गुरु राम ||

राम चमकते भानु समाना

जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा

ज्ञान का अपार भंडार

भाग 1 से 12 तक लिखित परीक्षा होगी और 12 वर्ष से कम उम्र के बच्चों हेतु (भाग 1 से 4 तक) मौखिक परीक्षा होगी।

55 वर्ष से से अधिक आयु के व्यक्ति जो लिखने में असमर्थ हों, उनके लिए ओरल परीक्षा होगी।

Exam date - 14 Sept. 2025
Time - 12:30 - 3:30 pm

सकल जैन समाज में सभी वर्ग व आयु के परीक्षार्थी यह परीक्षा दे सकते हैं।

कृपया अपने क्षेत्र में अधिक से अधिक प्रभावना करावें।

अधिक जानकारी के लिए मोबाइल नंबर 7231933008 पर सम्पर्क करें।

केंद्रीय जैन संस्कार पाठ्यक्रम टीम

जय गुरू नाना　　जय महावीराय नमः　　जय गुरू राम

राम चमकते भानु समाना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

- ☑ क्या आप प्रोफेशनल डिग्री लेना चाहते हैं
- ☑ स्नातक/स्नातकोत्तर/फुलटाईम कोर्स करना चाहते हैं
- ☑ भारत/विदेश में शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं
- ☑ अपने कॅरियर को विकास के पंख देना चाहते हैं

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ लाया है

आचार्य श्री श्रीलाल उच्च शिक्षा योजना

जिसमें एस बी आई बैंक की सहायता से प्रदान किया जा रहा है

"₹10 लाख तक ब्याज मुक्त ऋण"

Interest free for study time + Moratorium period.

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
8306098040
(प्रातः 10 बजे से सायं 5 बजे तक)

राम चमकते भानु समाना　SBI

अब तक 300 छात्र योजना से लाभान्वित
(लगभग 15 करोड़ रुपये)

योजना का पूर्ण विवरण, पात्रता, आवेदन फार्म www.sadhumargi.com/forms पर उपलब्ध।

पात्रता हेतु मानदंड -

- ✓ कक्षा 10 और 12 में प्रथम श्रेणी प्राप्त किये है।
- ✓ स्नातक/स्नातकोत्तर/फुलटाईम कोर्स हेतु भारत या विदेश में मान्यता प्राप्त संस्थान में प्रवेशित या प्रक्रियाधीन।
- ✓ शिक्षा हेतु सहायता राशि 7.50 लाख रुपये स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के माध्यम से।
- ✓ शिक्षण शुल्क एवं परीक्षा शुल्क सीधे कालेज/संस्थान/विश्वविद्यालय को प्रदान।
- ✓ पुनर्भुगतान - कोर्स समाप्ति के 1 वर्ष या रोजगार प्राप्ति के 6 महीने पश्चात् जो भी पहले हो।

SCAN ME

Scan or visit website
www.sadhumargi.com/forms

संजय भूरा
संयोजक - आचार्य श्री श्रीलाल उच्चशिक्षा योजना
9810016751
(दोपहर 4 बजे से सांय 6 बजे तक)

* Loan approval subject to scrutiny by State Bank of India and thier terms & condition shall apply.

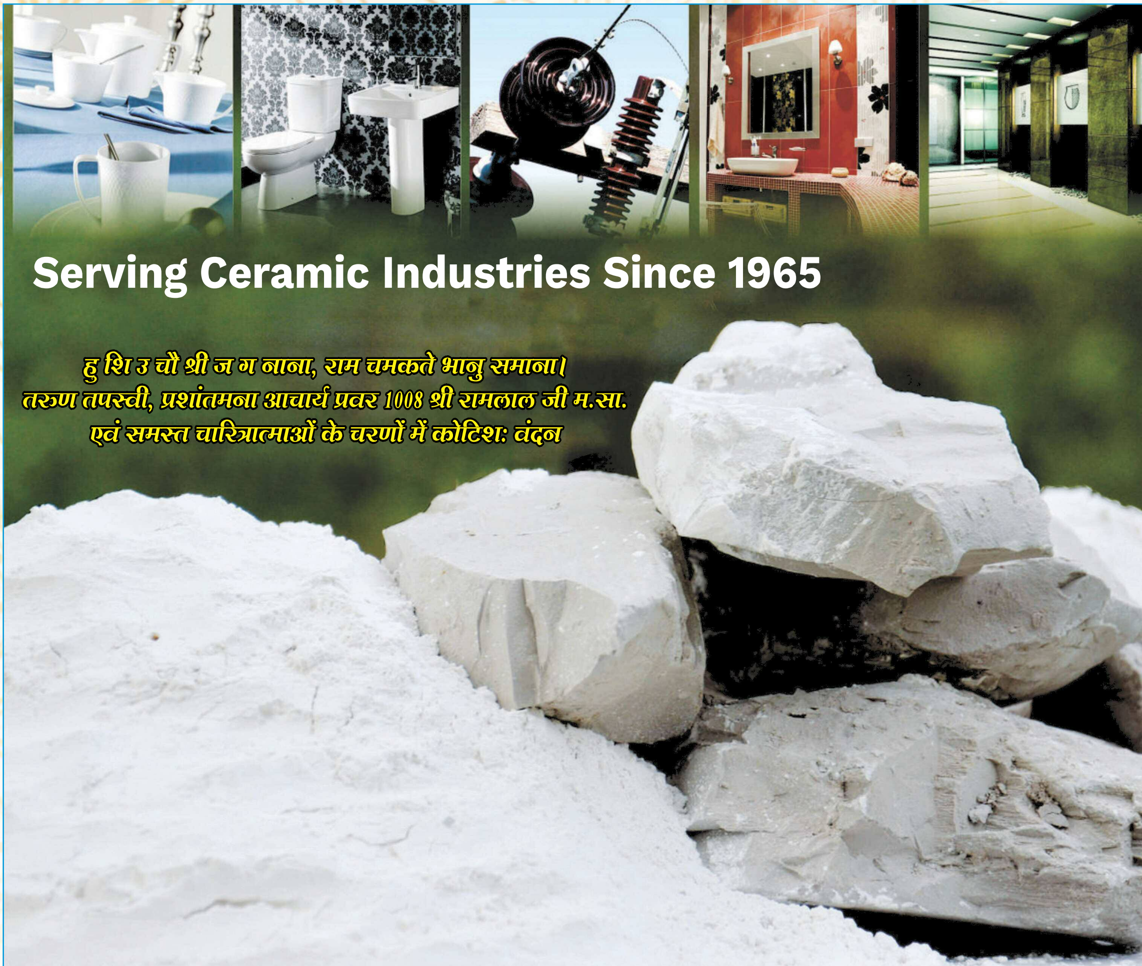

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI

सिपानी सेवा सदन - 1

सिपानी समूह ने मानव सेवा के क्षेत्र में एक ऐसा हस्ताक्षर अंकित किया है, जो सदियों तक स्मरण किया जाता रहेगा। समूह ने अपने प्रथम चरण में सिपानी सेवा सदन-1 - बंदापुरा विलेज मडिवाला ग्राम, मर्सुर पोस्ट, अनेकल तालूक, बेंगलूरु - 562106 में 12 वर्ष पूर्व जिस योजना को क्रियान्वित किया उसके अंतर्गत सदन की बहुमंजिला इमारत में 400 मरीजों एवं उनकी देखरेख करने वाले नर्स, कर्मचारी आदि की व्यवस्था रखी गई है।

सिपानी सेवा सदन - 2

सेवा के कदम आगे बढ़ाते हुए सिपानी समूह ने सिपानी सेवा सदन - 2 का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवा दिया है। इस भवन में उपरोक्त के अतिरिक्त 500 मरीजों एवं उनके लिए आवश्यक डॉक्टर, नर्स कर्मचारी एवं एम्बुलेंस आदि की सुविधा उपलब्ध रहेगी।

SIPANI

Sipani Seva Sadan-2
Address No. 149/1 & 150/1 Bandapura village, Madivala grama, Marsur post Anekal taluk, Bangalore 562106
Phone number +91 8431 888 000 & +91 9513 361 335

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिशः वंदन!

SIPANI MARBLES

STRONG - STYLISH - SOPHISTICATED

Royal Italian Marbles

AS PER ISI STANDARDS

WWW.SIPANIMARBLES.COM

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) फोन : 0151-2270261

helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/- (15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/- (10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में) 3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No.	:	31264126681
IFSC Code	:	SBIN0003401
Branch	:	G.S. ROAD, Bikaner
Mob.	:	7073311108
E-mail	:	accounts@sadhumargi.com

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

विभाग		मोबाइल		ई-मेल
श्रमणोपासक	:	9799061990		news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	:	8955682153		news@sadhumargi.com
साहित्य	:	8209090748	:	sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	:	6375633109	:	ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	:	7073238777	:	yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	:	7231933008		examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धांत	:	7976519363		examboard@sadhumargi.com
परिवारांजलि	:	7231033008	:	anjali@sadhumargi.com
विहार	:	8505053113	:	vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	:	9982990507	:	pathshala@sadhumargi.com
शिविर	:	7231833008	:	udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	:	6265311663	:	globalcard@sadhumargi.com
सामाजिक, संघ सदस्यता, सहयोग, समृद्धि, जन सेवा, जीव दया आदि अन्य प्रवृत्तियाँ	:	9602026899		
शैक्षणिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, साहित्य संबंधी प्रवृत्तियाँ	:	7231933008		
संघ हेल्पलाइन (WhatsApp only)	:	8535858853		

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए संबंधित विभाग से ही संपर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय - प्रातः 10:00 से सायं 6:30 बजे तक

लंच - दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्रीसंघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केंद्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना अवश्य देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.: 7073311108 (WhatsApp)

संघ में आपके सहयोग एवं सदस्यता की संपूर्ण जानकारी प्राप्त करने व ऑनलाइन भुगतान करने हेतु नीचे दिए लिंक पर क्लिक करें।

https://donorportal.sadhumargi.com/login

www.facebook.com/HOSadhumargi @absjainsangh

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान संपादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 24600

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोन नं.: 0151-2270261